मार्च, 2022 ■ वर्ष : 67 ■ अंक - 06 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

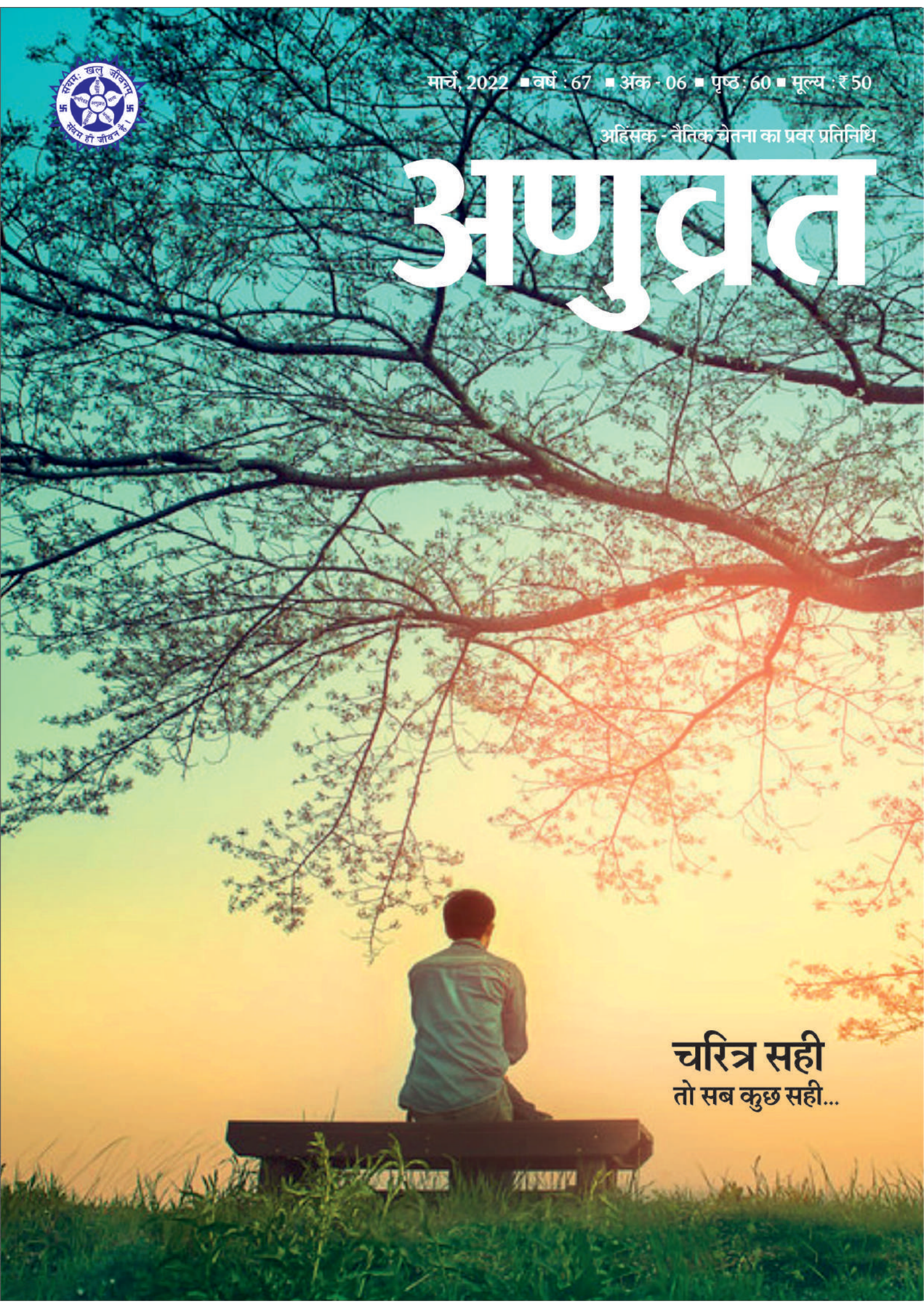

चरित्र सही
तो सब कुछ सही...

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा प्रदत्त

प्रेरणा पाथेय

परम पूज्य आचार्य तुलसी के समय में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के कार्यक्रम शुरू हुए थे, आज अणुव्रत को हम देखें तो मानव जाति के लिए बड़ा महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी एक बड़ी संस्था बन गयी है, वह अणुव्रत के विकास के लिए, अणुव्रत की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में अपना उत्साहपूर्ण योगदान देती रहे। हमारे साधु–साध्वियां, समणियां हैं, वे भी अणुव्रत का जहां प्रसंग लगे, तो अणुव्रत की बात करने का, अणुव्रत के बारे में बताने का, प्रेरणा देने का, भाषण देने का यथा औचित्य प्रयास करते रहें। इसी प्रकार प्रेक्षाध्यान है, जीवन विज्ञान है, इन गतिविधियों को भी यथा औचित्य यथा अवसर साधु–साध्वियां, हमलोग भी बल देने का प्रयास करते रहें, यह भी काम्य है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा मर्यादा महोत्सव के अवसर पर अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में प्रदत्त प्रेरणा पाथेय विशेष महत्त्व रखता है। बीदासर में आयोजित वृहद मर्यादा महोत्सव में 400 से अधिक साधु–साध्वियां और समणियां उपस्थित थे और यह संदेश देश–विदेश में प्रवासित हजारों–हजारों अनुयायियों तक लाइव टेलीकास्ट के माध्यम से पहुँचा। अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए यह उद्‌बोधन अणुव्रत के मानवतावादी संदेश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए समर्पण भाव से जुट जाने को प्रेरित कर रहा है। अणुविभा, देशभर में सक्रिय अणुव्रत समितियां और अणुव्रत कार्यकर्ता अणुव्रत दर्शन के प्रति अपनी आस्था को संपुष्ट करते हुए इस अभियान में समर्पित भाव से जुटे रहने का संकल्प व्यक्त करते हैं।

केवल स्वतंत्र हो जाने से ही सारी समस्याओं का हल नहीं हो जाता। स्वतंत्रता के बाद और ईमानदारी के साथ काम करने की आवश्यकता है। हमें प्रसन्नता है कि आचार्य श्री तुलसी व उनके शिष्य, देश के नैतिक धरातल को उठाने का सतत प्रयत्न कर रहे हैं। मुझे आशा है इस अणुव्रत आंदोलन से और देश के अन्य नैतिक आंदोलनों से समाज व देश का काफी भला होगा।

–राष्ट्रकवि
मैथिलीशरण गुप्त

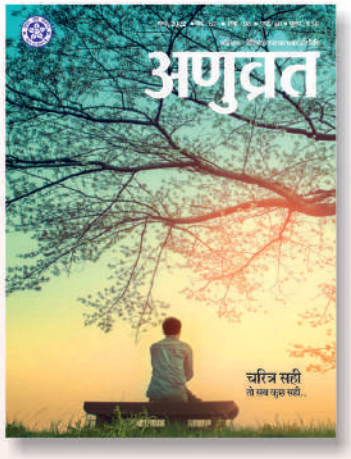

वर्ष 67 • अंक 06 • कुल पृष्ठ 60 • मार्च, 2022

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

संयोजकीय टीम

प्रमोद घोड़ावत (संयोजक, प्रकाशन), **शांतिलाल पटावरी** (संयोजक, पत्रिका प्रसार)
ललित गर्ग (संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच), **रजनीकांत शुक्ल** (सह संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच)
इन्द्र बैंगानी (संयोजक, समाचार संपादन)

टाइपसेटिंग व लेआउट – **मनीष सोनी** कवर क्रिएटिव – **आशुतोष रॉय** चित्रांकन – **मनोज त्रिवेदी**

कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

एक अंक	– ₹ 50	₹ 350 का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर आप अपनी प्रति कोरियर से मंगवा सकते हैं।
एकवर्षीय	– ₹ 600	
त्रैवर्षीय	– ₹ 1500	
पंचवर्षीय	– ₹ 2500	
दसवर्षीय	– ₹ 5000	
योगक्षेमी (15 yrs.)	– ₹ 11000	

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन सदस्यता हेतु::

https://rzp.io/l/avbp पर लॉगिन करें
या इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- *anuvrat.patrika@anuvibha.org* पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- **चरित्र सही तो सब कुछ सही** 06
  आचार्य तुलसी
- **जीवन की तुला...** 08
  आचार्य महाप्रज्ञ

आलेख

- **अणुव्रत की कल्पना का भारत** 10
  साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
- **अणुव्रत : समस्याओं का समाधान** 12
  डॉ. महेन्द्र कर्णावट
- **दुनियादारी का दायरा** 14
  अखिलेश आर्येन्दु
- **कहां खो गयी व्यवहार की मिठास** 16
  शिखरचंद जैन
- **धरती का बुखार** 18
  संदीप पांडे
- **सफलता का रहस्य...** 20
  शशि पाधा
- **...ताकि खुशहाल रहे बचपन** 25
  दिनेश प्रताप सिंह चित्रेश
- **अणुव्रत बाल संसद** 30
  डॉ. राकेश तैलंग
- **The Anuvrat Movement** 32
  Prof. S. Gopalan

कहानी

- **लौट आयीं खुशियां** 22
  दिनेश विजयवर्गीय

कविता

- **नवसृजन के स्वर** 13
  राजेन्द्र वर्मा
- **मेरा गाँव** 15
  डॉ. पूनम गुजरानी
- **आगे बढ़ते जाते हैं** 17
  अशोक रावत

- **संपादकीय** 05
- **बापू की वाणी** 11
- **अतीत के झरोखे से** 26
- **लघुकथा** 31
- **संवेदन** 34
- **कदमों के निशां** 35
- **परिचर्चा** 36
- **अमृत महोत्सव** 38
- **अणुव्रत काव्यधारा** 40
- **अणुव्रत सम्पर्क यात्रा**
  - **पंजाब** 42
  - **बीकानेर संभाग** 48
- **अणुव्रत संदेश स्थल** 45
- **चुनाव शुद्धि अभियान** 46
- **Q10 प्रतियोगिता** 51
- **शाहपुरा में अणुव्रत-कार्यक्रम** 52
- **अणुव्रत समाचार** 54

सम्पादकीय...

लेखनी और अणुव्रत की भावभूमि

इस दुनिया में जब से शब्द का आविष्कार हुआ, एक नयी दुनिया का ही मानो आविर्भाव हो गया। शब्द ने मनुष्य को अपनी भावना को अभिव्यक्ति देने का एक अद्भुत माध्यम दे दिया। एक विचार के अनेक व्यक्तियों तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त हो गया। विचारों ने सिद्धांतों को जन्म दिया और सिद्धांत इंसान की जीवनशैली को प्रभावित करने लगे। शब्द का प्रभाव इतना व्यापक बन गया कि जीवन के नये–नये क्षेत्र उद्घाटित होने लगे और कोई भी क्षेत्र शब्द से अछूता न रह सका।

शब्द को जब लिपि का योग मिला तो इन दोनों की जुगलबंदी ने दुनिया की सूरत और सीरत को बदल कर रख दिया। अभिव्यक्ति को नये आयाम मिल गये। आज जिन शब्दों और लिपियों से दुनिया परिचित है, उन्हें विकसित होने में न जाने कितनी सदियां खप गयी होंगी। शब्दों के रचने और एक–एक शब्द को अर्थ देने की यह प्रक्रिया विस्मित कर देने वाली है। यह कहना उचित होगा कि शब्द ने सम्पूर्ण मानवजाति को अर्थवान बना दिया।

यह भी सच है कि शब्द दुधारी तलवार के समतुल्य है। शब्द का उपयोग निर्माण और विध्वंस, दोनों में समान रूप से किया जा सकता है। शब्द मनुष्य के अंतर्मन का प्रतिबिम्ब है। यदि अन्दर सकारात्मक भावभूमि है तो शब्द उसकी खुशबू से समूचे वातावरण को सुरभित कर देगा। लेकिन, नकारात्मक भावभूमि शब्दों के ऊपर सवार होकर इस दुनिया का कितना अहित भी कर सकती है, यह हम वर्तमान युग में बहुत साफ–साफ देख पा रहे हैं। शब्द कभी–कभी इतना कचोटने लगते हैं कि अशब्द की दुनिया में लौटने का दिल करता है। लेकिन, शब्द के प्रभाव से बच पाना कितना दुरूह है, हम सब भलीभाँति जानते हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में यही काम्य है कि शब्द को सकारात्मक भावभूमि की खुराक निरंतर मिलती रहे और बहुतायत में मिलती रहे। अणुव्रत दर्शन यह सकारात्मक भावभूमि मुहैया कराता है। इसलिए अणुव्रत की भावभूमि के साथ लेखनी की जुगलबंदी मानवजाति के त्राण के लिए आज अपरिहार्य बन गयी है। साहित्य ने विकसित मानवता को सदैव प्रभावित किया है। साहित्य में वह शक्ति है जो घोर निराशा में भी आशा के प्रकाश स्तंभ स्थापित कर सकती है। आज साहित्य और साहित्यकार की जिम्मेदारी इस माने में और भी बढ़ गयी है।

अणुव्रत आंदोलन के 74वें स्थापना दिवस के प्रसंग में 'अणुव्रत काव्यधारा' अणुव्रत की भावभूमि पर शब्दों का सुंदर महल खड़ा करने का एक विनम्र प्रयास है। अणुव्रत लेखक मंच और 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' मासिक पत्रिकाएं अणुव्रत की भावभूमि से अपनी लेखनी को जोड़ने का उन तमाम साहित्यकारों को एक आमंत्रण हैं जो शब्द की ताकत को मानवता की भलाई में झोंकने को आतुर हैं। आइए, हम सब मिलकर इस सुंदर दुनिया को और भी खूबसूरत बनाने में अपना यत्किंचित योगदान दें और सुकून का अनुभव करें।

एक–एक शब्द
जो हम बोलते हैं,
एक–एक शब्द
जो हम सोचते हैं,
कल–कल करती
जीवन–धारा की
हर एक बूँद की भाँति
मानो हमारे जीवन की
पवित्रता को तौलते हैं।

शब्दों की साधना
जीवन आराधना है,
शब्दों की कला
जीवन की प्रतिफला है,
शब्दों से प्रीत
जीवन की रीत है
पर,
शब्दों पर जीत
जीवन संगीत है।

ओ मेरे मित्र!
शब्द को जीत कर
अब अशब्द को जीना है
शब्द और अशब्द का
भेद मुझे अब पीना है,
संदेह कैसा भला?
निःशब्दता को भेद कर
जिन्दगी के सत्व का
गीत मुझे अब गाना है।

सं.जै.
sanchay_avb@yahoo.com

चरित्र सही तो सब कुछ सही

आचार्य तुलसी

भारतीय संस्कृति में मोक्ष की निश्चित अवधारणा है। इस संस्कृति में आस्था रखने वाला व्यक्ति अपने मन में मुक्त होने की घनीभूत इच्छा रखता है। इसी इच्छा से प्रेरित होकर वह अपने इष्ट से याचना करता है –

असतो मा सत् गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योः मा अमृतं गमय

अर्थात् 'मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।'

तीनों ही माँगें बहुत सुन्दर हैं। सत्, प्रकाश और अमरत्व प्राप्त होने के बाद मनुष्य को चाहिए ही क्या? मैं इन वाक्यों को थोड़ा बदलना चाहता हूँ, याचना के स्थान पर पुरुषार्थ को जोड़ना चाहता हूँ। पुरुषार्थ में विश्वास रखने वाले व्यक्ति की भाषा होगी– मैं असत् से सत् की ओर जाऊँ, मैं अन्धकार से प्रकाश की ओर जाऊँ, मैं मृत्यु से अमरत्व की ओर जाऊँ। इसमें व्यक्ति का अपना कर्तव्य उजागर होता है। आस्था प्रधान संस्कृति में याचना की बात अस्वाभाविक नहीं है, फिर भी इसमें पुरुषार्थहीनता नहीं होनी चाहिए। पुरुषार्थी व्यक्ति अपने इष्ट का सम्बल या आलम्बन प्राप्त कर सकता है। उसका संकल्प होता है –

अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि
अन्नाणं परियाणामि नाणं उवसंपज्जामि
मिच्छत्तं परियाणामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि

अर्थात् 'मैं अमार्ग को छोड़ता हूँ और मार्ग को स्वीकार करता हूँ। मैं अज्ञान को छोड़ता हूँ और ज्ञान को स्वीकार करता हूँ। मैं मिथ्यात्व को छोड़ता हूँ और सम्यक्त्व को स्वीकार करता हूँ।'

इस प्रकार सोचने वाला व्यक्ति ईश्वर के प्रति आस्थाशील रहता हुआ भी लक्ष्य प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ का उपयोग करेगा। यदि हम बच्चों के अपरिपक्व मस्तिष्क में प्रारम्भ से ही ऐसे संस्कार भरेंगे तो उनके अवचेतन मन में निरन्तर पुरुषार्थ की लौ प्रज्वलित होती रहेगी। पुरुषार्थ के अभाव में किसी भी प्रकार की शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण में सहायक नहीं हो सकती।

शिक्षा पाने का अधिकारी कौन हो सकता है? इस जिज्ञासा के समाधान में आप्त पुरुषों ने कहा है –

विवत्ती अविणीयस्य संपत्ती विणीयस्य य।
जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ।।

अर्थात् 'अविनीत को विपत्ति और सुविनीत को सम्पत्ति मिलती है– ये दोनों जिसे ज्ञात हैं, वही शिक्षा को प्राप्त होता है।'

शिक्षा का उद्देश्य है–जीवन की विसंगतियों को दूर करना। इस उद्देश्य की पूर्ति उसी शिक्षा से हो सकती है, जो स्वयं विसंगतियों से दूर हो। जिस शिक्षा शैली में

मूलतः ही विसंगति हो, उससे विकास की संभावना कैसे की जा सकती है? मेरे अभिमत से शिक्षा का पहला उद्देश्य होना चाहिए भीतरी चेतना का जागरण। आज शिक्षा के द्वारा बुद्धि को जगाया जा रहा है, मन को जगाया जा रहा है, पर चेतना–जागरण की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। समस्या का मूल यही है। हमें इसी बिन्दु पर गम्भीरता से विचार करना है।

मनुष्य की आन्तरिक चेतना को जगाने के लिए बौद्धिक विकास के साथ चारित्रिक विकास की ओर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। चरित्र व्यक्ति का भी होता है, समाज का भी होता है और राष्ट्र का भी। वैयक्तिक चरित्र का प्रभाव राष्ट्र पर होता है, इसी प्रकार राष्ट्रीय चरित्र से व्यक्ति प्रभावित होता है।

जिस राष्ट्र का कोई चरित्र नहीं होता, उसके नागरिक चरित्रसम्पन्न कैसे होंगे? चरित्र को प्रतिष्ठित

दृश्य एक : दृष्टिकोण अनेक

ब्रह्म मुहूर्त का समय था। शहर के बाहरी भाग में सड़क के किनारे एक व्यक्ति सो रहा था। अनेक व्यक्ति उस मार्ग से गुजर रहे थे और अपनी–अपनी धारणाओं के अनुरूप उसे देख रहे थे। कुछ व्यक्ति एक साथ उधर से आये। उनमें से एक बोला–'कौन मुर्दा पड़ा है यहां? इसके परिवार वालों को पता है या नहीं?'

दूसरे व्यक्ति ने उसकी बात काटते हुए कहा– 'भाई! यह मरा हुआ प्रतीत नहीं होता। लगता है कोई पियक्कड़ है और अधिक शराब पीने के कारण बेभान होकर यहां गिर पड़ा है।'

तीसरा व्यक्ति बोला–'यह कोई निराश चोर होना चाहिए। रात भर चोरी की धुन में घूमता रहा और जब कुछ नहीं मिला तो थककर यहां सो गया।'

चौथा व्यक्ति बोला– 'यह कोई पहुँचा हुआ योगी है, अन्यथा खतरों भरे इस मार्ग पर इतनी निश्चिन्तता से कोई व्यक्ति सो सकता है? योग–शक्ति से ही ऐसा किया जा सकता है।'

पाँचवां व्यक्ति बोला– 'भाई ! मुझे तो यह अपने जैसा ही राहगीर प्रतीत होता है। चलते–चलते थक गया होगा तो सड़क के किनारे विश्राम के लिए सो गया।'

इस प्रकार जितने व्यक्ति थे, उन सबने अपना भिन्न–भिन्न मन्तव्य प्रस्तुत किया। इससे यह तथ्य प्रमाणित होता है कि एक दृश्य के सम्बन्ध में हर दर्शक का अपना स्वतन्त्र दृष्टिकोण होता है, अतः वह एक ही अनेक रूपों में पहचाना जाने लगता है।

अणुव्रत ने जाति, प्रान्त, भाषा, धर्म, रंग और लिंग आदि भेदजनक सीमाओं में सिमटे हुए धर्म को विस्तार के लिए व्यापक धरातल दिया। उसने धर्म के नाम पर चलने वाली स्वार्थसिद्धि पर प्रहार किया और परमार्थ तत्व को खोजने का दृष्टिकोण दिया।

करने में अणुव्रत ने अहम भूमिका निभायी है। अणुव्रत एक आचार संहिता का नाम है। यह लोक–जीवन में व्याप्त मानवीय दुर्बलताओं को परिष्कृत कर स्वस्थ जीवन जीने की दिशा देता है। अणुव्रत ने देश में एक नयी विचारधारा का प्रवाह बहाया, उपासना में उलझे हुए मनुष्य से चरित्र की पहचान करवायी और एक सार्वभौम धर्म या मानव धर्म को उजागर किया।

अणुव्रत ने जाति, प्रान्त, भाषा, धर्म, रंग और लिंग आदि भेदजनक सीमाओं में सिमटे हुए धर्म को विस्तार के लिए व्यापक धरातल दिया। उसने धर्म के नाम पर चलने वाली स्वार्थसिद्धि पर प्रहार किया और परमार्थ तत्व को खोजने का दृष्टिकोण दिया।

अणुव्रत ने धर्म की प्रासंगिकता को त्रैकालिक प्रमाणित करते हुए उसे असाम्प्रदायिक या चरित्रप्रधान धर्म के रूप में विकसित होने का अवसर दिया। किसी भी सम्प्रदाय में रहता हुआ व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है। किसी भी जाति या भाषा से जुड़ा हुआ व्यक्ति अणुव्रतों की साधना कर सकता है। किसी भी रूप में परमात्मा को मानने वाला व्यक्ति अणुव्रत का आचरण कर सकता है और परमात्मा की सत्ता में विश्वास न करने वाला व्यक्ति भी अणुव्रती बनने का गौरव अर्जित कर सकता है।

अणुव्रत ने सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता, असाम्प्रदायिकता आदि सार्वभौम तत्त्वों की धारा बहायी, युग–चेतना को झकझोरा, हजारों–हजारों व्यक्तियों को उस धारा में बहने के लिए आमंत्रित किया और वह देश की सीमाओं को पार कर विदेशों में पहुँच गया।

राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए जितने प्रयत्न आज हो रहे हैं, उनकी पृष्ठभूमि में चरित्र का बल हो तो सब काम अच्छे ढंग से आगे बढ़ सकते हैं। चरित्र को गौण करके कितना ही विकास कर लिया जाये, समस्या ज्यों की त्यों खड़ी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में उभरने वाली समस्या का कारण भी चरित्रहीनता है।

आज देश में नयी शिक्षा नीति को लेकर तीव्रता से चर्चा हो रही है। शिक्षा नीति में किन तत्त्वों का समावेश जरूरी है, इस सन्दर्भ में शिक्षाशास्त्री अपनी–अपनी अनुशंसाएं प्रस्तुत कर रहे हैं। उन अनुशंसाओं में चरित्रबल को पुष्ट करने या आन्तरिक व्यक्तित्व का निर्माण करने का लक्ष्य मुख्य रहेगा, तभी शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य–भीतरी चेतना का जागरण, सार्थक हो सकता है। क्योंकि मनुष्य का चरित्र सही है तो सब कुछ सही है। चरित्र सो जायेगा तो सब कुछ सो जायेगा। अणुव्रत आन्दोलन शिक्षा में चरित्र के समावेश की अनुशंसा पर पहले भी सजग था, आज भी सजग है।

जीवन की तुला समता के बटखरे

आचार्य महाप्रज्ञ

एक आदमी गाय रखता है, उसे घास खिलाता है, दूध दुहकर गर्म करता है और जमाता है। दही का फिर बिलौना करता है। इतना कार्य क्यों करता है? यह लम्बी और दीर्घकालीन प्रक्रिया नवनीत के लिए की जाती है। मक्खन के लिए ही यह परिश्रम किया जाता है। जीवन में खाने–पीने, श्रम आदि की सारी लम्बी प्रक्रिया इसलिए करते हैं कि सुख और शान्ति से जी सकें।

जीवन का नवनीत

जीवन का नवनीत है–शान्ति। जिन्दगी का मक्खन है–मन की शान्ति। हम धर्म, भगवान् और शास्त्रों के पीछे शान्ति के लिए ही जाते हैं। हजारों मील की यात्रा करके भी व्यक्ति वहां पहुँच जाता है, जहां शान्ति मिलने की आशा हो, समाधि मिलती हो। शान्ति नहीं ही मिलती है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, किन्तु शान्ति का प्राप्त होना सहज नहीं है क्योंकि शान्ति के लिए जो तपस्या करनी चाहिए, व्यक्ति उसे कर नहीं पाता। चार मास की तपस्या करना सरल बात है किन्तु चार मिनट के लिए भी समभाव में रहना कठिन बात है।

मन में उच्चावच भाव आते हैं, उतार–चढ़ाव की स्थिति पैदा होती है तो शान्ति भंग हो जाती है। यह परिस्थितियों के कारण आता है। व्यक्ति स्वयं में स्थित नहीं है, दूसरों से प्रभावित होता है। वह क्षेत्र, व्यक्ति, मान, अपमान, सम्मान से प्रभावित होता है। यदि इनसे व्यक्ति प्रभावित नहीं होता तो कठिनाई नहीं होती।

प्रभावित रहे शंकर भी

शंकर के पास एक बार शनिदेव आये और बोले, 'भगवन् ! अब आपकी राशि पर साढ़े साती के साथ आने वाला हूँ।' शनिदेव चले गये लेकिन शंकर को उनके कथन से अपमान का अनुभव हुआ। उन्होंने शनि की चुनौती स्वीकार कर ली और सोचा कि मैं गुफा में जाकर साढ़े सात वर्षों तक निरन्तर तपस्या और साधना में लग जाऊँगा, फिर देखें वह मेरा क्या बिगाड़ लेता है।

शंकर ने साढ़े सात वर्षों तक एकांत में साधना की, खाना–पीना कुछ भी नहीं किया। समय पूरा होने पर शनिदेव आये तो शंकर ने कहा, 'तूने मेरा क्या बिगाड़ लिया?'

शनि ने हँसकर कहा– 'भगवन्! भला इससे अधिक कष्ट क्या दे सकता था कि आप पूरे साढ़े सात वर्षों तक भूखे और प्यासे रहे!' जब शंकर भी परिस्थिति से प्रभावित हो गये तो साधारण व्यक्ति की क्या बात?

कठिन है अप्रभावित रहना

मन को परिस्थितियों से अप्रभावित रखना कठिन है। कोई आदमी सम्मान देता है, प्रशंसा करता है तो गर्व का भाव आ जाता है। इसके प्रतिकूल कहीं अपमान हो जाये अथवा आलोचना हो तो क्रोध का भाव आता है। यह हर्ष

और क्रोध स्वयं का नहीं, बाहर से आता है। ये बाहरी नाले और सुराख जब तक बन्द नहीं होंगे, शान्ति नहीं मिलेगी। इन आश्रवों, छेदों और खिड़कियों को जब तक बन्द नहीं करेंगे, तब तक दूसरों के हाथ के खिलौने बने रहेंगे। हमारे भाग्य की कुंजी दूसरे के हाथों में चल रही है। टेप–रेकार्डर बोलता है किन्तु यह आवाज उसकी नहीं, किसी दूसरे व्यक्ति की है। ठीक वही गति हमारी है।

हम स्वयं अपने भाग्य के स्वामी नहीं हैं। अपने आपको स्वयं के बटखरों, गजों से तौलना–मापना नहीं जानते, दूसरों के ही बटखरों से तौलते हैं। दूसरों के कहने से ही अपने को अच्छा या बुरा मान लेते हैं। अच्छे–बुरे का मानदंड अपना नहीं, लोग जैसा कहते हैं व्यक्ति वैसा ही बन जाता है। जब तक मनुष्य दूसरों के इशारे पर नाचता रहेगा, तब तक शान्ति की कल्पना नहीं हो सकती। इसलिए दूसरों की इच्छा और इशारे पर नाचना बंद करना जरूरी है।

विषम भाव से बचें

जब तक समता की साधना नहीं होगी, तब तक धर्म और शान्ति प्राप्त नहीं की जा सकती। भगवान् महावीर ने सामायिक की बात कही, समता की साधना का उपदेश दिया। हमें वैषम्य से बचना है, तभी शान्ति की बात सहज होगी। यह बात कहने में सुगम है किन्तु करना कठिन है। शेर की गुफा में जाने से भी अधिक कठिन है विषम भाव से बचना। कहा गया–

"लाभा–लाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा।
समो निन्दा पसंसासु, तहा माणावमाणओ।"

अर्थात् "लाभ–अलाभ, सुख–दुःख, जीवन–मरण, मान–अपमान आदि में समभाव रखें।" बात ठीक लगती है, किन्तु व्यवहार में देखें कि क्या स्थिति है? अनुकूल में प्रसन्नता, प्रतिकूल में दुःख होता है और मनःस्थिति में परिवर्तन हो जाता है। प्रतिकूल से निराशा, हीन भावना, दयनीयता आती है, जिससे अनेक घटनाएं घटित होती हैं। आत्महत्या जैसी भयावह स्थिति पैदा हो जाती है। लाभ–अलाभ में समान रहना कठिन है। राम को दशरथ ने राज्य देने की घोषणा की तो हर्ष नहीं, वनवास दिया तो विषाद नहीं। सचमुच यह तभी सम्भव है यदि व्यक्ति राम हो।

शान्ति है स्व–रमण में

राम अर्थात् अपने आप में रमण करने वाला। बाह्य में रमण करने वाला शान्ति नहीं पा सकता। अपने आप में रमण करना ही शान्ति है। सुख–दुःख, जीवन–मरण में समान रहना बहुत कठिन है। मनुष्य मरने की स्थिति को सपने में देखकर भी रोने लगता है। फिर साक्षात् मौत देखकर उसकी जो हालत होती है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यदि किसी को मरने का दिन बता दिया जाये तो वह भय से अधमरा हो जाता है। कभी–कभी मौत के भय से मौत भी हो जाती है। इसी

प्रकार मान और अपमान का प्रश्न भी है। अपने अपमान के लिए प्रतिशोध की बात तुरन्त उठती है, भले ही सामने वाले व्यक्ति के मन में कहीं थोड़ी–बहुत भी अपमान करने की भावना नहीं हो।

समझदार व्यक्ति बोलता नहीं, भाव प्रदर्शित नहीं करता, किन्तु गांठ बाँध लेता है। मन को सीधा घुमा देता है, मोड़ लेने की भी जरूरत नहीं होती। अपमान–सम्मान में सम रहना दुष्कर है। मानसिक विषमता, उतार–चढ़ाव, पर विजय पाये बिना शान्ति नहीं। शान्ति फल है, बीज नहीं। शान्ति कार्य नहीं, परिणाम है। बीज के बिना फल नहीं। समभाव–समता की आराधना किये बिना शान्ति का प्रश्न सुलझने वाला नहीं है। धर्म क्या है? समता के सिवाय कोई धर्म नहीं। भगवान् महावीर ने समता का उपदेश दिया। जैन–शासन से समता को हटा दें तो कुछ नहीं बचेगा।

शान्ति का मूल

आज धर्म के क्षेत्र को भी व्यवहार के बाटों से तौलते हैं। दुनियावी लोग स्थिति को व्यवहार से तौल सकते हैं। वे मान का सम्मान, अपमान का तिरस्कार से प्रत्युत्तर दे सकते हैं। उनका यह चिन्तन हो सकता है–

तुम आवो डग एक, तो हम आवें डग अट्ठ।
तुम हमसे करड़े रहो, तो हम हैं करड़े लट्ठ।।

धार्मिक ऐसा नहीं कर सकता। वह प्रतिकूल के लिए भी अनुकूल ही करेगा। महावीर ने चण्डकौशिक के प्रति भी कल्याण का ही चिन्तन किया। वैरभाव के बदले में भी वात्सल्य का भाव प्रदर्शित किया। जिस जीवन में समता का विकास नहीं, अध्यात्म का विकास नहीं, वहां शान्ति नहीं। धर्म और शान्ति का मूल है–समता भाव।

धर्म का मर्म

समता की साधना और विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक हम दूसरे के प्रतिकूल व्यवहार को नहीं भूलते। यह भूलना भोलापन नहीं, मूर्खता भी नहीं। हर स्थिति को समझकर भी जो विरोधी व्यवहार नहीं करेगा, वही धार्मिक है। जिस व्यक्ति के मन में धर्म है, वह समझकर भी वैसा व्यवहार नहीं करेगा। जिस दिन दूसरों के मनोभावों से प्रभावित होकर अपने मनोभाव व्यक्त नहीं करेंगे, दूसरों के पैरों से प्रभावित होकर नहीं चलेंगे, तब समता और समभाव प्रकट होगा। अध्यात्म का द्वार खुलेगा और मन को शान्ति मिलेगी।

जो सारे साधन होते हुए भी बिलखते–बिलखते जीते हैं, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, क्रोध आदि अवगुण पालकर अपने जीवन में घुन लगा लेते हैं, वे सचमुच जीना ही नहीं जानते। जो धार्मिक नहीं होता, वह जीने की कला नहीं जानता। धर्म के मर्म को समझने वाला ही सुख से जी सकता है। ■

अणुव्रत की कल्पना का भारत

■ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ■

भारत एक उदारवादी राष्ट्र है। इसमें अनेक जातियों और धर्मों के लोग एक साथ मिल–जुलकर रहते हैं। भारतीय मानस धर्मप्रधान है। इस दृष्टि से यहां अधिकांश व्यक्ति धर्म–कर्म में विश्वास रखने वाले हैं। हर धर्म की अपनी–अपनी विशेषता होती है। धर्म की भाँति संस्कृति भी अपना पृथक् अस्तित्व रखती है। हिन्दू संस्कृति में अध्यात्म का पुट है। यूरोपीय संस्कृति भौतिकता प्रधान है। मुस्लिम संस्कृति का संगठन विश्रुत है और कम्युनिस्ट लोग साम्यवाद में विश्वास रखते हैं। ये भिन्न–भिन्न संस्कृतियां भारतवर्ष में युगपत पनप रही हैं। इस अर्थ में भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृति की उत्तम पथदर्शिका बन सकती है।

सुख का मूल स्रोत

भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा आदर्श है संयम। मनुष्य की वृत्तियों का सहज बहाव असंयम की ओर होता है। उसे संयम की ओर मोड़ना असंभव तो नहीं है, कठिन अवश्य है। कठिन वह इस अर्थ में है कि मनुष्य संयम का अभ्यासी नहीं होता। उसकी आकांक्षाएं किसी परिधि में सीमित नहीं हैं। उसे जितनी सुख–सुविधाएं मिलती हैं, उनसे वह संतुष्ट नहीं होता। यह भीतर का अंसतोष व्यक्ति को न सुख से जीने देता है और न शांति से मरने देता है।

स्कॉटलैण्ड का एक रईस व्यक्ति था एण्ड्रू कार्नेगी। कहते हैं कि उसने अपने जीवन में दस अरब रुपये एकत्रित किये। उसकी मृत्यु से तीन दिन पहले उसका एक मित्र उसके पास बैठा था। वह बोला – ''मित्र! तुमने अपने जीवन में बहुत काम किया है। देखो, तुम कहां से कहां पहुँच गये। साधुवाद है तुम्हारी लगन को।'' एण्ड्रू ने ये शब्द सुने तो वह और अधिक उदास हो गया। मित्र ने आग्रहपूर्वक उदासी का कारण पूछा। एण्ड्रू बोला–''क्या बताऊँ तुझे? अब मैं हार गया। आगे बढ़ना मेरे लिए संभव नहीं है। मैंने सोचा था कि मैं अपने जीवन काल में सौ अरब रुपये अर्जित कर लूँगा, पर मेरा स्वप्न पूरा नहीं हो सका। अब मुझे इस संसार को छोड़कर जाना है। जाते समय मैं अपनी इस इच्छा को साथ ही लेकर जाऊँगा।''

इस घटना से यह तथ्य फलित होता है कि अर्थ सुख का साधन नहीं है। वस्तुस्थिति तो यह है कि आर्थिक सम्पन्नता व्यक्ति को अधिक तनाव में ले जाती है। अर्थ केवल जीवन चलाने का साधन है। साधन को साध्य मानने की भूल जिस क्षण शुरू हो जाती है, उसी क्षण से व्यक्ति मूढ़ता का जीवन जीने लगता है। मूढ़ता चेतना को आवृत्त करती है। इससे व्यक्ति का विवेक, संयम और संतुलन सब कुछ छूट जाता है। संतुलित जीवन जीने के लिए गांधीजी ने अपने समय में ग्यारह व्रतों की साधना पर बल दिया था।

गांधीजी के वे ग्यारह व्रत हैं–

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शरीरश्रम, अस्वाद, अभय, सर्वधर्म समन्वय, स्वदेशी भावना और अस्पृश्यता निवारण।

गांधीजी जिस समय इन व्रतों के पालन पर बल दे रहे थे, उसी समय अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के नाम से एक नया अभियान चलाया। इस आन्दोलन का उद्देश्य था असंयम की ओर उच्छृंखलता से बढ़ते हुए जन–समूह को अपने अस्तित्व का बोध देकर आत्म–संयम की ओर प्रेरित करना। तत्कालीन वातावरण में यह एक नया स्वर था। इसलिए लोगों में कुतूहल, जिज्ञासा, सन्देह और आशंका की भावना उत्पन्न हुई। जैसे–जैसे इसके संबंध में जानकारी का धरातल व्यापक हुआ, आशंकाएं निर्मूल होती गयीं। अपने उदय के तीन दशकों को पूरा करते–करते अणुव्रत आशा–दीप बनकर जगमगा उठा।

राष्ट्र के प्रबुद्ध और चिन्तनशील व्यक्तियों के सम्पर्क ने अणुव्रत को एक श्रमिक की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक चर्चा का विषय बना दिया। भारतीय संसद में अणुव्रत की चर्चा हुई है। सांसदों ने संसद में 'अणुव्रत मंच' की स्थापना को लेकर उत्साह प्रदर्शित किया है। इस आधार पर यह स्वीकार किया जा सकता है कि भ्रष्टाचार के थपेड़ों से ऊब–डूब करती हुई राष्ट्रीय चेतना की नौका को बचाने में अणुव्रत अपनी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अणुव्रत ने अब तक जो कुछ किया है, वह किसी से अज्ञात नहीं है, पर उतने मात्र से अणुव्रत को संतोष नहीं है। उसका व्यापक उपयोग हो, यह आवश्यक है। ऐसा तभी संभव है, जब नैतिकता की नींव पर एक स्वस्थ समाज की संरचना कर विश्व के सामने आदर्श राष्ट्र का उदाहरण उपस्थित किया जा सके।

इस कल्पना के अनुरूप भारत का निर्माण करने के लिए मनुष्य की धारणाओं और जीवन पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा। प्रारंभिक रूप में अणुव्रत की कल्पना के भारत का एक छोटा–सा चित्र यहां प्रस्तुत किया जा रहा है –

भारत एक ऐसा राष्ट्र हो, जिसके नागरिक –

- परस्पर प्रेम, सद्भाव और सहयोग भावना का विकास करें।
- अहिंसा में आस्था का नियोजन कर ऐसी स्थिति निर्मित करें, जिससे सेना और शस्त्र होने पर भी वे अकिंचित्कर रहें।
- संत्रास, कुण्ठा, अभाव और विलासिता की स्थितियों को उभरने का अवसर न देकर शांति से जीवन बितायें।
- भोजन, वस्त्र, मकान, शिक्षा और चिकित्सा जैसी जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अप्रामाणिक न बनें।
- अर्थहीन रूढ़ परम्पराओं और अंधविश्वासों का उन्मूलन कर एक जागृत मानव–समाज का निर्माण करें।
- अपने राष्ट्र के कर्णधारों का निर्वाचन भय या प्रलोभन जैसी परिस्थिति की विवशता से न करें।
- मानवमात्र के मौलिक अधिकारों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करें।
- माताओं और बहनों को अपनी असुरक्षा की भावना से मुक्त कर उन्हें निर्भय होकर बाइज्जत जीने का वातावरण दें।
- मादक व नशीले पदार्थों के उत्पादन व प्रयोग से बचकर श्रम की प्रतिष्ठा में अपना योगदान दें।

ऊपर जिन नौ सूत्रों की चर्चा की गयी है, वह अणुव्रत की एक छोटी–सी योजना है। इस योजना की क्रियान्विति का जो बड़ा परिणाम आयेगा, वह विश्व को चौंकाने वाला होगा। इसलिए अणुव्रती कार्यकर्ताओं पर यह विशेष जिम्मेदारी आती है कि वे अणुव्रत की कल्पनाओं के अनुरूप भारत राष्ट्र का निर्माण करने के लिए जी–जान से जुटें और आनेवाले दशक में इसका कोई वांछित परिणाम लाकर दिखा दें। इसके लिए योजनाबद्ध पद्धति से काम करना होगा और काम का प्रारंभ स्वयं अपने से करना होगा। ऐसा होने से ही अणुव्रत की कल्पना के भारत का निर्माण हो सकेगा।

बापू की वाणी...

- व्रत बंधन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता का द्वार है।
- जहां अमुक वस्तु के प्रति संपूर्ण वैराग्य उत्पन्न हो गया है, वहां उसके विषय में व्रत लेना अनिवार्य हो जाता है।
- ईश्वर की पहचान सेवा से ही होगी, यह मानकर मैंने सेवा धर्म स्वीकार किया था।
- जैसी जिसकी भावना वैसा उसका फल, इस नियम को मैंने अपने बारे में अनेक बार घटित होते देखा है। जनता की अर्थात् गरीबों की सेवा करने की प्रबल इच्छा ने गरीबों के साथ मेरा सम्बन्ध हमेशा ही अनायास जोड़ दिया है।
- खींच–तानकर अथवा दिखावे के लिए या लोकलाज के कारण की जाने वाली सेवा आदमी को कुचल देती है, और ऐसी सेवा करते हुए आदमी मुरझा जाता है।
- जिस सेवा में आनन्द नहीं मिलता, वह न सेवक को फलती है, न सेव्य को रुचिकर लगती है। जिस सेवा में आनन्द मिलता है, उस सेवा के सम्मुख ऐश–आराम या धनोपार्जन इत्यादि कार्य तुच्छ प्रतीत होते हैं।
- ...पर सेवा की अभिरुचि कुकुरमुत्ते की तरह बात की बात में तो उत्पन्न नहीं होती। उसके लिए इच्छा चाहिए और बाद में अभ्यास।
- भावना शुद्ध हो, तो संकट का सामना करने के लिए सेवक और साधन मिल ही जाते हैं।
- जहां सत्य की साधना और उपासना होती है, वहां भले परिणाम हमारी धारणा के अनुसार न निकले, फिर भी जो अनपेक्षित परिणाम निकलता है, वह अकल्याणकारी नहीं होता और कई बार अपेक्षा से अधिक अच्छा होता है।

(राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' से साभार)

अणुव्रत

अनेक समस्याओं का समाधान

■ डॉ० महेन्द्र कर्णावट ■

मनुष्य के स्वार्थ ने न सिर्फ पृथ्वी के लिए खतरा पैदा कर दिया है, वरन् 'विश्व एक है' के स्वप्न को भी धराशायी कर दिया है। नतीजतन समूचा विश्व हिंसा, गरीबी, आतंक, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, महंगाई, प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट, भूख, तस्करी जैसी समस्याओं से संत्रस्त है। विश्व की सभी सरकारें इन समस्याओं के समाधान का प्रयास कर रही हैं, मगर स्थिति बेकाबू होती जा रही है।

इन समस्याओं के मूल में है–आदमी की गलत सोच। विकास के बारे में मिथ्या दृष्टिकोण। इस संदर्भ में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं, "विकास का पैमाना यह मान लिया गया कि ज्यादा से ज्यादा उत्पादन करो और उसका उपभोग करो। जनता की जरूरतों को बढ़ाओ। जब जरूरतें बढ़ेंगी तो उसके अनुपात में उत्पादन करना होगा और इससे विकास अपने आप होगा। समस्याओं के चक्रव्यूह में फँसाना ही विकास माना जा रहा है।"

समस्याओं के समाधान की दिशा में जाने के लिए आदमी की सोच में परिष्कार करना होगा। समाधान की दिशा में बढ़ने का मार्ग है अपेक्षाओं का संयम। हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह का संयम। अणुव्रत का घोष है–'संयमः खलु जीवनम्' अर्थात् संयम ही जीवन है। इसे स्वीकार करके हम राष्ट्रव्यापी तथा विश्वव्यापी समस्याओं से निजात पा सकते हैं।

आज हिंसा और आतंक की आग से पृथ्वी झुलस रही है। अणुव्रत आचार संहिता के प्रथम पाँच नियम हमें अहिंसा की तरफ ले जाते हैं, नफरत की आग से दूर प्रेम की दिशा में लौटाते हैं। धर्म का सहारा लेकर आतंकवाद फल–फूल रहा है। व्यक्ति जब धार्मिक सहिष्णुता रखने और साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाने का संकल्प करता है तो वह आतंकवाद के विरोध में खड़ा होता है। इसी तरह आक्रमण नहीं करने, हिंसात्मक एवं तोड़–फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लेने के संकल्प के साथ व्यक्ति अनावश्यक हिंसा से बचता है यानी हिंसा का संयम करता है।

हमारे सार्वजनिक जीवन और बाजार व्यवस्था में चोरी, कर चोरी, मिलावट, घटतौली, बेईमानी, शासकीय दखलंदाजी प्रमुख तत्व बन गये हैं और यहीं से प्रारंभ होता है कदाचार का सिलसिला जो हमें ले जाता है भ्रष्टाचार लिप्त देशों के शीर्ष पर। समाज में प्रदर्शन, आडम्बर और बड़ा आदमी बनने की लालसा इस कदर घर कर गयी है कि व्यक्ति को इसकी सम्पूर्ति के लिए गलत रास्तों से अर्थ का उपार्जन करना होता है और इन अनैतिक रास्तों–कार्यों को छिपाने के लिए लेना–देना पड़ता है जो भ्रष्टाचार की आधारशिला है। अणुव्रत का छठा नियम भ्रष्टाचार का समाधान है तो बढ़ती महँगाई की समस्या पर भी लगाम लगाता है।

संसार में मनुष्य ही ऐसा जीव है जो अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन कर रहा है जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गयी है। फलस्वरूप आज हमसे प्राकृतिक शुद्ध वायु और शुद्ध जल छिन रहा है। प्राकृतिक सम्पदाओं का सीमित मात्रा में उपयोग करके ही हम पर्यावरण शुद्धि की तरफ बढ़ सकते हैं। अणुव्रत का ग्यारहवाँ नियम हमें इसी तरफ ले जाता हुआ संयमित दिनचर्या व्यतीत करने का आह्वान करता है। आज विश्व की चौथाई जनसंख्या भूख से व्याकुल है। जनसंख्या विस्फोट एवं अर्थ के असमान वितरण के कारण भूख की महामारी पनपी है।

:: अणुव्रत आचार संहिता ::

1. मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।
   * आत्म-हत्या नहीं करूँगा।
   * भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
2. मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
   * आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा।
   * विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
3. मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
4. मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा।
   * जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को उच्च-निम्न नहीं मानूँगा।
   * अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
5. मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।
   * साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
6. मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
   * अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा।
   * छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
7. मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
8. मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
9. मैं सामाजिक कुरुढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
10. मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा।
    * मादक तथा नशीले पदार्थों-शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
11. मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
    * हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
    * पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

अणुव्रत दर्शन वस्तुओं के समान वितरण एवं सीमित उपभोग की बात कहता है। खान–पान में संयम करो, इस उद्घोष के साथ अणुव्रत भूख से व्याकुल व्यक्तियों तक अन्न एवं अन्य सामग्री पहुँचाना चाहता है। व्रत, उपवास इसकी प्रायोगिक विधा है जिसके माध्यम से जो खाद्य सामग्री बचती है, उसका समान वितरण कर भूख की विश्वव्यापी समस्या के समाधान में सहभागी बनता है अणुव्रत दर्शन।

अनैतिकता का बीज है चित्त की चंचलता। जिस व्यक्ति का मन कहीं भी टिका हुआ नहीं रहता, वह समाज में अव्यवस्था फैलाता है, तोड़–फोड़ और भ्रष्टाचार करता है। अणुव्रत दर्शन का मानना है कि व्यक्ति को जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठाशील होना चाहिए। यदि वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं धार्मिक मूल्यों में निष्ठा होगी तो चित्त की स्थिरता रहेगी। स्थिर चित्त वाला व्यक्ति नैतिक होता है, चाहे वह गरीब हो या अशिक्षित।

राजसमंद निवासी लेखक एमबीबीएस डॉक्टर हैं तथा अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष रह चुके हैं। 'अणुव्रत सेवी' और 'अणुव्रत प्रवक्ता' होने के साथ ही ये 'अणुव्रत गौरव' समेत अनेक अलंकरणों से सम्मानित हैं।

नवसृजन के स्वर

■ राजेन्द्र वर्मा ■
कवि एवं विचारक–लखनऊ

नवसृजन के स्वर सुनाने मैं चला हूँ।
सुप्त चेतनता जगाने मैं चला हूँ॥

प्रेम का सागर हृदय में भर लिया है,
शूल को भी फूल जैसा कर लिया है,
तज दिया है स्वार्थ का मैंने हलाहल,
लोकहितकारी अमृत को वर लिया है,

स्नेह सुमनों से सजाकर जिन्दगी को
सत्य–शिव–सुन्दर बनाने मैं चला हूँ ।
नवसृजन के स्वर सुनाने मैं चला हूँ ॥

श्रम–परिश्रम ही सदा करता रहा हूँ,
दग्ध उर संवेदना भरता रहा हूँ,
स्वप्न–जाग्रत या सुषुप्ति–तुरीय में,
हर अवस्था धैर्य ही धरता रहा हूँ,

शब्द–सरिता बह रही मेरे हृदय में,
अर्थ की लय गुनगुनाने मैं चला हूँ ।
नवसृजन के स्वर सुनाने मैं चला हूँ ॥

ध्येय जीवन का सतत संघर्ष करना,
लड़खड़ाते साथियों में शक्ति भरना,
लोग जो भी हैं दबे–कुचले–निराश्रित,
शीघ्र ही उनका मुझे दुःख–दर्द हरना,

शोषकों से मुक्त करनी है व्यवस्था,
वंचितों को हक दिलाने मैं चला हूँ ।
नवसृजन के स्वर सुनाने मैं चला हूँ ॥

दुनियादारी का दायरा

■ अखिलेश आर्येन्दु ■

दुनियादारी का रंग भला किसके ऊपर नहीं चढ़ता? जिंदगी के जितने भी रंग हैं, वे सभी किसी न किसी रूप में दुनियादारी से ही ताल्लुक रखते हैं। यदि किसी पर दुनियादारी का रंग न चढ़े तो उसे योगी, साधु या महात्मा मान लिया जाता है। सच्चे अर्थों में योगी, संत या महात्मा होना और बात है और कपड़े रंग कर महात्मा बन जाना और बात। दुनिया में रहकर दुनियादारी का रंग यदि न चढ़ा तो समझिए संत या महात्मा होना सार्थक हुआ। कई सदियों में संत कबीर, चैतन्य महाप्रभु, महर्षि दयानंद व श्री अरविंद जैसे महामानव होते हैं, जो दुनिया में रहकर दुनियादारी के रंग से अछूते रहते हैं।

घर–गृहस्थी बसाने के बावजूद दुःख सहते, कष्ट झेलते हुए भी दुनियादारी के रंग से अलग अपनी दुनिया बना लेना तो और भी बड़ी बात है। ऐसे ही लोगों को भगवान कृष्ण ने गीता में 'स्थितप्रज्ञ' कहा है। वेद में ऐसे लोग 'आत्मज्ञानी' कहे गये हैं। जैसे राजा जनक और भर्तृहरि महाराज। ये सारी स्थितियां तब आती हैं जब इंसान में चैत्य पुरुष का विकास हो जाता है और लगातार आगे भी होता रहता है। 'चैत्य' को हम सामान्य अर्थों में 'चेतना का विकास' कह सकते हैं।

आज समाज में संकट यह है कि विकास के नाम पर महज भौतिक विकास हो रहा है और इसे ही असली विकास मान लिया गया है। इससे इंसान के अंदर अहंकार, स्वार्थपरता, विश्वासघात, क्रोध, हिंसा और अतिक्रमण करने की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है। आज दुनिया में जो संकट या समस्याएँ दिखायी पड़ रही हैं, वे सारी की सारी चैत्य पुरुष का विकास न होने के कारण हैं। चैत्य पुरुष के विकास और जागरण दोनों की आज जरूरत है। सबसे पहले हमारे अंदर चैत्य का जागरण होता है, फिर उसका विकास शुरू हो जाता है। आये दिन न जाने कितने 'जागरणों' के हम गवाह बनते हैं लेकिन जिसका जागरण होना चाहिए, उसका कभी नहीं होता। परिणाम यह हो रहा है कि जिंदगीभर हम दुनिया को जगाते रहते हैं और खुद सोते रहते हैं।

श्री अरविंद कहते हैं, "अंतर्पट खुलते हैं तब सबसे पहले प्रबल अनुभव यह होता है कि हम सदा से हैं और सदा रहेंगे। मनुष्य एक दूसरे ही आयाम में प्रवेश कर जाता है। जहां वह प्रत्यक्ष देखता है कि वह सृष्टि के समान पुरातन और नित्य युवा है। वह यह भी देखता है कि सुदूर अतीत में विस्तृत, और भविष्य की ओट में छिपे असंख्य अनुभवों की अटूट शृंखला में यह जीवन एक अनुभव, एक कड़ी है। तब पृथ्वी के समान सब विशाल बन जाता है।"

विचार करिए जब अंतर्पट खुले ही न तो क्या ऐसी स्थिति तक हम पहुँच सकते हैं, शायद नहीं। इसलिए सबसे पहले 'चेतना का जागरण' होना चाहिए। इसी राह पर चलकर आगे आत्म साक्षात्कार की स्थिति भी बनती है और फिर परमात्मा के परम प्रकाश से भी हमारा साक्षात्कार हो सकता है। गहरे अंधियारे से निकलने का रास्ता भी तो यही है।

दरअसल, हम जिस समाज और माहौल में रहते हैं, उससे बाहर निकलने के बारे में सोचते तक नहीं हैं। यही हमारे 'चैत्य जागरण और चैत्य विकास' न होने का बड़ा कारण बनता है। छोटी–छोटी बातों में हमारा स्वार्थ आड़े आ जाये, बहुत छोटी बातों पर हम लड़ने के लिए तैयार हो जायें और अपनी बातों को हर हाल में 'सही' साबित करने के लिए किसी भी स्तर पर उतरने के लिए हमेशा मुट्ठियां भींचते रहें, फिर तो हमारे मन में कभी 'चैत्य जागरण' के विचार ही नहीं आयेंगे। ऐसे में 'तेरे–मेरे' की धारणा, भावना और अपनी राह को ही सही साबित करते हुए हम भूल जाते हैं कि 'हम एक विचारशील प्राणी' यानी मनुष्य हैं।

महर्षि दयानंद ने 'तेरे–मेरे' के भेदभाव को मिटाने का बहुत ही उम्दा रास्ता बताया है। वे कहते हैं, "सबको अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।" सबकी उन्नति के साथ अपनी उन्नति भी हो ही जाती है। एक आदर्श मानव और समाज के लिए यह बहुत ही उपयोगी और व्यावहारिक रास्ता है।

सबके सुख–दुःख को अपना सुख–दुःख समझना और सबकी भलाई में ही अपनी भलाई मानना, कितनी बड़ी बात है। चैत्य का जागरण और विकास का रास्ता यही है। लौकिक और पारलौकिक दोनों का समन्वय भी इनसे हो जाता है। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति की बात यदि दुनिया के लोग मान लें तो यह धराधाम स्वर्ग बन जाये। वहीं, जब हम सोचते हैं कि इससे तो हमारा कोई लेना–देना नहीं, यह तो फलां व्यक्ति से ताल्लुक रखता है फिर तो समस्या ही समस्या है। लेकिन इसकी जगह हम यह समझ लें कि इस धरती का हर व्यक्ति हमारे अपने ही परिवार का एक सदस्य है, फिर बताइए, हमारे दिल में उसके प्रति प्यार और सद्भावना जगेगी कि नहीं? यही तो सच्चा योग, अध्यात्म और मानव धर्म है। यही हमारी संस्कृति का मूल उद्घोष है।

सोचिए, क्या कभी हम ऐसे सोचते हैं? इस बारे में सोचना शुरू कर दें तो हमारा हृदय इतना विशाल बन जायेगा कि दुनिया का हर व्यक्ति अपना सगा लगेगा। यही तो चैत्य जागरण और विकास का मकसद है। इस राह पर आगे बढ़ेंगे तो अंधेरा खुद–ब–खुद छँट जायेगा।

नांगलोई (दिल्ली) निवासी लेखक साहित्यकार, भारतीय पत्रकारिता परिषद एवं आर्य लेखक परिषद के सचिव, वैदिक वाङ्मय के संवाहक तथा शाकाहार प्रचारक हैं।

मेरा गाँव

■ डॉ० पूनम गुजरानी ■
गीतकार और कवयित्री– सूरत

मन की सारी पीड़ा को
हरता मेरा गाँव
आशीषों की एक पोटली
धरता मेरा गाँव।

आंगन में है वृक्ष आम का
कोयल की बोली
तुलसी के चौबारे पर
सूरज भर लाया झोली,
मेरे मन के रीतेपन को
भरता मेरा गाँव
आशीषों की एक पोटली
धरता मेरा गाँव।

गली गली में राम राम से
परिचय और प्रणाम
दरवाजे पर मां की ममता
खेत पिता–पैगाम,
सपनों की गंगा–यमुना में
बहता मेरा गाँव
आशीषों की एक पोटली
धरता मेरा गाँव।

जाने वाले बबलु, बंटी
बन बेगाने लौटे
दोष किसे दे धरती मैया
अपने सिक्के खोटे,
जोड़–भाग को नहीं समझता
डरता मेरा गाँव
आशीषों की एक पोटली
धरता मेरा गाँव।

खेतों के परचम फहराता
जीडीपी बढ़ जाती
सेना को अपने वीरों की
सौंप रहा है थाती,
मानचित्र पर कई सितारे
जड़ता मेरा गाँव
आशीषों की एक पोटली
धरता मेरा गाँव।

कहां खो गयी व्यवहार की मिठास

■ शिखर चंद जैन ■

हमारा सामाजिक परिवेश दिनों–दिन रूखा, बदमिजाज, अकड़ भरा, अशिष्ट और काफी हद तक निष्ठुर होता जा रहा है। हमारे व्यवहार की मिठास, सरसता और नफासत न जाने कहां गुम हो गयी।

हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू के अनुसार कार्यस्थल पर अशिष्टता बेहद आम है। इसमें 100 में से 98 लोगों ने अशिष्ट व्यवहार झेलने की बात स्वीकार की है। अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड में ऑर्गेनाइजेशनल बिहेवियर पर शोध करने वाले कहते हैं, हमारे व्यवहार में बेरुखी और कठोरता कॉमन कोल्ड जैसी हो गयी है और यह उसी की तरह संक्रामक भी है। यह हमारे समाज में तेजी से फैल रही है।

बसों में पहले वृद्ध लोगों या गोद में बच्चा लेकर खड़ी महिलाओं को कोई भी अपने मन से ही जगह दे देता था। राह चलते किसी बात पर दो लोगों का झगड़ा हो जाता तो लोग बीच–बचाव कर देते थे। टीवी चैनलों पर पार्टी प्रवक्ताओं, राजनीतिक विश्लेषकों और एंकरों की बहस गर्म जरूर होती थी, लेकिन वह सार्थक, संतुलित, सटीक, तर्कसंगत और व्यंग्यात्मक होती थी। लेकिन अब तो लोग देखते ही देखते तू–तड़ाक पर उतर आते हैं। एक–दूसरे को गाली–गलौज तक देने में नहीं हिचकते। कई बार तो हाथापाई तक की भी नौबत आ जाती है।

बच्चों द्वारा माता–पिता पर हाथ उठाने, पति या पत्नी द्वारा अपने जीवन साथी की हत्या कर देने जैसी घटनाएं भी पहले की तुलना में काफी बढ़ गयी हैं। कॉमेडी के नाम पर लोगों का मजाक उड़ाना, देवी–देवताओं पर भद्दी टिप्पणी और अश्लीलता की हदें भी पार होने लगी हैं। सोशल मीडिया हो या रियल लाइफ, हर कोई एक–दूसरे को नीचा दिखाने की जुगत में जुटा हुआ सा लगता है।

चुकाते हैं बड़ी कीमत

कोलकाता के फोर्टिस अस्पताल में वरिष्ठ मनोचिकित्सक संजय गर्ग कहते हैं, भले ही हम लोगों को फटकार कर या उनका अपमान करके क्षणिक आत्मसंतुष्टि पा लेते हों, लेकिन हमें इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। जब भी हम किसी के लिए कठोर शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं, अपमानजनक तरीके से बात करते हैं, अश्लील या चरित्र हनन करने वाले चुटकुले सुनाते हैं, किसी पर तंज कसते हैं या चीखते हैं तो उस व्यक्ति से ज्यादा नुकसान हमें उठाना पड़ता है। हमारे शरीर में कई तरह के भावनात्मक और शारीरिक असंतुलन उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका भारी नुकसान हमें उठाना पड़ता है। इनमें रक्तचाप बढ़ना, डाइट और दिमाग पर नकारात्मक असर पड़ना भी शामिल है। एक बार गुस्सा होने के एपिसोड के बाद हम काफी देर तक कुछ खास नहीं कर पाते, न अपने काम में एकाग्रचित्त होकर ध्यान लगा पाते हैं। इससे हमें आर्थिक नुकसान भी होता है।

आखिर क्या है बेरुखी और अशिष्टता

अशिष्टता, असभ्यता या कटु व्यवहार करने से बचने के लिए सबसे पहले आपको जानना होगा कि आपकी कौन–सी बातें या व्यवहार लोगों का दिल दुखाते हैं। इसका सीधा–सा मापदंड यही है कि आप कोई बात जब ऐसे तरीके से कहें जो सामने वाले को चुभ जाये या

सामान्य सामाजिक शिष्टाचार के नियमों के अनुरूप न हो तो इसे अशिष्टता की श्रेणी में ही रखा जायेगा। आप खुद को सुनने वाले के स्थान पर रखकर भी देख सकते हैं। तब आपको अंतर समझने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।

ऐसे बचें अशिष्ट व्यवहार से

आपको अपने पर्सनल स्टैंडर्ड तय करने चाहिए और दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि सामने वाला चाहे जितने निम्न स्तर पर उतरे, आप अपने तयशुदा स्तर से इतर न व्यवहार करेंगे न अशिष्ट या अश्लील शब्दों का प्रयोग करेंगे। आपको उकसावे से बचने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ होना पड़ेगा। अगर आप विनम्रता को अपने व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बना लेंगे तो शीघ्र ही इसका लाभ आपको महसूस होने लगेगा। धीरे–धीरे आपको जानने वाले लोग खुद ब खुद आपसे अलग तरह से, पूरे आदर और सम्मान के साथ बातें करने लगेंगे। ध्यान रहे, आदर पाना हर किसी को अच्छा लगता है। जब आप किसी से सम्मानपूर्वक बात करेंगे तो सामने वाला व्यक्ति भी आपसे उसी टोन में बात करने के लिए बाध्य हो जायेगा।

उकसावे से ऐसे बचें

कई बार हम अपने बचाव में कहते हैं कि क्या करें, सामने वाले ने ऐसी अशिष्टता की कि हम भी उत्तेजित हो गये, लेकिन जरा सोचिए कि फिर आप में और अशिष्ट व्यक्ति के व्यवहार में क्या अंतर रह गया।

उकसावे को टालने के लिए या तो आप उस समय वहां से हट जायें या सामने वाले व्यक्ति से कहें कि आप उससे बाद में बात करेंगे क्योंकि इस वक्त वह गुस्से में है और अपने वश में नहीं है।

ऐसा भी करें

- छोटी–मोटी बातों या शिकायतों को नजरअंदाज करना सीखें।
- किसी की पीठ पीछे शिकायत या गॉसिपिंग न करें।
- आप अपने व्यवहार के प्रति हमेशा सचेत रहें।
- मन में दया का भाव रखें और लोगों की मदद करने की आदत डालें। इससे आपका गुस्सा कम होगा और लोगों के प्रति सहानुभूति व समानुभूति का भाव जागृत होगा।
- अपनी बोलचाल में 'धन्यवाद', 'माफ कीजियेगा', 'कृपया' जैसे शब्दों का खुलकर इस्तेमाल करें।
- याद रखें, झगड़ा कभी भी अकेला इंसान नहीं कर सकता। आप चुप रहेंगे तो झगड़ालू व्यक्ति खुद ही शांत हो जायेगा।

कोलकाता निवासी लेखक की तीन मोटिवेशनल पुस्तकें, एक बालकथा संग्रह तथा एक लघुकथा संग्रह का प्रकाशन हो चुका है। व्यक्तित्व विकास समेत अन्य विषयों पर पत्र–पत्रिकाओं में नियमित लेखन।

...आगे बढ़ते जाते हैं

■ अशोक रावत ■
ग़ज़लकार एवं विचारक–आगरा

अपनी धुन में आगे बढ़ते जाते हैं,
हर चोटी पर ध्वज वो ही फहराते हैं।

खुद को साबित करना होता है केवल,
मौके जीवन में खुद चल के आते हैं।

हर कश्ती को पार लगाती है हिम्मत,
माँझी किसकी कश्ती पार लगाते हैं?

आँधी–वाँधी की परवाह नहीं करते,
बस हम मुस्तैदी से दीप जलाते हैं।

पाँव बचा कर आगे बढ़ते रहिएगा,
राहों के पत्थर ही राह बताते हैं।

दिल से उनका साथ निभाती है दुनिया,
वो जो अपने दिल का साथ निभाते हैं।

बस थोड़ा सा मिलते जुलते रहिएगा,
लोग समझ में खुद ही आते जाते हैं।

कंधे होते जाते हैं उतने मजबूत,
उन पर जितना बोझ उठाते जाते हैं।

नींद हमारी कोई बात नहीं सुनती,
सपने सारी सारी रात जगाते हैं।

खुद ही गढ़नी पड़ती है किस्मत अपनी,
हम तो बस लोगों को याद दिलाते हैं।

हमको ही यह बात पता होती है बस,
किस मंदिर में कितने फूल चढ़ाते हैं।

■ संदीप पांडे ■

मानव शरीर का औसत तापमान 98 डिग्री फारेनहाइट होता है और अगर इससे अधिक हो तो से बुखार महसूस होने लगता है। बुखार अगर 104 या 105 डिग्री पहुँच जाता है तो इंसान को अस्पताल में भर्ती होकर उसका इलाज पूरे तरीके से कराना आवश्यक हो जाता है।

धरती का तापमान भी अब बुखार की श्रेणी में आ चुका है। पूरे विश्व भर में पिछले 50 वर्षों के दौरान धरती के तापमान में 2 डिग्री से अधिक की वृद्धि हो चुकी है और अब यह वृद्धि बुखार को महा बुखार की तरफ से ले जाने की ओर अग्रसर है। हम उस दौर से गुजर रहे हैं जब तेज गति का विकास तेजी से प्रकृति के विनाश की ओर भी लेकर जा रहा है। हम पिछले 1000 वर्ष की प्रगति को देखें तो प्रारंभिक 800 साल में प्रगति धीमी गति से हुई और धरती का ह्रास भी कम हुआ। वहीं पिछली एक शताब्दी में हमने अपने लिए सुख–सुविधाओं का जो अंबार लगाया है, उसकी कीमत के रूप में आज धरती अधिक गर्म होकर पूरे विश्व के लिए खतरा बनती जा रही है। हर प्रकार के जीव–जंतु, पशु–पक्षी जीने के लिए तरस रहे हैं। मनुष्य ने जिस संतुष्टि की कल्पना में सुख–सुविधाओं को बढ़ाया, वह मन का संतोष और भी दूर हो गया है।

कार्बन उत्सर्जन जो 100 साल पहले 200 से 280 पीपीएम पर सीमित था, मात्र सौ वर्षों में बढ़कर 415 के ऊपर जाने को तैयार है। यह हमारे लिए चेतावनी का आखिरी अवसर है कि जब हम अपने वातावरण के इस बढ़ते संकट को थामने के लिए प्रतिबद्ध हो जायें और धरती की उम्र को कुछ साल और बढ़ाने के लिए अपनी जिम्मेदारी को निभायें। स्टीफन हॉकिंस के अनुसार जिस गति से विकास हो रहा है, अगर यह ऐसे ही चलता रहा तो इस धरती की उम्र मात्र 200 साल और बची है। पर्यावरण संकट के कारण यह बहुत संभव भी दिख रहा है।

बढ़ते तापमान से जलस्तर में हर साल 3.3 मिलीमीटर की वृद्धि जकार्ता जैसे राजधानी शहर को भी पूरी तरह जल में समाहित करने को आतुर है। इसे देखते हुए इंडोनेशिया ने अपनी राजधानी नुसंतारा में बनाने की शुरुआत भी कर दी है। लगातार बढ़ती बाढ़, जंगलों में लगी आग और पशु–पक्षियों का असंयमित व्यवहार हमें इस तरफ सोचने को मजबूर करने के लिए काफी है। अंधे होकर अंधाधुंध विकास की दौड़ में हमारा भागना हमें उस अंतिम छोर पर ले जायेगा जहां से मानव का लौटना संभव नहीं है।

यह बात तो तय है कि इस धरती को भली प्रकार साँस लेने के लिए हर प्रकार के जीव–जंतु, पेड़–पौधे इन सबकी आवश्यकता तो है, पर मानव का इसमें होना बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है। कीट–पतंगे अगर समाप्त हो जायें तो मानव जीवन स्वतः ही चार–पाँच वर्षों में खत्म होने के कगार पर होगा। मधुमक्खियां अगर अपना काम करना छोड़ दें या धरती से पूरी तरह से मुक्त हो जायें, तो मात्र दो वर्ष में मानव भी समाप्त हो जायेगा।

यह सब जानने के बाद मानव को क्या करना चाहिए, कैसे रहना चाहिए, इस बारे में सोचना बहुत आवश्यक है और यह सब कुछ निर्भर करता है कि हम अपने जीवन यापन के तरीके में वह आमूलचूल

परिवर्तन लायें जिससे धरती को कम से कम नुकसान हो। हमारे अति भोगी होने की प्रक्रिया अब पूरी तरह से समाप्त हो जानी चाहिए। पूरे विश्व में प्रगति का आकलन इस बात पर निर्भर करता है कि पर कैपिटा एनर्जी कंजम्पशन बढ़ रहा है या स्थिर है। विकसित देशों ने अपने विकसित होने का प्रमाण इस बात से दिया है कि वे अपने देशवासियों के लिए सुविधाओं का अंबार बढ़ाकर पर कैपिटा एनर्जी कंजम्पशन को एक उच्च स्तर पर लेकर आ गये हैं, पर इस बात का आकलन करना छूट गया कि इससे उनके द्वारा कार्बन उत्सर्जन कितना अधिक हुआ जो धरती की सेहत पर विपरीत प्रभाव डालने के लिए जिम्मेदार है।

यह सिर्फ सरकारों पर छोड़कर बैठने का अवसर नहीं है कि वे इस दिशा में कोई प्रयास करें बल्कि हर एक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह स्वयं अपने स्तर पर अपना भोग संयमित करे। जब तक हर व्यक्ति अपने भोग में कमी करके पर्यावरण के सुरक्षा के बारे में सोचना शुरू नहीं करता, तब तक हम धरती की लंबी उम्र की कामना नहीं कर सकते। पेट्रोल–डीजल, कोयला, प्राकृतिक गैस आदि पर हमारी निर्भरता आज भी 85 प्रतिशत ऊर्जा जरूरतों की पूर्ति करती है। इसमें कमी लाना आज की जरूरत और आने वाले भविष्य के लिए आवश्यक है। सूर्य से प्राप्त होने वाली रोशनी और ऊष्मा बहुत हद तक फॉसिल फ्यूल से प्राप्त होने वाली ऊर्जा की निर्भरता को न्यूनतम कर सकती है। हालांकि इस दिशा में प्रयास अब तेज हुए हैं, पर गति नाकाफी है। तीन साधारण से प्रयास असाधारण परिणाम के लिए काफी होंगे जिनसे हम आने वाली कुछ और पीढ़ियों को जीने का अधिकार सुलभ करा पायेंगे –

- जल और उर्जा का सीमित प्रयोग
- प्राकृतिक उर्जा का विवेकपूर्ण इस्तेमाल
- धरती के फेफड़े (33 प्रतिशत जंगल) को मजबूती प्रदान करना

प्रश्न यह उठता है कि इन लक्ष्यों तक कैसे पहुँचा जाये? कुछ उदाहरण सोच और कृत्य को मजबूती प्रदान कर सकते हैं –

- यूज एण्ड थ्रो संस्कृति का पूर्ण त्याग
- जल के उपयोग में कमी लाने हेतु व्यक्तिगत प्रयास
- फ्रिज, टीवी, एसी, वाशिंग मशीन, मिक्सी आदि का न्यूनतम प्रयोग
- कचरे के रिसाइक्लिंग के व्यक्तिगत छोटे और बड़े प्रयास
- प्राकृतिक रोशनी और वातावरण में अपना अधिकाधिक समय गुजारते हुए रोजमर्रा के कार्यों को करना
- पौधरोपण कर उन्हें बड़ा करने की जिम्मेदारी का निर्वहन
- ज्यादा से ज्यादा लोगों को सीमित कार्बन उत्सर्जन के बारे में शिक्षित करना

इस ओर जागरुकता के प्रयास में बहुत लोग और संस्थाएं लगी हुई हैं, पर मंजिल अभी दूर है और धरती से आपदाओं और महामारियों को दूर रखना है तो धरती के बुखार को भी बढ़ने से रोकना ही होगा।

अजमेर निवासी लेखक राजस्थान सरकार में जल ग्रहण भू–संरक्षण विभाग में सहायक अभियंता हैं। सौर ऊर्जा, पर्यावरण सुरक्षा, बाल मनोविज्ञान जैसे मुद्दों पर पत्र–पत्रिकाओं में इनके आलेख प्रकाशित होते रहते हैं।

फर्क दौड़ का

एक शिकारी कुत्ते ने झाड़ी में दुबके हुए खरगोश को देखा, ज्योंही वह खरगोश को पकड़ने के लिए उसके पास गया, खरगोश उससे बचने के लिए भागने लगा। कुत्ते ने उसका पीछा किया। लंबी दूरी तक पीछा करने के बाद भी खरगोश पकड़ में नहीं आया तो कुत्ते ने पीछा करना छोड़ दिया। इसे देख बकरियों के झुण्ड ने व्यंग्यपूर्वक कहा– दोनों की दौड़ में छोटा तेज धावक साबित हुआ! शिकारी कुत्ते ने हताशा भरे स्वर में कहा, मैं शिकार के लिए दौड़ रहा था, जबकि वह जीवन के लिए, जान बचाने के लिए दौड़ रहा था। यही उसके जीतने का कारण रहा।

सफलता का रहस्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता

■ शशि पाधा ■

हर व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँचने की अभिलाषा रखता है और इसके लिए निरन्तर प्रयत्नशील भी रहता है। अब तक केवल बुद्धि तथा प्रतिभा को ही सफलता का सोपान समझा जाता रहा था। कुशाग्र बुद्धि वाले बच्चे को देखकर मान लिया जाता था कि यह बड़ा होकर एक सफल व्यक्ति बनेगा। किन्तु आज की प्रतिस्पर्द्धा के युग में यह आवश्यक नहीं है कि उच्च बौद्धिक स्तर वाले बच्चे ही आगे जाकर अपने कार्यक्षेत्र या व्यवसाय में सफल हों। ऐसे भी कई उदाहरण हैं कि मध्यम बुद्धि वाले लोग अपने व्यक्तित्व के अन्य गुणों के कारण सफलता की चरम सीमा को छू लेते हैं।

सफलता के लिए बौद्धिक स्तर के महत्व की धारणा को तोड़ने वाले हार्वर्ड विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में पीएचडी तथा विज्ञान सम्बन्धी अनेक लेखों के लेखक डेनियल गोलमेन ने सन् 1995 में अपनी पुस्तक 'इमोशनल इंटेलिजेन्स : व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आई क्यू' में स्पष्ट किया है कि जीवन में प्रतिभा एवं बुद्धि के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, किन्तु जीवन–पथ पर अग्रसर होने एवं सफलता प्राप्त करने के लिए प्रतिभा के साथ–साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता का होना आवश्यक है। यानी कोई प्रतिभावान व्यक्ति अगर भावनात्मक स्तर पर भी परिपक्व होगा तो दोनों गुण सोने पे सुहागा जैसे कार्य करेंगे।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता से तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपनी निजी भावनाओं जैसे क्रोध, उद्वेग, खुशी, तनाव आदि को पहचान कर उन्हें इस तरह से संयमित एवं निर्देशित करे कि वे उसकी सफलता तथा उद्देश्य पूर्ति में सहायक हो सकें। वह अपनी प्रतिभा तथा भावनात्मक योग्यता के अनुसार जीवन के हर क्षेत्र में परिश्रम करते हुए अपने व्यावहारिक तथा व्यावसायिक जीवन में भी दूसरों की भावनाओं को समझ कर समझदारी से प्रतिक्रिया करे। वास्तव में अपनी भावनाओं की सही पहचान एवं उनका सही दिशा की ओर निर्देशन करना ही भावनात्मक बुद्धिमत्ता है। हमारे पौराणिक ग्रन्थों में भी इन्द्रियों पर संयम, मन पर नियंत्रण, सहिष्णुता, संवेदनशीलता, आत्मशान्ति तथा आत्मविश्लेषण के विषय में खूब लिखा गया है। हम इन ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर इस दिशा में कदम बढ़ायें तो हर क्षेत्र में सफल हो सकते हैं।

मानव–मस्तिष्क के दो भाग हैं। बायें भाग में तर्क बुद्धि है तथा दायें भाग के द्वारा मनुष्य अन्तःकरण की आवाज को सुनता और परखता है। दोनों भाग एक–दूसरे पर आश्रित हैं और दोनों का सामंजस्य ही मनुष्य के सफल जीवन की कुंजी है। भावनात्मक बुद्धिस्तर के विकास के लिए पाँच मुख्य गुणों का विकास अत्यावश्यक है :

खुद की पहचान

जब मनुष्य अपनी निजी भावनाओं तथा उनके कारणों को पहचान कर उन्हें सही तरह से निर्देशित करता है तो वे पग–पग पर उसकी सहायक बन जाती हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी योग्यताओं एवं कमियों का सही मूल्यांकन करके अपने सहयोगियों द्वारा समय–समय पर दिये गये सुझावों का स्वागत करता है। ऐसे व्यक्ति की परख करने के लिए यह देखा जाता है कि वह सुख–दुःख, तनाव–खुशी आदि पर कैसी प्रतिक्रिया करता है। आसपास के परिवेश में अपने आप को कितना ढालने की चेष्टा करता है तथा अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह कितनी कर्त्तव्यपरायणता से करता है। ऐसे व्यक्ति में अदम्य आत्मविश्वास होता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता से तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपनी निजी भावनाओं जैसे क्रोध, उद्वेग, खुशी, तनाव आदि को पहचान कर उन्हें इस तरह से संयमित एवं निर्देशित करे कि वे उसकी सफलता तथा उद्देश्य पूर्ति में सहायक हो सकें।

आत्म संयम

अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखकर किसी भी परिस्थिति में शान्त रहना, नकारात्मक विचारों को पीछे धकेल कर सकारात्मक विचारों के सहारे कार्यकुशलता का परिचय देना ही आत्मसंयम अथवा आत्म नियंत्रण है। ऐसा व्यक्ति क्रोध, उत्तेजना, अनिर्णय आदि दृष्टिकोण, अनिष्ठा, तनाव आदि नकारात्मक विचारों पर विजय पाकर संयम, विश्वसनीयता, कार्यसंलग्नता आदि सकारात्मक गुणों का विकास करता है। वह कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित रहकर अन्तरात्मा के आदेशों को समझ कर अपनी योग्यतानुसार कार्यप्रणाली में बदलाव लाने तथा नवीन प्रयोग करने में भी संकोच नहीं करता।

संवेदनशीलता

दूसरों की भावनाओं को समझना और उनका आदर करना भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक प्रमुख गुण है। मनुष्य जब यह पहचान लेता है कि उसकी व्यक्तिगत भावनाओं का उसकी कार्यप्रणाली एवं कार्यक्षेत्र पर क्या असर पड़ता है तथा वह अपने सहयोगियों की भावनाओं, योग्यताओं तथा विचारों का आदर करते हुए समझदारी से एक अटूट संगठन बनाकर चलता है तो हर क्षेत्र में उसे मित्रों तथा सहयोगियों का सहयोग ही मिलेगा।

प्रेरणा शक्ति

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि फल की चिन्ता किये बिना एकाग्रचित्त होकर तन्मयता से कार्य के प्रति समर्पित रहना चाहिए। भावनात्मक बुद्धिमत्ता रखने वाला व्यक्ति भी समर्पण भाव से परिश्रम, उद्यम तथा लगन से अपना कार्य करता जाता है तथा फल की ओर ध्यान नहीं लगाता। बौद्धिक तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का सामंजस्य रखने वाले लोग कार्य को शुरू करने से घबराते नहीं। वे अपनी लगन एवं अदम्य उत्साह से सहयोगियों को भी प्रेरित करते रहते हैं।

सामाजिक व्यवहार कुशलता

समाज की विभिन्न इकाइयों, समुदायों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करके कुशलता से सहयोगियों तथा मित्रों को साथ लेकर चलने वाला व्यक्ति भावनात्मक स्तर पर परिपक्व माना जाता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों से सहयोग की आशा रखते हुए स्वयं भी सदैव सहयोग के लिए तत्पर रहता है। वह खुले दिल से विचारों का आदान–प्रदान करता है। नये–नये प्रयोग करने से भी संकोच नहीं करता। ऐसे व्यक्ति औद्योगिकी जगत में तथा समाज में आने वाले बदलाव के प्रति जागरूक रहते हैं।

आज के प्रतिस्पर्द्धा के युग में कुछ विद्यार्थी बौद्धिक योग्यता के अनुसार परिश्रम करते हुए परीक्षा में तो अच्छे अंक ले आते हैं किन्तु नौकरी के लिए साक्षात्कार के समय या कार्यक्षेत्र में सफल नहीं हो पाते। आज के औद्योगिक घराने या मल्टीनेशनल कंपनियाँ साक्षात्कार के समय आवेदक की केवल शैक्षिक अथवा बौद्धिक योग्यता नहीं देखतीं अपितु व्यावहारिक एवं व्यावसायिक योग्यता भी परखती हैं।

जब यह बात सत्य है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास किया जा सकता है तो बच्चों को भावनात्मक रूप से परिपक्व बनाने के लिए माता–पिता, गुरुजन एवं समाज के सही योगदान की आवश्यकता है। इसके लिए घर का स्नेहपूर्ण वातावरण, माता–पिता का आपस में प्रेम तथा आदरपूर्ण व्यवहार, बच्चों की भावनाओं का आदर तथा उन्हें अपने विचार व्यक्त करने की छूट देने की आवश्यकता है। जो बच्चे शुरू से ही हँसी–खुशी वाले माहौल्ल में, प्रेरणा देने वाले अध्यापक एवं प्रबुद्ध तथा प्रगतिशील समाज की देखरेख में पलते हैं, उनकी बुद्धि का चहुँमुखी विकास होता है और सफलता हर क्षेत्र में उनके कदम चूमती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो वैश्विक महामारी कोविड–19 का प्रभाव हर किसी के शारीरिक और भावनात्मक दोनों स्तरों पर पड़ा है। युवा और छात्र–छात्राएं इससे अधिक प्रभावित हुए हैं। भय, चिंता, असमंजस और तनाव ने उनके मानसिक स्वास्थ्य को बहुत प्रभावित किया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने छात्रों को इससे उबारने के लिए एक ऑनलाइन कोर्स शुरू करने का निर्देश दिया है। इसमें कहा गया है कि शिक्षा संस्थानों द्वारा परामर्श कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक, भावनात्मक व शैक्षणिक सहायता और सलाह प्रदान करने की आवश्यकता है। अनिश्चितता के इस दौर में यह बहुत आवश्यक है कि विद्यार्थियों के मानसिक और बौद्धिक विकास में यह महामारी तथा इससे जुड़ी समस्याएँ बाधा न उत्पन्न करें। इसके लिए माता–पिता एवं शैक्षिक संस्थाएँ पूर्ण रूप से जागृत और समर्पित हों।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता अथवा समझ की सार्थकता इस बात में है कि इसके माध्यम से मानवीय संबंध स्वस्थ और बेहतर बनाये जा सकते हैं। साथ ही इसकी महत्ता इस बात में भी है कि इसके सहारे जीवन से जुड़ी चुनौतियों से जूझने तथा इन चुनौतियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर समस्याओं के समाधान में मदद मिलती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता हमें एक बेहतर जीवन जीने की क्षमता प्रदान करती है।

वर्जीनिया (यूएसए) में रहने वाली लेखिका 25 वर्षों से अध्यापन के साथ ही साहित्य–साधना में संलग्न हैं। पाँच काव्य संग्रह एवं सैनिकों के शौर्य विषयक दो संस्मरण संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

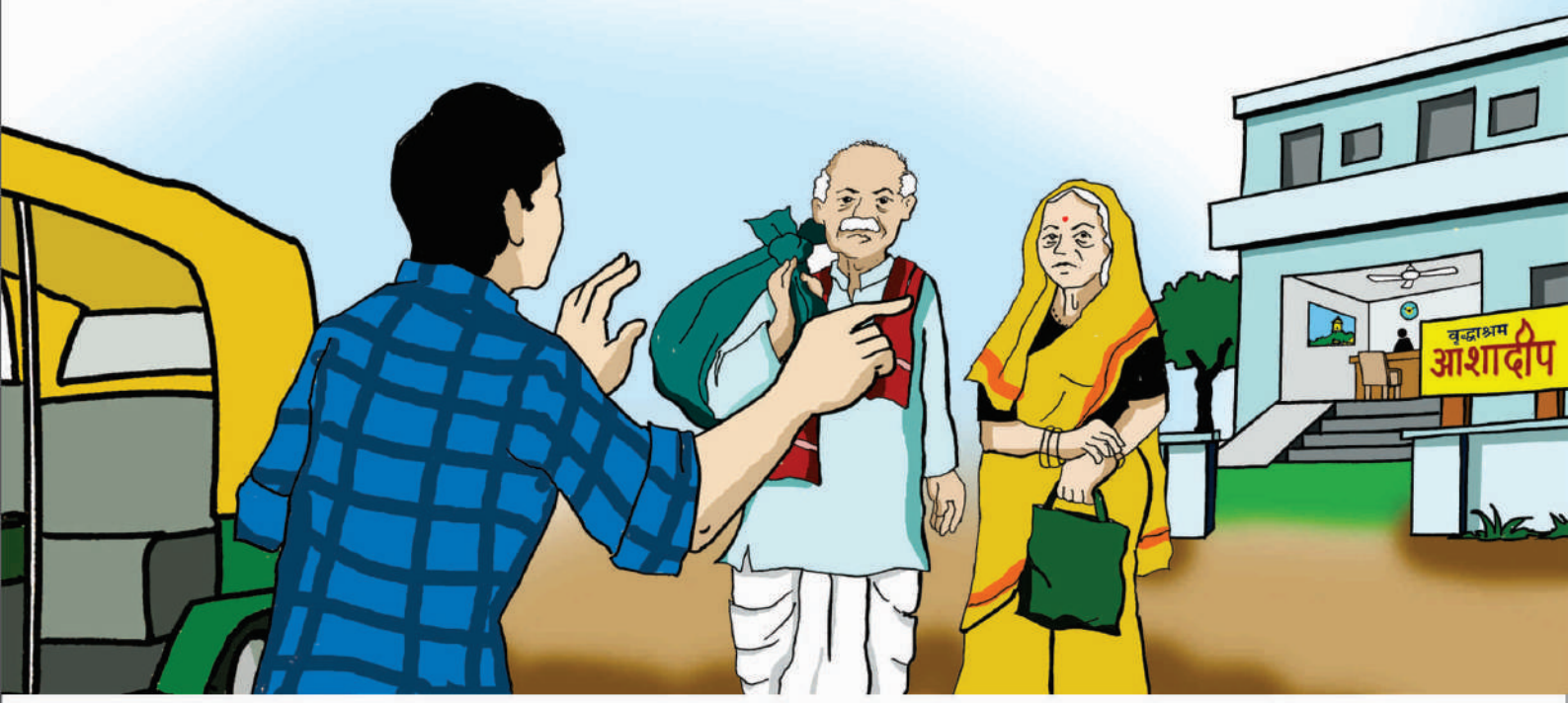

लौट आयीं खुशियां

■ दिनेश विजयवर्गीय ■

आखिरकार रोहित ने तय कर लिया कि बूढ़े माता–पिता की रोज–रोज की चिकचिक से बचने के लिए उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ आयेगा। उसने सुबह की चाय के बाद माता–पिता का सामान एक पोटली में बाँधा और उन्हें ऑटो पर बिठा शहर से पाँच किमी दूर वृद्धाश्रम के गेट पर छोड़ दिया।

बूढ़े माता–पिता ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि भरा–पूरा परिवार होने के बावजूद बुढ़ापे के दिन इस तरह कटेंगे। हाथ में कपड़ों व सामान की पोटली थामे दोनों धीरे–धीरे गेट के अन्दर पहुँचे। उस समय वहां वृद्धों का चाय–नाश्ता चल रहा था। तभी वहां के व्यवस्थापक की नजर इस वृद्ध दंपती पर पड़ी। उनके चेहरे पर उभरे पीड़ा के भाव देख वह उनके पास गया और उन्हें एक ओर बिठाकर यहां तक आने की पूरी जानकारी ली। वह समझ गया कि बेटे ने इतना भी जरूरी नहीं समझा कि कम से कम इनका रजिस्ट्रेशन करवा दे।

व्यवस्थापक ने उनसे सहानुभूति दिखाते हुए हाल ही बने लैट–बाथ अटैच कमरों में से एक उन्हें अलॉट कर दिया। एक महिला उनके लिए चाय–बिस्किट ले आयी। चाय पीते हुए उन्हें सब कुछ पराया होते हुए भी अपनेपन के रिश्ते–सा जुड़ाव महसूस हुआ। वे मन ही मन सोचने लगे कि घर पर रोज–रोज की लड़ाई व अनादर भरी जिन्दगी से तो अच्छा ही रहेगा यहां।''

उधर, माता–पिता को वृद्धाश्रम छोड़ने के बाद रोहित घर लौटा तो पत्नी रजनी मुस्कुराते हुए बोली–''चलो, दूर हुआ घर का अटाला। अब हम अपनी मर्जी से अपनी जिन्दगी जीयेंगे।'' कुछ ही दिनों बाद उन्होंने पूरे मकान को रेनोवेट करवा लिया। बेटे राहुल व बेटी सुनन्दा को भी दादा–दादी का खाली हुआ कमरा पढ़ने को मिल गया। बीच के बड़े कमरे में नया सोफा रखवा दिया। अब रजनी की सहेलियों को भी किट्टी पार्टी में कोई डिस्टर्ब नहीं होगा। पहले जब भी पार्टी होती तो सास–ससुर लाख मना करने के बावजूद अपने मैले–कुचैले कपड़ों में किसी न किसी बहाने आ ही जाते थे। रजनी को उनका यह व्यवहार काँटे की तरह चुभता।

रोहित अब हर रविवार को पत्नी और बच्चों के साथ बाहर ही डिनर लेता। सभी जी भरकर एन्जॉय करते। महीनों तक घर का ऐसा ही मस्त माहौल रहा। बच्चे कभी दादा–दादी को याद भी करते तो रजनी उन्हें डाँट देती।

उधर वृद्धाश्रम में दोनों बुजुर्ग पति–पत्नी का मेलजोल वहां रह रहे हम उम्र लोगों के साथ बढ़ता रहा। कभी किसी के साथ बैठ जाते और अपने सुख–दुःख की बातें करके जी हल्का कर लेते। रोहित के पिता ने मित्रता एवं सहानुभूति का भाव रखने वाले एक बुजुर्ग को यहां आने की दास्तां सुनायी, "मेरा जीवन सामान्य था, आमदनी भी खास नहीं थी, पर बेटे की पढ़ाई में कोई कमी नहीं होने दी। वह कम्प्यूटर साइंस में इंजीनियर बन

गया। शहर में ही एक कम्पनी में उसकी नौकरी लग गयी। कई लोग उसके लिए रिश्ता लेकर आने लगे, लेकिन वह 'अभी नहीं' कहकर टालता रहा। हम तो तब आश्चर्यचकित रह गये, जब एक दिन रोहित एक युवती को साथ लेकर आया और हमसे बोला, "बाबूजी, यह रजनी है। मेरे ऑफिस में ही काम करती है। हमने आज ही कोर्ट मैरिज की है। आशीर्वाद दीजिए।''

हम दोनों ने इकलौते बेटे की शादी को लेकर क्या–क्या अरमान संजो रखे थे, सब पर पानी फिर गया। हमारे मिलने वालों को जब पता चला तो वे तरह–तरह की बातें करने लगे। कोई कहता, छोरा ऐसा तो दिखता नहीं था। तो कोई कहता, बेटे पर माता–पिता का नियंत्रण नहीं रहा। जितने मुँह उतनी बातें। तीन वर्ष बीते कि बहू ने रोहित को हमारे खिलाफ पट्टी पढ़ानी शुरू कर दी और जब–तब उसके कान भरती रही। समय के साथ उसके एक पुत्र व एक पुत्री भी हुई। बच्चे कुछ बड़े हुए तो स्कूल जाने लगे। दोनों बच्चे तो दादी से रोज कहानी सुने बिना रहते नहीं थे। बहुत लगाव हो गया था बच्चों का हमसे। हमने सोचा, बहू धीरे–धीरे सास–ससुर का सम्मान करना सीखेगी, लेकिन हमारा सोचना गलत साबित हुआ। उल्टे वह तो हमारे बेटे को भी अपने जले–भुने विचारों से प्रभावित करने लगी।'' रोहित के पिता की आँखें भर आयीं अपना दुखड़ा सुनाते हुए।

जिन बुजुर्ग से वे बातें कर रहे थे, उन्होंने धीरज बँधाते हुए कहा कि यहां जो भी आता है, वह अपने परिजनों से दुःखी होकर ही आता है। इसलिए आप दुःखी मत हों। हम सब साथ हैं न, सुख–दुख साथ बाँटने के लिए।''

यह वृद्धाश्रम विशाल प्रांगण में था। उसके एक हिस्से में हरा–भरा पार्क था, जिसके चारों ओर कई प्रजातियों के वृक्ष लगे हुए थे। वॉकिंग ट्रैक के किनारे जगह–जगह पर बेंचें भी लगी हुई थीं, जिन पर बैठकर सुस्ताने के साथ ही बुजुर्ग आपस में दुःख–दर्द भी बाँट सकें।

एक दिन वृद्धाश्रम के सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम में वहां रहने वाले सभी बुजुर्गों को बुलाया गया। वहां एक सूटेड–बूटेड युवा ने बुजुर्गों की स्थिति पर विचार प्रकट किये और अंत में अपने पिता के जन्मदिन पर वहां रह रहे सभी बुजुर्गों का मुंह मीठा करवाने और सबको शॉल गिफ्ट करने की घोषणा की। उस दिन वृद्धाश्रम के संरक्षक भी आये हुए थे। उन्होंने कहा–हमारे देश की संस्कृति की विशेषता परिवार के सुख–दुःख में सबको साथ लेकर चलने की है। एक यह हैं, जो अपने वृद्ध पिता के जन्मदिन पर आपके साथ खुशियां बाँट रहे हैं और दूसरी ओर आपके परिजन हैं जिनके रूखे व उपेक्षित व्यवहार के कारण आपको वृद्धाश्रम का सहारा लेना पड़ रहा है।

देखते ही देखते रोहित के माता–पिता को वृद्धाश्रम में रहते हुए तीन वर्ष गुजर गये। इस बीच न कभी बेटा आया न बहू। दोनों पति–पत्नी एक–दूसरे का सहारा बने रहे। बच्चों के स्कूल क्रिसमस और नववर्ष की छुट्टियों के चलते एक सप्ताह के लिए बंद हो गये थे। रोहित के मित्र रोहन ने उन्हें अपने शहर में आमंत्रित किया कि कुछ दिन साथ रहकर बचपन की यादें ताजा करेंगे। 27 दिसम्बर को पास वाले मन्दिर में एक संत आ रहे हैं, जो अपने प्रवचनों के लिए पूरे देश में जाने जाते हैं। कुछ दिनों के लिए बच्चों और भाभी को लेकर आ जाओ।

बच्चों में भी उत्साह था अंकल के शहर घूमने का। सो रोहित ने कार्यक्रम बना लिया। वे रविवार सुबह दस बजे रोहन के घर पहुँच गये। वहां रोहन अपने बुजुर्ग पिता को धूप में बिठाकर उनकी मालिश कर रहा था। एक बच्ची दादी के पैर दबा रही थी। रोहित को आया देख रोहन बहुत खुश हुआ। उसने कहा –"ड्राइंग रूम में बैठो। मैं पिताजी की मालिश करके आ रहा हूँ।''

दोनों परिवार ड्राइंग रूम में बैठ चाय–नाश्ता के साथ ही बातें भी करते रहे। इसी बीच रोहन ने रोहित से उसके माता–पिता के बारे में पूछा तो उसने कह दिया सब ठीक है। उसने उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ आने वाली बात छिपा ली, लेकिन रोहन के पिता की सेवा वाली बात उसके मन में घूमती रही। वह बोल उठा–"इनकी सेवा में तुम्हें कोई परेशानी नहीं होती ?''

"अरे! यह तुम क्या कह रहे हो रोहित? माता–पिता तो हमारे लिए भगवान होते हैं। हम चाहे कितनी भी असुविधा में रह लें, लेकिन उन्हें कतई कष्ट नहीं होने देना चाहिए। उनकी जितनी सेवा हो सके, जरूर करनी चाहिए। उनका आशीर्वाद हमें फलने–फूलने का अवसर देता है। बिटिया भी जब–तब दादी के पैर दबा देती है। हमारा सिद्धांत है, पहले बड़ों की सेवा, फिर काम दूजा।''

"तुम्हें इस छोटे मकान में परेशानी तो होती होगी न ?''

"रोहित, मानो तो परेशानी। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं कि थोड़ी–सी परेशानी और आधुनिक भौतिक सुख–सुविधाओं के चलते माता–पिता से मुँह मोड़ लें।''

रोहन की बातें सुनकर रोहित और उसकी पत्नी कहीं खो–से गये। दिन में सबने साथ में भोजन करने के बाद आराम किया और फिर शाम को सभी संत जी के प्रवचन सुनने मन्दिर पहुँचे। वहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु महिला–पुरुष सभा भवन में बैठे थे।

संत जी प्रवचन कर रहे थे –"हम आज इतने सुविधाभोगी होते जा रहे हैं कि घर के बुजुर्गों के दुःख–दर्द पर ध्यान नहीं देते। उनकी नेक सलाह को गैरजरूरी समझते हैं। जरा सोचिए, इस दुनिया में

आपको लाने वाले आपके माता–पिता ही तो हैं। हमने भगवान को नहीं देखा। मगर सच तो यही है कि माता–पिता ही हमारे भगवान हैं। उन्होंने आपको बचपन में कितना प्यार किया होगा। कितनी बार आपकी फरमाइश पर आपको कंधे पर बिठाया होगा। कितनी बार पार्क में घुमाने, झूला झुलाने, फिसल पट्टी पर फिसलने का आनन्द दिलाया होगा। आपके थोड़े से दुःख–दर्द में कितने परेशान हो जाते रहे होंगे। ...और आज ऐसे माता–पिता को कई पुत्र बोझ समझकर वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं। जरा सोचिए, जिन माता–पिता ने आपकी खुशियों के लिए जीवन बिता दिया, वे ऐसे बेटे के बारे क्या कुछ सोचते होंगे ?''

प्रवचन सुनकर रोहित और रजनी को अपनी भूल का एहसास हो गया। दो दिन के बाद जब वे अपने घर लौटे तो उन्होंने अपने माता–पिता को जल्द ही घर ले आने का पक्का मन बना लिया। उनके लिए अटैच लैट–बाथ वाला कमरा तैयार कराया, जिससे उन्हें आराम रहे और उसमें कई पुस्तकें व पत्र–पत्रिकाएं भी लाकर रख दीं। उनके लिए एक स्मार्टफोन भी ले आये।

दूसरे ही दिन रोहित अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कार से माता–पिता को लेने वृद्धाश्रम पहुँचा। उस समय सभा भवन में सभी बुजुर्गों की मीटिंग चल रही थी, जिसे संस्था के संरक्षक सम्बोधित कर रहे थे। रोहित परिवार सहित बाहर बरामदे में मीटिंग खत्म होने का इंतजार करने लगा। तभी वहां के व्यवस्थापक ने उन्हें भी बुलाकर सभा भवन में पीछे की ओर बिठा दिया। संरक्षक का संबोधन पूरा हुआ तो रोहित ने उनके पास जाकर अपना परिचय दिया और कुछ कहने की स्वीकृति चाही। संरक्षक की हां के बाद रोहित ने रूंधे गले से माता–पिता के प्रति किये गये व्यवहार के लिए माफी माँगते हुए कहा, "हमने अपनी सुख–सुविधा के लिए भगवान जैसे माता–पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ दिया। उन्हें कितनी मानसिक प्रताड़ना उठानी पड़ी। मैं इसके लिए दोषी हूँ। आज मैं और मेरा परिवार माता–पिता को लेने आये हैं।''

इस पर संरक्षक जी ने कहा, "मुझे खुशी है कि रोहित बाबू ने अपने माता–पिता का मूल्य समझा और अपनी भूल पर पश्चात्ताप करते हुए इन्हें लेने आये हैं।'' रोहित और रजनी ने माता–पिता के पैर छुए। बच्चे अपने दादा–दादी से लिपट गये। माता–पिता ने भी अपने प्रति किये गये रूखे व्यवहार को भूलकर पुत्र को गले लगा लिया। यह सब देख सभा भवन में बैठे सभी बुजुर्ग खुशी से झूम उठे और उन्हें खुशी–खुशी विदा किया। घर पहुँचे तो पड़ोसियों ने माला पहना कर वृद्ध दंपती का स्वागत किया और पैर छूकर आशीर्वाद लिया। रोहित को लगा जैसे माता–पिता की घर वापसी से उसके परिवार में फिर से खुशियां लौट आयी हों।

बूंदी निवासी लेखक विद्यालय शिक्षा में व्याख्याता पद से सेवानिवृत्त होने के बाद साहित्य–साधना में संलग्न हैं। इनकी रचनाएं पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

...ताकि खुशहाल रहे बचपन

■ दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' ■

लखनऊ से अपने गृह जिले के लिए मैं बस पर सवार हुआ। सामने की सीट खाली थी और उस पर एक खाली ठोंगा पड़ा था। मैंने सीट पर बैठते हुए उसे हाथ में ले लिया। तभी उस पर छपी एक हेडिंग पर नजर पड़ी। लिखा था– 'ताकि न लगे मारधाड़ का चस्का'।

वह ठोंगा किसी पुराने अखबार से बना था और उसमें पूर्वोत्तर के मणिपुर राज्य के एक क्षेत्र की खबर थी। खबर के अनुसार, वहां सात–आठ गाँवों के स्कूली बच्चों के बीच अनबन, मारकुटाई, धौंसबाजी, देख लेने की धमकी का माहौल गर्म था। बच्चों के बीच लड़ाई–झगड़ा और मनमुटाव आम बात है। मगर वहां की लगातार बढ़ती तनातनी एक खतरनाक अंजाम का आगाज लग रही थी।

वहां आस–पास के गाँवों के समझदार लोगों ने बैठक की, जिसमें बच्चों के बिगड़ते आपसी सौहार्द पर चर्चा शुरू हुई। बातचीत के बीच चौधरीनुमा एक व्यक्ति ने कहा– "आप बच्चों को खेलने के लिए खिलौने वाले टैंक, कार्बाइन, पिस्तौल, मशीनगन देने लगे हैं और चाहते हैं कि वे शांति के अग्रदूत बनें, यह नामुमकिन है। हिंसक खिलौने देकर आप खुद उनको मारने–मरने का प्रशिक्षण दे रहे हैं। इससे बच्चे हिंसा, विध्वंस, नफरत, विद्वेष ही सीख सकते हैं। मासूमियत, संवेदनशीलता, कोमलता और सपनीली कल्पना इससे मिलने की बात तो सोची ही नहीं जा सकती।"

बहस–मुबाहिसे के क्रम में यह सवाल भी सामने आया कि बच्चों को खिलौना बंदूक से विमुख करके क्या बाल आक्रोश को खत्म किया जा सकता है? इससे उनमें अहिंसा का स्थायी भाव पैदा हो जायेगा? इसका सीधा जवाब उसी व्यक्ति ने दिया कि इससे तत्काल कुछ नहीं होने वाला, यह सिर्फ बिगड़ैल बचपन को साधने की एक पहल होगी। ऐसी कई पहल के बाद ही हम बच्चों को खुशहाली की दिशा में मोड़ने का सपना देख सकते हैं। उनमें अहिंसा के भाव का बीजारोपण हो सकता है। गाँव वालों को उसकी बात जँच गयी और उन लोगों ने अपने नौनिहालों को हिंसक प्रवृत्तियों से बचाने की पहल के तहत खिलौना बंदूकों को आग के हवाले कर दिया।

इस खबर को पढ़ते समय गुरुग्राम के एक नामी निजी स्कूल के सीनियर छात्र द्वारा स्कूल के ही मासूम बच्चे की हत्या का मामला, लखनऊ के एक प्राइवेट कॉलेज में छह साल के बच्चे का कक्षा सात की छात्रा की दरिंदगी के शिकार होने, दिल्ली के गवर्नमेंट सैकण्डरी स्कूल में कक्षा आठ के दो छात्रों के बीच सीट पर बैठने की कहासुनी के हत्या तक जा पहुँचने समेत कई घटनाएं मेरे जेहन में धमाचौकड़ी मचाने लगीं। निश्चित रूप से आक्रोश और बेचैनी से घिरे ये ऐसे उद्दण्ड बच्चे या किशोर थे, जिनके अंदर अहिंसा के मूल्यों का रोपण नहीं हुआ था, लिहाजा वे अपने गुस्से को काबू में नहीं रख सके और अनर्थकारी घटनाएँ घट गयीं। इस प्रकार की नकारात्मकता के बरअक्स मणिपुर के उस ग्रामीण क्षेत्र की यह खबर एक उम्मीद की रोशनी दिखाती है।

बच्चों के भटकाव के कई सामाजिक कारण भी हैं। आज की तारीख में मध्य और निम्न मध्य वर्ग के अभिभावक दोनों हाथों से भौतिक चकाचौंध के साधन बटोरने में इस कदर व्यस्त हैं कि उनके पास बच्चों के लिए समय ही नहीं है। रहा निम्न वर्ग तो वह जिन्दगी की बुनियादी जरूरतें पूरी करने में ही लस्त–पस्त है। नतीजतन बचपन एक सांस्कृतिक उजाड़ में जा पहुँचा है। नौनिहालों को परिवार से मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा–व्यवहार प्रतिमान, संस्कार, जीवन मूल्य, चरित्र निर्माण की जिम्मेदारी भी विद्यालयों पर आ गयी है। वास्तव में यह तेजी से बिगड़ते समाज के खतरनाक स्तर तक पहुँचने का संकेत है।

विद्यालयों में भारी–भरकम बोझिल पाठ्यक्रम है, जो बच्चों को तनावग्रस्त बनाता है। वहीं अध्यापकों के जिम्मे पढ़ाने के अलावा ढेरों गैर शैक्षणिक कार्यों का बोझ भी होता है। ऐसे में छात्र–अध्यापक के परस्पर संवाद, छात्रों की मनोभावात्मक समस्याओं से जुड़कर उनके निदान के प्रयत्न जैसे शिक्षण सहगामी विन्दु नेपथ्य में चले गये हैं। परिणामतः शिक्षक महज वेतनभोगी कर्मचारी और छात्र तोतारटंत संवेदनशून्य शिक्षा का उपभोक्ता बन गया है। बच्चों के मौलिक गुणों को नकारकर उसे स्टीरियो टाइप्ड तरीके से जबरदस्ती शिक्षित किया जा रहा है। इससे बच्चों में विसंगति पैदा हो रही है, बच्चों में आक्रोश और हिंसा के भाव उत्पन्न हो रहे हैं।

मणिपुर के गाँव वालों की पहल इस बात का उद्घोष है कि हम अपने बच्चों के लिए फिक्रमंद हैं। हम उनकी संवेदना, कल्पनाशीलता और कलात्मकता को मरने नहीं देंगे। इस घटना में एक संदेश भी छिपा है कि अपने बच्चों को लेकर जैसी जागरुकता उनके बीच है, वही हम सब में भी होनी चाहिए। जब परिवार, गाँव, समाज सब बच्चों की भावात्मक संरक्षा की दिशा में सचेत होने लगेंगे तो दुनिया की कोई भी ताकत उन्हें भटका नहीं सकेगी और उनका बचपन खुशहाल रहेगा।

जासापुरा (सुल्तानपुर) निवासी लेखक सेवानिवृत्त अध्यापक तथा बाल साहित्यकार हैं। यू.पी. सरकार से अमृत लाल नागर बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित।

अतीत के झरोखे से...

इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अर्द्धशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के अप्रैल 1970 के अंक से ली गयी है।

परमाणु, मानव और अहिंसा

डॉ. दौलतसिंह कोठारी

परमाणु की नवीनतम जानकारी, मानव विकास के रहस्योद्घाटन तथा अहिंसा के अभ्युदय आज ऐसे तत्त्व हैं जो आपस में गुंथे हुए हैं।

आज मानव समाज प्रगति तथा अस्तित्व के लिए विज्ञान पर निर्भर है। सम्पूर्ण विश्व एक घर का स्वरूप ग्रहण कर रहा है। विश्व शांति तथा अहिंसा अब कपोल कल्पना नहीं रहे वरन् व्यावहारिक लक्ष्य बन चुके हैं। इन लक्ष्यों का मार्ग मानव द्वारा मानवीय ढंग से विज्ञान के उपयोग पर निर्भर करता है। विज्ञान का उपयोग सत्ता हथियाने और कमजोर का शोषण करने के लिए नहीं वरन् गरीबी, अज्ञानता तथा अन्य प्रकार की कमजोरियाँ दूर करने के लिए हो रहा है। यह एक स्वस्थ परम्परा है।

विज्ञान नैतिकता से भिन्न है, किन्तु विज्ञान में आस्था भी एक नैतिक गुण है। विज्ञान का यह गुण है, और सभी ज्ञान का कि यह निरंतर चलने वाली खोज है। किसी व्यक्ति के लिए महत्व की बात यह नहीं है कि उसके सामने उपलब्ध ज्ञान कितना है वरन् यह कि ज्ञान का अल्पांश भी ग्रहण करके वह किसे कितना लाभ पहुँचा पाता है।

विज्ञान एक बौद्धिक कार्य है, जबकि अहिंसा नैतिक तथा आध्यात्मिक! अहिंसा का सम्बन्ध दर्शन से है। इसलिए विज्ञान और दर्शन का नैकट्य आवश्यक है। मानव का भविष्य इसी तथ्य पर निर्भर करता है कि यह निकटता कितनी प्रगाढ़ है। एण्टनी स्टोर के अनुसार- 'यदि मानव को अपना अस्तित्व बनाये रखना है तो उसे अपने बारे में अधिकाधिक जानकारी रखनी चाहिए।'

अहिंसा किसी को चोट पहुँचाने, या किसी जीव को हानि पहुँचाने से परे रहने का विचार है। यह प्रत्येक के लिए प्रेम व आदर प्रदर्शित करती है। गांधीजी ने अहिंसा के विचार को एक नया आयाम दिया। उन्होंने इसे सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन तथा औपनिवेशिक मुक्ति का साधन बतलाया। हमें गांधीजी का योग वैज्ञानिक क्रांति के प्रसंग में देखना होगा। गांधीजी ने 2500 वर्ष पूर्व की अहिंसा की स्पष्ट व्याख्या के पश्चात् इसमें जो नया आयाम जोड़ा है, उसमें इस बात पर बल दिया गया है कि अहिंसा कोई जड़ विचार नहीं है। इसका भी विज्ञान की तरह असीमित रूप से विकास संभव है।

वैज्ञानिक सत्य का प्रमाण प्रयोगसिद्ध होता है। आवश्यक नहीं कि प्रयोग गलतियों से प्रभावित न हों। पहले लोग न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सम्बन्धी नियमों पर विश्वास करते थे लेकिन 1918 में आइंस्टीन ने दिखाया कि न्यूटन के नियम आंशिक रूप से ही सही हैं। वैज्ञानिक सत्य एकदम सच वक्तव्य नहीं हो सकता। इसमें सदैव अनिश्चित तत्त्व होता है। यह गणित के सत्यों से बहुत भिन्न है। गणित के तथ्य एकदम निश्चित होते हैं।

नैतिक सत्य एकदम भिन्न विषय है। यदि कोई यह विश्वास प्रकट करे कि अहिंसा अच्छी चीज है, तो वह इस बात को गणित या विज्ञान की पुस्तकों का उल्लेख करके सिद्ध नहीं कर सकता। तो फिर नैतिक सत्य की कसौटी क्या है?

गांधीजी ने कहा था कि मेरे लिए नैतिक सिद्धांत की परीक्षा उस सिद्धांत को मानने वाले व्यक्ति की वह इच्छा है कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को हानि पहुँचाये बिना उसके लिए कितना त्याग करता है। कोई नैतिक सिद्धांत उस समय तक सच है, जब तक वह व्यक्ति की भावना से मेल खाता है, और वह उसकी आत्मा के निकट है।

अतीत के झरोखे से...

गांधीजी ने कहा था -अहिंसा सत्य का साधन है और सत्य ईश्वर है। जितना जो कोई अहिंसा पर चलता है, उतनी ही अधिक क्षमता उसमें सही और गलत को समझने में होती है, न्याय और अन्याय को अनैतिक और नैतिक को समझने में होती है।

यदि सभी पदार्थ (हमारा शरीर भी) परमाणुओं के बने हैं तो चेतनता कहाँ से आती है? परमाणुओं से निर्मित हर चीज मशीन कहलाती है। तो क्या हम सब मशीन हैं ?

हमारा शरीर परमाणुओं का बना है और प्रकृति के सुनिश्चित नियमों के अनुसार विशुद्ध क्रिया प्रणाली पर कार्य करता है। हमें स्वतंत्र चिन्तन और इच्छा की सुविधा प्राप्त है, हमारा शरीर हमारे नियंत्रण में है। हम अगले क्षण क्या करने वाले हैं, इसका निर्णय हम ही करते हैं। मशीन के लिए भविष्य भूत से निर्धारित होता है (इसकी अपनी कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं) यदि किसी के पास इच्छा की स्वतंत्रता नहीं तो वह अपने कार्यों के लिए कैसे नैतिक दृष्टि से उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। यह एक गंभीर संकट है। जो कुछ हम करते हैं, उसके लिए हम सब ही जिम्मेदार हैं। हमारे चारों ओर जो हिंसा होती है, उसके लिए हम अपनी जिम्मेदारी से हटते हैं, इसीलिए सारे संसार में हिंसा ही हिंसा है। पृथ्वी पाँच अरब वर्ष पुरानी है, इस पर मानव कुछ लाख साल से है। अब तक कोई दस अरब व्यक्ति पृथ्वी पर रहे हैं। इनमें से एक तिहाई आज जीवित हैं। हिंसा के कारण अब तक 10 करोड़ व्यक्ति मरे हैं। इनमें तीन चौथाई बीसवीं शताब्दी में ही मरे हैं। यदि पूरे पैमाने पर परमाणु युद्ध हो तो करोड़ों व्यक्ति काल कवलित होंगे।

यह भी एक तथ्य है कि हिंसा विभाजित नहीं हो सकती। हम एक क्षेत्र में इसे दूर करके, दूसरे क्षेत्र में इसे बढ़ावा नहीं दे सकते। अपराध दर बढ़ती जा रही है, शस्त्रों पर खर्चा बढ़ता जा रहा है। इस समय संसार के देश दो खरब डॉलर या 15 खरब रुपये प्रति वर्ष शस्त्रास्त्र पर खर्च करते हैं।

मानव के विरुद्ध मानव की हिंसा का आरंभ कैसे हुआ? इसके मूल में क्या है? जब लाखों लोग भूख, रोग व अज्ञानता से पीड़ित हैं, क्यों हर जगह करोड़ों डॉलर शस्त्रास्त्रों पर खर्च किये जाते हैं? हिंसा मानव ने अपने गैर-मानव पुरखों से विरासत में पायी है या यह उसका अपना आविष्कार है, निश्चय यह मानव के मानसिक या सांस्कृतिक विकास का अंग है।

पशुओं में क्रूर हिंसा उस समय होती है जब उनका सामाजिक संगठन आदमी के हस्तक्षेप के कारण नष्ट होता है। जब ऐसे जानवर बंदी रहते हैं तो उनमें घातक हिंसा होती है। मानव समाज में भी इसके उदाहरण मिलते हैं। उखड़े समाज, उखड़े परिवारों और असम्बद्ध व्यक्तियों में हिंसा अधिक होती है। भारत के विभाजन के बाद हिंसा की लहर आयी थी।

इस प्रकार की हिंसा दूर करने का एक उपाय शिक्षा देना तथा निराशा दूर करना हो सकता है। पशुओं और आदमी में निराशा को हिंसा का एक समान कारण समझा जाता है।

प्रकृति ने मानव को एक ही जाति के रूप में पैदा किया। फिर यह जाति दलों (जिनको अब राष्ट्र कहते हैं) के रूप में विभक्त हैं। ये दल एक-दूसरे के प्रति इस प्रकार व्यवहार करते हैं, मानो वे भिन्न जाति के हों। यह एक विडम्बना ही कही जायेगी कि भाषा, कविता, देशभक्ति, धर्म तथा विचारधारा मानव की विशिष्ट उपलब्धियाँ होते हुए भी इन्हीं के कारण उसमें फूट डलती है। इतिहास में ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं, जहां मनोरंजन के लिए आदमी-आदमी की हत्या करता है। इस तरह कह सकते हैं आदमी असामान्य रूप से हिंसक है। यदि आज आदमी के गैर-मानव पुरखे जिंदा होते तो वे भी आज के मानव की बढ़ी हिंसक प्रवृत्ति को देखकर शर्म से सिर झुका लेते।

मानव की आज की सबसे विकट समस्या 'जनसंख्या का विस्फोट' का हल, एक हिंसक संसार के ढाँचे में नहीं मिल सकता। वस्तुतः मानव के भविष्य पर प्रभाव डालने वाली तीन बड़ी शक्तियां- जनसंख्या वृद्धि, बड़े स्तर पर शहरीकरण तथा परमाणु अस्त्र मानव को एक अहिंसक तथा तर्कसंगत संसार से विमुख कर रही हैं।

विज्ञान और टेक्नोलॉजी अब ऐसी अवस्था में पहुँच रहे हैं जहाँ कोई देश सैनिक दृष्टि से कमजोर देशों को नष्ट किये बिना अपने ही उद्यम से काफी संपत्ति जुटा सकता है। मानव के इतिहास में यह एक नयी और शुभ

स्थिति है। जापान और पश्चिम जर्मनी ने लड़ाई में सब कुछ गंवा कर अपना पुनर्निर्माण विज्ञान और टेक्नोलॉजी के द्वारा किया।

आजकल एक मजाक प्रचलित है - जनवरी में अमेरिका में किसी नये आविष्कार की घोषणा की जाती है। फरवरी में रूसी दावा करते हैं कि यह आविष्कार उन्होंने 20 साल पहले ही कर लिया था और मार्च में जापानी उस आविष्कार का निर्यात अमेरिका को करना आरंभ कर देते हैं। युद्ध से और हिंसा तथा घृणा बढ़ती है। हिंसा कम करने के लिए गरीबी, सामाजिक अन्याय तथा अनियमितताओं को दूर करना होगा। इसमें सबसे बड़ा योग शिक्षा का हो सकता है। एक महत्वपूर्ण कदम यह हो सकता है कि हर देश, अहिंसा के लिए एक स्थायी आयोग की नियुक्ति करे। इस आयोग का काम अहिंसक साधनों के अध्ययन, शोध तथा प्रयोग को बढ़ावा देना, सामाजिक बुराइयों को दूर करना तथा संघर्षो का निपटारा करना हो। एक ही सरकार में रक्षा मंत्रालय और अहिंसा मंत्रालय होना कोई विरोधाभास नहीं होगा। दोनों एक-दूसरे के पूरक होंगे।

मध्यम मार्ग

खलील जिब्रान

पर्वत की उपत्यका में एक मां और उसका इकलौता शिशु रहते थे। चिकित्सक अभी सिरहाने ही खड़ा था कि नन्हा शिशु ज्वर से मर गया। शोक संतप्त मां का इहलोक तमोग्रस्त हो गया। वह पुकार-पुकार कर चिकित्सक से इसका रहस्य पूछ रही थी- ''मुझे बताओ! किस अत्याचारी ने इस नन्हे हृदय की धड़कन को रोक दिया! किसने इन अधरों से निकलने वाले तुतले-मीठे शब्दों को शान्त कर दिया!''

चिकित्सक बोला, ''यह ज्वर था।''

मां ने पूछा- ''यह ज्वर क्या होता है ?''

चिकित्सक उलझन में पड़ गया। फिर कुछ संभल कर बोला,''ठीक तरह से तो नहीं बता सकता, पर होती है, यह साधारण सी तुच्छ वस्तु, किन्तु शरीर के भीतर प्रवेश करके यह विष फैला देती है। किन्तु कठिनाई यह है कि इसे हम देख नहीं सकते। मानव नेत्र इसे देख नहीं सकते।'' चिकित्सक चला गया। मां रोती रही और उसके शब्द दोहराती रही- ''पर होती है यह साधारण सी तुच्छ वस्तु, किन्तु हम इसे देख नहीं सकते। मानव-नेत्र इसे देख नहीं सकते।'' संध्या समय पादरी संवेदना प्रकट करने आया। मां अब भी चिल्ला रही थी। उसके अश्रु थम नहीं पा रहे थे। वह पादरी से पूछने लगी- ''मुझे बताओ ! मेरा एक ही बच्चा था, वही मुझ से क्यों छिन गया ? मेरा इकलौता शिशु ! मेरा लाल!''

पादरी बोला- ''बेटी ! शान्त हो। यह परमात्मा की इच्छा थी।''

''तो फिर परमात्मा क्या है ? वह कहां है? मैं उससे साक्षात्कार करूँगी। मैं उसे देखना चाहती हूँ ताकि उसके समक्ष अपना हृदय खोलकर रख दूं और अपने हृदय का खून उसके चरणों में निचोड़ दूं। मुझे बताओ कि परमात्मा कहां है ?'' इतना कहते-कहते वह फूट-फूटकर रोने लगी।

''बेटी ! परमात्मा बहुत बड़ा है, हम उसे देख नहीं सकते। मनुष्य की आँखें उसे देख नहीं सकतीं।'' पादरी ने सांत्वना दी।

मां फिर चिल्लायी, ''एक बहुत ही तुच्छ वस्तु ने एक बहुत ही बड़े की इच्छा से मेरे शिशु के प्राण ले लिये। तो फिर हम क्या हैं ?''

''हम कौन हैं ?'' पादरी बोला।

इतने में बच्चे की नानी ने बालक का कफन लिए भीतर प्रवेश किया। उसने पादरी के शब्द भी सुने थे और अपनी बेटी का रूदन भी। उसने कफन नीचे रख दिया और फिर अपनी बेटी का हाथ पकड़कर बोली- ''मेरी बेटी ! हम ही बहुत तुच्छ हैं और हम ही बहुत बड़े हैं और हम ही हैं इन दो छोरों के बीच एक अटल मध्यम मार्ग!''

आंदोलन समाचार

अणुव्रत अनुशास्ता के दक्षिण भारत में कई कार्यक्रम

आचार्य तुलसी की प्रेरणा पाकर कई लोग बने अणुव्रती

आचार्य श्री तुलसी 28 फरवरी तथा 1 मार्च को करीमनगर विराजे। यहां आपके कई सार्वजनिक कार्यक्रम हुए, जिनमें स्थानीय जनता ने बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्थानीय कॉलेज के कई लेक्चरर और प्रमुख लॉयर भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस दौरान आचार्य श्री की प्रेरणा पाकर 36 व्यक्ति अणुव्रती बने।

आचार्य श्री 2 मार्च को ग्यारह मील का विहार कर चोप्पा दण्डी पधारे। यहां जिला परिषद हाईस्कूल में आयोजित प्रवचन में अनेक अध्यापक और विद्यार्थी सम्मिलित थे। यहां 27 व्यक्तियों ने अणुव्रत के संकल्प लिये।

आचार्य श्री ने 3 मार्च को 'धर्मावरम', 4 को 'गुडेम' तथा 5 मार्च को 'हाजिमपुरम' में ग्रामीण बन्धुओं को अकर्मण्यता छोड़कर निष्ठा, ईमानदारी एवं नैतिकता की प्रेरणा दी। हाजीपुरम में ग्राम प्रधान सहित कई व्यक्तियों ने अणुव्रत स्वीकारे।

7 मार्च को आचार्य श्री ने बेलमपली औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों की वृहत् सभा में कहा कि यहां जो कार्य करते हैं वे श्रमिक कहलाते हैं और हम भी श्रमण हैं। दोनों में काफी समानता है। श्रमिक अपनी जीविकोपार्जन के लिए श्रम करता है और श्रमण जीविका के लिए नहीं, जीवन के लिए श्रम करता है।

कलिम्पोंग में अणुव्रत सप्ताह

साध्वीश्री कस्तूराजी के सान्निध्य में 28 फरवरी से पश्चिम बंगाल के कलिम्पोंग में अणुव्रत सप्ताह का व्यापक कार्यक्रम शुरू हुआ। कलिम्पोंग साढ़े चार हजार फीट की ऊँचाई पर पहाड़ों की चोटियों पर बसा हुआ शहर है। यहां का वायुमण्डल बहुत ही सुखद है। यहां साध्वीश्री कस्तूराजी के प्रवास में सार्वजनिक क्षेत्र के अनेक कार्यकर्ताओं, प्रिंसिपल, प्राध्यापक तथा राज्याधिकारी सम्पर्क में आये तथा साध्वीश्री से अणुव्रत की जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम में साध्वीश्री रतनश्री जी के भजन तथा परिचयात्मक वक्तव्य भी हुए।

लुधियाना में अणुव्रत कार्यक्रम

6 मार्च को मुनिश्री गणेशमलजी के सान्निध्य में राज्य कर्मचारी सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें इनकम टैक्स कमिश्नर तथा अधिकारियों के साथ कार्यालय के लगभग 150 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर मुनिश्री गणेशमलजी ने कहा कि सच्चा मानव सद्गुणों से बनता है। प्रामाणिकता व ईमानदारी को महत्व मिलने से ही जीवन में सुख व शान्ति मिल सकती है। मुनिश्री कन्हैयालाल जी के भी प्रवचन हुए। इनकम टैक्स कमिश्नर शिव प्रकाश नारायण ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए जालन्धर से प्रकाशित दैनिक पत्रों के अणुव्रत परिशिष्टों के व्यापक प्रभाव की चर्चा की।

7 मार्च को मुनि श्री के सान्निध्य में अणुव्रत महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसमें काफी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। 8 मार्च को 'मानव धर्म और अणुव्रत' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन रखा गया। सभा के मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल ने परिचय भाषण दिया।

विद्यार्थियों को चरित्रवान नागरिक बनाना मुख्य उद्देश्य

राजसमंद। अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के शिक्षा मंत्री श्री गणेशमल दूगड़ का मेवाड़ प्रवास के अन्तर्गत 13 मार्च को राजसमंद अणुव्रत शिक्षण विभाग के कार्यालय में भी आगमन हुआ। शिक्षण विभाग के संयोजक श्री देवेन्द्र कुमार हिरण ने आपका स्वागत करते हुए कार्यकर्ताओं व शिक्षण विभाग की प्रवृत्तियों से अवगत कराया। श्री दुगड़ ने नैतिकता के विकास के लिए अणुव्रत तथा उसके परीक्षा कार्यक्रम को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को चरित्रवान नागरिक बनाने का मुख्य उद्देश्य हमें अपने सामने रखना है। व्यक्तिगत सम्पर्क के लिए मौखिक परीक्षा को भी स्थान दिया जाना चाहिए।

अणुव्रत बाल संसद : एक विचार, एक आकार

■ डॉ. राकेश तैलंग ■

यह अनुभूत सत्य है कि बालकों में चरित्र निर्माण मात्र उपदेश नहीं बल्कि आचरण का विषय है। इसलिए ऐसी कोई भी बात जिसका सम्बन्ध चरित्र निर्माण से है, उसे बच्चों के बीच सिद्धांत प्रतिपादन या प्रवचन तक सीमित कर देना आधी–अधूरी शिक्षा होगी। इसके वास्तविक सुफल तभी प्राप्त हो सकेंगे जब हम विविध व्यावहारिक क्रियाओं व संप्रयोगों की तुला पर सिद्धांतों को बच्चों द्वारा आत्मसातीकरण का विषय बना सकें। ऐसे में बच्चों के बीच बच्चों के लिए काम करने वाले विद्यालयों का प्राथमिक कर्तव्य बनता है कि वे कक्षा और कक्षा के बाहर भी जाकर कुछ ऐसी क्रियाएं करें जो रोचक हों और सीखने का सीधा–सीधा उपक्रम भी।

एक शिक्षकीय अनुभव यह भी है कि सीखने और सिखाने की कक्षा–कक्षों की सीमा से बाहर जाकर की गयी संक्रियाओं का संसार बहुत व्यापक होता है। बच्चे को व्यावहारिक परिस्थितियों के बीच स्वयं को रखने से सीखने को बहुत कुछ मिलता है जो शायद बंद कमरों में मिलना मुश्किल होता है। सीखने के रोचक, दृश्यात्मक, परिस्थितिजन्य तथा अन्य तरीके से सीखना आसान ही नहीं, स्थायी हो जाता है।

'अणुविभा' ने इसे बहुत गहराई से अनुभव किया है और बच्चों के लिए व्यावहारिक शिक्षा के बेहतर प्रकल्प के रूप में आयोजित किये जा रहे बालोदय शिविरों में एक बहुचर्चित और बहु प्रशंसित 'बाल संसद' प्रवृत्ति के रूप में इसे शिविर के पाठ्यक्रम में सम्मिलित भी किया है। 'बाल संसद' को यों तो अणुव्रत विश्व भारती के राजसमंद स्थित मुख्यालय के प्रांगण में भारतीय संसद के एक आकर्षक मिनी मॉडल के रूप में दर्शाये भौतिक ढाँचे के रूप में देखा जा सकता है, जहां पहुँच कर ऐसा लगता है जैसे 'लोकतंत्र का मंदिर' अणुविभा प्रांगण में बाल रूप में लोकतंत्रीय मूल्यों के विराट स्वरूप के दर्शन करा रहा है।

अणुविभा में बाल संसद का मॉडल और इसका भौतिक ढाँचा स्वयं में अनेक मानवीय मूल्यों के शिक्षण–प्रशिक्षण को समाविष्ट किये हुए है। देश की सर्वोच्च विधायी संस्था, वहां देश निर्माण की जिम्मेदारी सम्भालने वाली संवैधानिक संस्थान के प्रतिनिधि कैसे होने चाहिए और उनके व्यवहार के मानक क्या होने चाहिए, यह सब भी बहुत बारीकी और कुशलता से बच्चों की इस संसद में सिखा दिया जाता है। स्वानुशासन, सामाजिक व्यवस्था का सम्मान, उत्तरदायित्व वहन, नेतृत्व, वैज्ञानिक सोच, सोच को जनहित में सामने लाना, अभिव्यक्ति के संतुलित अवसर, संवाद से समाधान, तार्किकता, अधिकार के साथ कर्तव्य बोध, बड़ों से सीख, सामान्य ज्ञान, भविष्य में कुशल वक्ता व सामंजस्यकर्ता बनने की तैयारी एवं जनप्रतिनिधि व सुनागरिक होने के

संस्कार–विकास की कक्षा बन जाती है बच्चों की यह संसद। लोकतांत्रिक मूल्यों की इस कक्षा में भविष्य के सामाजिक जन गढ़े जायें, इस अवधारणा को लेकर आयोजित होने वाले बच्चों के शिविरों में इन सभी का अभ्यास कराया जाता है।

यहां बच्चों को पक्ष व विपक्ष दो समूहों में विभाजित कर समसामयिक विषयों पर पूर्व तैयारी के साथ परस्पर अंतर्निर्भर चर्चा और बहस का अवसर दिया जाता है जो शांति, अहिंसा, नारी सम्मान, पर्यावरण संरक्षण, नैतिकता के ह्रास और राजनीति से जुड़े ज्वलंत विषयों पर सर्वमान्य हल लिये होते हैं। कभी–कभी तो प्रेक्षकों को भी ऐसा अनुभव होने लगता है कि जिन मुद्दों पर बड़े सर्व स्वीकार्यता नहीं बना पाते हैं, उन पर कैसे छोटे बच्चे राह निकाल लेते हैं? लोकतंत्रीय पद्धतियां बनाने की तैयारी, मूल्यों की स्थापना पर परस्पर समझ के लिए बच्चों को अभ्यास का अवसर देने की प्रक्रिया जितनी प्रयत्न सापेक्ष होती है, उतनी ही उसकी अंतिम प्रस्तुति आनंददायी और संतोषकारक।

निःसंदेह इस प्रवृत्ति के संचालन में स्कूल के बच्चों और शिक्षकों का सहयोग महत्वपूर्ण होता है। हमारी धारणाओं को जमीनी धरातल पर आकार देने वाले वे ही हैं। अणुविभा इन्हें प्लेटफॉर्म देने की सशक्त भूमिका में है। बड़ी संसद को बाल संसद का रूप देने में अणुविभा के दक्ष प्रशिक्षकों की भूमिका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। राजसमंद की धरती पर दिल्ली की संसद की छायाप्रति है यह बाल संसद। फर्क बस इतना है कि वहां तथ्यों पर बहस होती है और यहां सत्य पर। दूसरे शब्दों में, बाल संसद 'क्या हो रहा है', पर नहीं, 'क्या होना चाहिए' की प्रस्तुति पर अवस्थित है।

'अणुविभा' कक्षा 5 से 8 तक के बच्चों के लिए प्रजातंत्रीय मूल्यों के शिक्षण को 'बाल संसद' के प्लेटफॉर्म से संचालित करने हेतु संकल्पबद्ध है लेकिन यह संसद कक्ष सभी आयु वर्ग के लिए अवलोकनार्थ खुला है। शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से संसद की कार्य प्रणाली को जानने, समझने के विपुल अवसर हैं यहां। यह भी अपेक्षा है कि इस लघु संसद का अवलोकन करने के बाद बच्चे अपने विद्यालयों में भी स्थायी प्रवृत्ति के रूप में इसका संचालन करें। इस हेतु यहां उन विषयों से संबंधित पाठ्य सामग्री विकसित करने की भी योजना है जो बच्चों की इस प्रवृत्ति को 'अणुविभा' या विद्यालयों में संचालित किये जाने हेतु आवश्यक होगी। इस बालोपयोगी योजना के वृहत् और गहन संचालन हेतु सुधी पाठकों के बहुमूल्य सुझाव आमंत्रित हैं।

राजसमंद निवासी लेखक पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी तथा अणुविभा के 'स्कूल विद ए डिफरेंस' प्रकल्प के संयोजक हैं।

लघुकथा

टर्निंग पॉइंट

■ डॉ० कल्याण प्रसाद वर्मा ■

रोज की तरह मैं सुबह घूमने निकला। थोड़ी दूर चलने पर देखा कि सड़क किनारे दुकान के बाहर मेरे परिचित एक मित्र धुएं के छल्ले उड़ाने में मस्त थे। नजरें मिलीं। एक–दूसरे का हालचाल पूछा। उसी बीच मैंने देखा– सामने से दो गायें आ रही थीं। कैफे काउंटर से तुरंत मैंने ब्रेड का एक पैकेट लिया और गायों को ब्रेड खिला दी। इसके बाद मैंने आगे कदम बढ़ाये ही थे कि पता नहीं मित्र के मन में क्या विचार आया और उन्होंने अपनी अधजली सिगरेट को ईंट पर रगड़ते हुए बुझा कर फेंक दिया और अपने घर रवाना हो गये।

थोड़ी देर बाद मैं घूमकर वापस घर आया ही था कि मेरे मोबाइल की घंटी बजी। उधर से उन्हीं मित्र की आवाज आ रही थी, ''भाई, आपने आज पन्द्रह रुपये का ब्रेड खरीद कर मूक प्राणियों की जो सेवा की, उसने मुझे सोचने को मजबूर कर दिया कि एक वह आदमी जिसने पन्द्रह रुपये एक नेक काम में लगाये और एक मैं जो अब तक रोज सिगरेट का कश लगाने उस कैफे पर ऐसे जाता रहा, 'जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी पुनि जहाज पै आवै'। अब तक मैं नहीं समझ पा रहा था कि मैं जितना जहर पचा रहा था, उतना ही बाहर फैला भी रहा था। ...और बदले में मिलता क्या? शारीरिक क्षति और प्रदूषण।

वहीं आपने गायों की जो सेवा की, उससे आपको कम से कम आत्मिक तुष्टि तो मिली। भाई, आज मैं संकल्प लेता हूँ कि अब आगे से कभी धूम्रपान नहीं करूँगा, और आज से धूम्रपान पर खर्च होने वाली रकम को मैं भी ऐसे ही नेक कामों में लगाया करूँगा।''

यह सुन मैंने फोन पर ही उनके 'टर्निंग पॉइंट' के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। मुझे आत्म संतोष की अनुभूति हुई कि चलो, आज मेरे द्वारा की गयी प्राणी–सेवा सार्थक सिद्ध हुई।

जयपुर निवासी लेखक स्वतंत्र पत्रकार तथा डॉ. रांगेय राघव साहित्य के विशेष अध्येता हैं। साहित्य और पत्रकारिता पर इनकी दर्जन भर से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

The Anuvrat Movement : An Analytical Study

■ Prof. S. Gopalan ■

The Anuvrat Movement, started by the great Jain Saint Acharya Tulsi in Rajasthan in 1949, is a positive evidence of the vitality of the Jain religion as also of the presence of the life and world-affirming elements in it. It contains, therefore, the vows and beliefs traditional to Jainism but against the background of the corruption of man and society that had come about at the time the movement was thought of and launched and of the immediate necessity of rebuilding of character felt at the time. Acharya Tulsi believes that the aim of Anuvrat (from an empirical standpoint) is the development of the individual character.

He emphasizes the fact that the ills of society automatically get cured by means of the process of self-purification and self control. From this point of view he maintains that the views sometimes expressed that the function of religion is to control the society is incorrect. By developing the character of the individual, the level of social morality is made to go up but the latter is not the main aim of religion. Explaining his point of view regarding religion in general and Jainism in particular he writes: "A devotee at the time of initiation takes a holy vow that for the good of self he accepts five mahavrats as his discipline throughout life. The result of a vrat is freedom from bondage. Its incidental result is also the control of society, but this is not the main consequence of it". Accordingly, he thinks that to adopt religion for glorification here on earth or to practise it as a preparing ground for a "better future" in the next life are both wrong. The significance of religion for the individual soul is such that when practised for the sake of self-purification beneficial results in this world (in society) and in the next accrue automatically. Thus the insistence on the importance of the individual in religion is not born out of disregard for society or concern for a world to come but out of the conviction that when the individual is purified society gets purified as a result. Such a view of religion explains also the non sectarian nature of the Anuvrat Movement.

At the time the movement was initiated, Acharya Tulsi himself was considered to be an orthodox thinker and was regarded as the leader of a Jain sect. Since the name of the movement also was derived from the Jain tradition, it looked as if the Acharya was only trying to propagate a sectarian religion, though in a new way. The question of a different nomenclature which would not smack of a narrow derivation from a particular tradition - however rich the tradition itself may be - was considered but it was found that no other name would reflect the spirit of the movement. The Acharya was more keen on an action-oriented movement than on giving to the world

an imposing nomenclature of a philosophy of individual regeneration. The term anuvrat was considered to represent the conviction that small vows can effect big changes. The movement was however named Anuvrati Sangh, to start with, with the modification of it as Anuvrat Movement coming later on.

The base of the movement is ultimately to be traced to a nine-point programme, which were experimentally tried and accepted by twenty five thousand people. The nine-point programme was :

(1) not to think of committing suicide (2) not to use wine and other intoxicating drugs; (3) not to take meat and eggs; (4) not to indulge in theft; (5) not to gamble; (6) not to indulge in illicit and unnatural intercourse; (7) not to give any evidence to favour a false case and untruth: (8) not to adulterate things nor to sell imitation products as genuine and (9) not to be dishonestly inaccurate in weighing and measuring.

The Anuvrati Sangh incorporated in its programme eighty-four vows. The institution of the Sangh, being in its infant stage and being also motivated towards incorporating the actual experiences of the public for whose benefit it was intended, was flexible and open enough to accept some changes. Five years after its initiation the outline of the entire movement was changed and in response to the suggestion that the term Anuvrat Movement was better than Anuvrati Sangh the Acharya changed the name. The preference for the new name was expressed on the ground that it indicated a broader aim and outlook than the old one. The movement was not confined to India merely and the response it evoked in a leading American weekly is worth mentioning here. Under the caption "Atomic Bomb" it wrote: Like some men at various other places here is an Indian, lean, thin and short statured but with shining eyes who is very much worried at the present state of the world. He is Tulsi, aged 34, the preceptor of the Jain Terapanth which is a religious organisation having faith in nonviolence. Acharya Tulsi had founded the Anuvrati Sangh in 1949. When he has succeeded in making all Indians undertake the vows, his plan is also to convert the rest of the world so as to adopt the life of a 'vrati'!

The founder of the movement himself declares that the attitude of the movement towards other religions is one of goodwill and tolerance. He points out that since the basic principles emphasized in it are universal, followers of any religion can become its members and subscribe to its ideals. An objection to the description of the Anuvrat Movement as universal in character and scope has been anticipated and answered by the Acharya. The objection is that the term 'anuvrat' is taken from the Jain precepts which require the possession of right vision (samyagdarshan) of the anuvrati.

Since samyagdarshan refers to the comprehension of the Jain view of life, there is no scope for religious tolerance and universal outlook in an anuvrati. The Acharya's reply is that since a non-violent vision adequately describes the scope and philosophy of anuvrat, it is quite in keeping with the spirit of Jain thought and culture to make use of the term in a slightly different sense. In substance the Acharya's view is that the term is extended to engulf a similar ideology discernible in all religions by a deeper interpretation of the traditional concept.

Here it is worthwhile to consider two leading criticisms against the Jain view of ahimsa and aparigraha since it gives the necessary perspective in which the Anuvrat Movement can be understood. The Jain view that ultimately nonviolence should pervade every sphere of life and light up all the other virtues is construed as expecting far too much from its followers. Even a moment's thought will reveal that in any system of ethics it is most essential that some one principle is posited as central to all and considered a coordinating and regulative value. We have to add, however, that the primacy given to the principle of ahimsa is not born out of a necessity to have any one value as the 'coordinator'. The reason

lies much deeper and can be gathered by recapitulating the doctrine of continuity of consciousness that we find in Jainism.

In brief, the doctrine signifies that if the jivas are in various stages of evolution towards perfection (getting freed from the ajivas) no one jiva - at whatever higher stage it may be - has any right to interfere with the spiritual prospects of any other jiva at whatever lower stage of evolution it may be. In the Jain theory we find the attitude of reverence for life clearly comprehended and systematically treated.

We may then conclude without the fear of contradiction that the significance of the Anuvrat Movement as a cure for the evils of the present lies in its being the application of the essential Jain philosophy of the five vows to the changed time with suitable modifications, and also in its approach to the whole problem of peace and unity by suggesting that the immense potentialities that each individual has for promoting social unity can be actualised by developing inner harmony and regulated spiritual evolution.

Late Prof. S. Gopalan was associated with the Centre of Advanced Study in Philosophy, University of Madras.

संवेदन

बदली गाँवों की तस्वीर

महाराष्ट्र के पंचगनी के अखेगनी गाँव में पानी के स्रोत सूखते जा रहे थे। गाँववालों को पानी की भारी किल्लत से जूझना पड़ता था। इसे देखते हुए जयश्री राव ने वर्ष 1967 में 'ग्रामपानी' नामक एनजीओ की शुरुआत की। इसके जरिये इन्होंने दस वर्ष से अधिक समय तक काम किया। 1976 में ये एनजीओ का काम छोड़कर पति के साथ इंग्लैंड चली गयीं। जब वह 1982 में बेंगलुरु लौटीं, तो ट्रेडिंग कंपनी की शुरुआत की, लेकिन साल 2006 में एक छोटी–सी घटना ने जयश्री की जिंदगी को फिर से बदल दिया।

जयश्री कहती हैं, एक दिन मैंने सब्जी वाले से पाँच रुपये कम करने के लिए काफी मोल–भाव किया, लेकिन घर आकर मुझे बड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। फिर मैंने लोगों की सेवा करने का मन बनाया। साल 2007 में अपने नौ कर्मचारियों को 25 हजार रुपये में अपनी कंपनी बेच दी। अमेरिका से आये एक पानी विशेषज्ञ की मदद से पानी को संग्रहीत कर उसे साफ किया और पानी की समस्या दूर की। ग्रामीणों के स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए भी काम किया।

धीरे–धीरे इस योजना से 60 से अधिक गाँवों के 40 हजार लोगों को लाभ पहुँचाया। उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी कई योजनाएं शुरू कीं। इसके अलावा वह स्वच्छता, जैविक खेती तथा लोगों को शिक्षा से जोड़कर विकास के कार्य कर रही हैं। जयश्री का दावा है कि इस तरह की पहल से 200 गाँवों के तकरीबन 1.22 लाख लोगों को फायदा पहुँचा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गयी। तब से 26 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ायें, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

देवेन्द्र कुमार कर्णावट

आचार्य तुलसी की छाया बनकर रहे अणुव्रत के महारथी

देवेन्द्र भाई के नाम से प्रख्यात श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट ने समाज और राष्ट्र की सेवा में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने 1952 में राजसमन्द में गांधी सेवा सदन की स्थापना कर इसके माध्यम से बाल शिक्षा का नव अभियान प्रारंभ किया और गांधी सेवा सदन को अणुव्रत दर्शन की प्रथम प्रयोगशाला बनाया।

वीरभूमि मेवाड़ के राजसमंद के राजनगर ग्राम में 7 मई 1924 को श्रीमती गमेरी देवी तथा श्री हीरालाल कर्णावट के घर में जन्मे देवेन्द्र कुमार कर्णावट की प्राथमिक शिक्षा–दीक्षा वहीं हुई। मेवाड़ के लोकनायक श्री माणिक्यलाल वर्मा के निकट सम्पर्क में रहकर उन्होंने राजसमन्द क्षेत्र में मेवाड़ प्रजामंडल, नवयुवक मंडल, मेवाड़ विद्यार्थी संघ, भारत स्वावलम्बी शिक्षण कुटीर आदि संस्थाओं की स्थापना व संचालन किया। देवेन्द्र भाई 1942 में महात्मा गांधी के आह्वान पर भारत छोड़ो आन्दोलन में कूदे तथा उदयपुर जेल में बंदी रहे।

1944–45 में पहली बार आचार्य तुलसी से आपका सम्पर्क हुआ और प्रथम दर्शन में ही आप आचार्य श्री को समर्पित हो गये। पचास वर्षों तक आचार्य तुलसी के साथ छाया बनकर रहे और अणुव्रत आंदोलन के लिए धूनी रमायी। आचार्य तुलसी के साथ पदयात्राओं में रह व्यापक जनसम्पर्क किया एवं अणुव्रत आन्दोलन के प्रचार–प्रसार में स्वयं को झोंक दिया। आचार्य तुलसी ने देवेन्द्र भाई के संदर्भ में लिखा–"देवेन्द्र कुमार कर्णावट अणुव्रत के मंच पर एक उदीयमान कार्यकर्ता के रूप में उभरे। वे 'अणुव्रत' और हमारी नवीन विचारधाराओं के प्रति समर्पित रहे हैं। इनकी कहानी अपने आप में एक छोटी रामायण है।"

देवेन्द्र भाई अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभिक सक्रिय कार्यकर्ता तथा आदर्श साहित्य संघ तथा अ.भा. अणुव्रत समिति के संस्थापक सदस्य थे। जनपथ, अणुव्रत के संस्थापक संपादक रहे। अ.भा.अणुव्रत समिति के विभिन्न पदों पर रहे। आपको 'अणुव्रत प्रवक्ता', 'शासन सेवी', 'समाजभूषण', 'राजसमन्द रत्न' समेत अनेक अलंकरणों से विभूषित किया गया। 17 फरवरी 1994 को सुजानगढ़ में आप ग्यारहवें अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित हुए। 'अणुव्रत इतिहास प्रथम भाग', 'मैं साक्षी हूँ उस युग का' एवं 'युगवार्ता' पुस्तकों की रचना कर अणुव्रत के इतिहास को आपने जन–जन के समक्ष प्रस्तुत किया।

देवेन्द्र भाई 83 वर्ष की अवस्था में 7 सितम्बर 2007 को समाधिमरण को प्राप्त हुए। उनके निधन पर आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा था– "देवेन्द्र उन व्यक्तियों में था जिसने अणुव्रत के कार्य के लिए अपने चिन्तन और कर्मजा शक्ति का नियोजन किया। जब तक अणुव्रत का इतिहास है, देवेन्द्र उसके साथ आसन्न रूप से जुड़ा रहेगा, उसको अलग नहीं किया जा सकता। उसके कार्य को देखते हुए उसको 'अणुव्रत का महारथी' कहने में मुझे संकोच नहीं है।"

अगले अंक का विषय

परिचर्चा

कैसी हो जीवनशैली

उपभोगवादी जीवनशैली से त्रस्त मानव आज विकल्प की तलाश में है। विकसित देशों के नागरिक जिन्होंने भोगवाद को गहनता से जीया है, इसके विकृत परिणामों को सबसे अधिक भुगत रहे हैं। लेकिन, वैश्विक गाँव बनी इस दुनिया में अब कोई देश या कोई नागरिक उपभोगवाद के दुष्परिणामों से अछूता नहीं रह गया है। वर्तमान संदर्भों में जब विज्ञान और तकनीक ने जीवन के हर एक पक्ष को प्रभावित किया है, ऐसे समय में कैसी हो जीवनशैली जो नित नये बदलाव की साक्षी बनती हमारी जिंदगी में शांति और सुकून भर सके! भौतिक विकास की बुलंदी छू लेने के बाद भी इंसान के मन में फैले असंतोष और तनाव को समाहित कर जीवन में आंतरिक खुशी दे सके!

अणुव्रत दर्शन समाधान स्वरूप एक अहिंसक और संयमप्रधान जीवनशैली उपलब्ध कराता है जो उपभोगवादी जीवनशैली का एक बेहतर विकल्प है। अणुव्रत जीवनशैली जहां व्यक्ति की नैतिक चेतना का जागरण कर स्व–कल्याण का आधार तैयार करती है, वहीं समाज और विश्व के कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करती है। यह जीवनशैली इंसान को प्रकृति से जोड़ती है, मानव को मानव से जोड़ती है।

'कैसी हो जीवनशैली' इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार **अधिकतम 200 शब्दों** में भेजें हमें **15 अप्रैल** तक **9116634512** पर व्हाट्सएप के माध्यम से। चयनित विचार सद्यः प्रकाशित **अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक** में प्रकाशित किये जायेंगे। – सं

कहां जाकर रुकेगी अधिक अंक पाने की आपाधापी?

गत अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदुओं को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

अंकतालिका में विषय–मूल्यांकन दिखाया जाये

शिक्षा के साथ परीक्षा सदा से जुड़ी रही है। केवल शिक्षा देंगे तो देने वाले और लेने वाले दोनों की रुचि नहीं रहेगी। परीक्षा ही वह साधन और लक्ष्य है जिससे शिक्षा का रथ समुचित गति से चल रहा है। अब बात आती है शिक्षा पर परीक्षा का हावी हो जाना, इस बात से शिक्षा कैसे मुक्त हो? मेरे अध्ययन, अनुभव और चिंतन के आधार पर यह कहना चाहूँगा कि जब हम विषय अनुसार शिक्षण और परीक्षण करते हैं, तब हम सब विषयों की जोड़ क्यों लगाते हैं? उनका प्रतिशत क्यों निकालते हैं और उसके आधार पर श्रेणीकरण क्यों करते हैं? फिर कक्षा में रैंक देना, यही सब कुछ परीक्षा जैसे उचित साधन को बिगाड़ रहा है। ऐसे में अंकतालिका में विषय–मूल्यांकन दिखाया जाये और आगे की सारी प्रक्रिया बंद कर दी जाये। फिर पास या फेल, फर्स्ट और सेकंड जैसी बातें समाप्त हो जायेंगी।

–प्रकाश तातेड़, उदयपुर

सभी विद्यालयों में समान शिक्षा व शुल्क हो

वर्तमान में विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय बेशुमार खुल रहे हैं लेकिन जनसंख्या पर नियंत्रण एवं देश की एक शिक्षा नीति न होने के कारण सारे संसाधन कम पड़ते जा रहे हैं। इसी कारण भ्रष्टाचार फल– फूल रहा है। ऐसे में सभी के लिए एक शिक्षा नीति तथा जनसंख्या नीति आवश्यक है। साथ ही विद्यार्थियों को बेसिक शिक्षा से ही खेलकूद, योग, नैतिक शिक्षा, देशभक्ति की भावना आदि से जोड़ा जाये। सभी विद्यालयों में समान शिक्षा व शुल्क हो। भ्रष्टाचार पर पूर्णतः अंकुश लगाया जाये। जब तक हमारे रक्त में ईमानदारी और परिश्रम का रक्त नहीं होगा, हम शिक्षा व्यवस्था और परीक्षा प्रणाली में कुछ भी परिवर्तन कर लें, वह कभी सफल नहीं होगा।

–डॉ. राकेश चक्र, मुरादाबाद

नैसर्गिक प्रतिभा, दक्षता को तराशा जाये

पौराणिक काल में योग्यता को अंकों से नहीं आंका जाता था। व्यक्तिगत क्षमता और निरंतर प्रयास से कौशल का विकास करते हुए अपनी पहचान बनाना ही सर्वोपरि हुआ करता था। ऐतिहासिक काल में इसमें शिथिलता आयी और वर्तमान में अतिशय महत्वाकांक्षी होने के कारण तथा सीमित संसाधनों के बीच अवसरों को लपकने की होड़ ने छात्र–छात्राओं को अवसाद से भर दिया है। ऐसे में जरूरी है कि बाल्यकाल से ही विद्यार्थियों की नैसर्गिक प्रतिभा, दक्षता को तराशा जाये। सहज, सरल, जुझारूपन, महत्वाकांक्षा की भेंट न चढ़े, बल्कि सपने को साकार करने के लिए छात्रों को ठोस धरातल दे। तभी अंकों की आपाधापी खत्म हो सकेगी।

–रजनी शर्मा बस्तरिया, रायपुर

ज्ञान को हुनर और योग्यता से आंका जाये

मौजूदा शिक्षा प्रणाली में विषयों की अधिकता, विषय समूह तथा सिर्फ और सिर्फ उनका पुस्तकीय ज्ञान बच्चों को साक्षर और शिक्षित तो कर रहा है लेकिन व्यावहारिक, व्यावसायिक और तकनीकी ज्ञान के अभाव में उन्हें आत्मसंतुष्टि देने वाली नौकरी नहीं मिल पा रही। ऐसे में हमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की शिक्षा नीति को पुनः स्थापित करना होगा। इसके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यावहारिक, तकनीकी, औद्योगिक और चारित्रिक विकास करे। स्वरोजगार को बढ़ावा दे और पारिवारिक उद्योगों का विकास कर देश की आर्थिक व्यवस्था में भागीदार बने। ज्ञान को अंकों के बजाय हुनर और योग्यता से आंका जाये तो हमारी युवा पीढ़ी को मानसिक तनाव से मुक्ति मिल सकती है और वे राष्ट्र निर्माण में एक कुशल और होनहार कर्णधार की भूमिका निभा सकेंगे।

—सुशीला शर्मा, जयपुर

बहुमुखी विकास की शिक्षा दी जाये

आजकल प्रत्येक अभिभावक का यही प्रयास रहता है कि उसके बच्चे के सर्वोच्च अंक आयें। अधिकतम अंक लाने के लिए बच्चे को अतिरिक्त कक्षा और ट्यूशन पढ़ने के लिए विवश किया जाता है। इससे वह सामाजिक गतिविधियों में भाग नहीं ले पाता। उसका शारीरिक और मानसिक विकास रुक जाता है। आज की शिक्षा पद्धति भी ऐसी है शत प्रतिशत अंक मिल भी जाते हैं। मगर यह कहना तर्कसंगत नहीं है कि ऐसा छात्र वास्तव में सर्वश्रेष्ठ है। वस्तुतः बुद्धि विभिन्न कारकों का मिश्रण है जिसमें कई योग्यताएँ निहित हैं। बुद्धि को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए जो व्यक्तियों को समस्याओं का समाधान करने एवं सांस्कृतिक मूल्ययुक्त विभिन्न क्षेत्रों में नये ज्ञान की खोज में सहायता करती है। अस्तु, छात्रों को बहुमुखी विकास की शिक्षा दी जानी चाहिए।

—गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

विद्यार्थियों का हो निरंतर मूल्यांकन

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मात्र इस बात पर बल दिया जाता है कि पाठ को कंठस्थ करके परीक्षा में रटे– रटाये उत्तर दिये जायें। विद्यार्थियों को हर विषय के मूल सिद्धांतों का ज्ञान देना तो आवश्यक है, पर साथ ही उन्हें यह भी बताना होगा कि वास्तविक जीवन में इनका उपयोग किस प्रकार किया जाये। प्रत्येक बालक की अपनी अलग क्षमता होती है। इसलिए प्रत्येक बालक के लिए उसकी रुचि और क्षमता के अनुरूप एक सही दिशा निर्धारित की जाये। इसके साथ ही विद्यार्थियों का निरंतर मूल्यांकन होना चाहिए, न कि वर्ष में एक या दो बार। अभिभावकों को समझना होगा कि औपचारिक शिक्षा के साथ–साथ अनौपचारिक शिक्षा का भी विशेष महत्व है जिससे बालक अपनी संस्कृति और संस्कारों के विषय में अवगत हों और उन्हें अपनाते हुए राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिक बन सकें।

—सुकीर्ति भटनागर, पटियाला

व्यक्तित्व के हर पक्ष का हो मूल्यांकन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि एक अच्छी शिक्षा पद्धति वह है जो विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करे। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने भी कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के साथ–साथ शारीरिक, मानसिक, भौतिक तथा भावनात्मक विकास भी होना चाहिए। लिखित परीक्षा के साथ ही विद्यार्थी के व्यक्तित्व के हर पक्ष का मूल्यांकन हो। जैसे खेल, स्वास्थ्य, सामाजिक सेवा इत्यादि। तभी अधिकतम अंक प्राप्त करने की होड़ पर ब्रेक लगेगी।

—उषा जैन, टोहाना

लोगों को शिक्षा का असली उद्देश्य

मौजूदा दौर में समाजोपयोगी शिक्षा का लोप होता जा रहा है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है, जहां नैतिक, सामाजिक और मानवीय शिक्षा का स्थान ही नहीं है। बच्चे अपने आप से, शिक्षक से, अभिभावक से दूर होते जा रहे हैं। इस स्थिति में सबसे बड़ी चुनौती उन्हें अपने पास खींचना, नैतिकता, व्यावहारिकता और सामाजिकता की शिक्षा देना है। उन्हें दूरियों को निकटता में बदलने, अपने आपको समझने की सीख देने पर ध्यान देना होगा। अपने देश की संस्कृति, संस्कार, कला, साहित्य, इतिहास को घर–घर पहुँचाना होगा। लोगों को शिक्षा के असली स्वरूप और उद्देश्य के बारे में बताना होगा।

—बिनोद कुमार तिवारी, देवघर

शिक्षा पैदा करे व्यावसायिक योग्यता

आजकल अभिभावक भी अपने बच्चों पर अच्छे अंकों के लिए दबाव बनाने लगते हैं। इसके लिए वे कोचिंग संस्थानों का सहारा लेते हैं। ऐसे में बच्चों को कहीं घूमने और खेलने का समय नहीं मिलता। वे मानसिक तथा शारीरिक व्याधियों के शिकार होते जा रहे हैं। वहीं, बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए क्योंकि अपनी मातृभाषा में बच्चा जितना ग्रहण कर पाता है, उतना अन्य किसी भाषा में नहीं। इसके अतिरिक्त उन्हें प्रारम्भ से वही विषय पढ़ाये जायें जिनमें उनकी रुचि हो। शिक्षा ऐसी हो जो उनमें व्यावसायिक योग्यता पैदा करे। वे नौकरी पाने में अपना श्रम और समय नष्ट न कर स्वयं रोजगार का सृजन कर अपना और देश का मान बढ़ायें।

—सुधा आदेश, लखनऊ

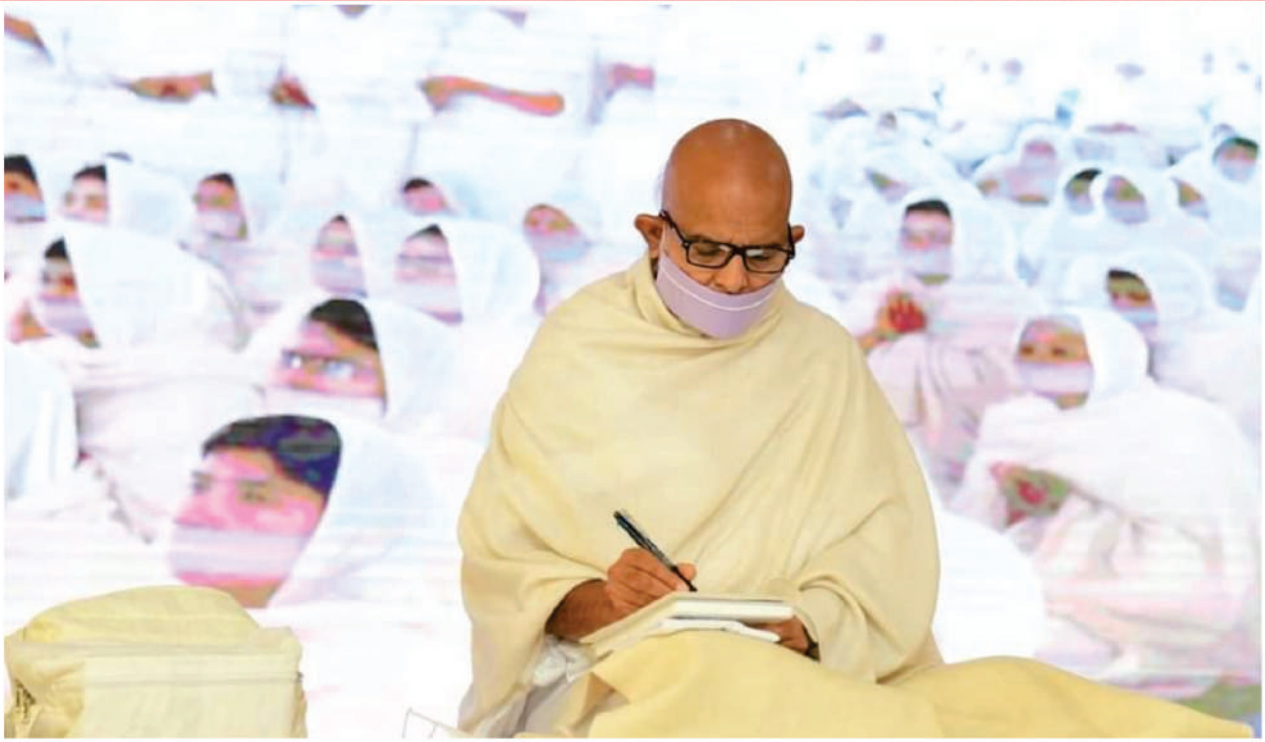

साध्वीप्रमुखा के अमृत महोत्सव का ऐतिहासिक आयोजन

अणुव्रत अनुशास्ता ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी को प्रदान किया 'शासन माता' अलंकरण

मातृहृदया साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा जी के चयन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर 30 जनवरी को लाडनूं में अमृत महोत्सव का आयोजन किया गया। तेरापंथ के 250 वर्षों से अधिक के इतिहास में यह प्रथम अवसर था जब किसी साध्वी प्रमुखा के चयन को 50 वर्ष संपन्न हुए हैं। उम्र के आठवें दशक में 75 वर्षों से अधिक संयम पर्याय और तीन आचार्यों के काल से प्रमुखा पद पर प्रतिष्ठित होने जैसी अनेक विशेषताएं महाश्रमणी कनकप्रभा जी को असाधारण साध्वी प्रमुखा बनाती हैं।

सुधर्मा सभा में आयोजित अभिवंदना कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी के पाठ द्वारा साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा जी के प्रति अपनी अभिवंदना व्यक्त की। साथ ही उन्हें 'शासन माता' का अलंकरण प्रदान किया। वहीं साध्वीप्रमुखा श्री ने सकल धर्मसंघ की ओर से 'युगप्रधान' अलंकरण आचार्य श्री को स्वीकार करने का निवेदन किया।

पूज्य प्रवर ने महती कृपा कर युगप्रधान अलंकरण स्वीकार किया। साधु–साध्वियों ने अभिनंदन पत्र द्वारा प्रमुखाजी का अभिनंदन किया, वहीं गुरुदेव के इंगित से मुख्य नियोजिका एवं साध्वीवर्या जी ने साधु–साध्वियों की ओर से प्रमुखाजी को पछेवड़ी ओढ़ायी। समणीवृंद की ओर से बहुश्रुत परिषद की सदस्या साध्वी कनकश्री जी ने प्रमुखाजी को एलवान धारण कराया।

दुर्लभ इतिहास का सृजन करते हुए अपने उद्बोधन में आचार्य प्रवर ने पट्ट से नीचे पधार कर खड़े–खड़े आशीर्वचन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी अपने साध्वीप्रमुखा कार्यकाल के 50 वर्ष पूर्ण कर अब शताब्दी के उत्तरार्ध में गतिमान हैं। दक्षिण भारत की यात्रा करने वाली आप प्रथम साध्वीप्रमुखा हैं। कई दृष्टियों से आपने आचार्य तुलसी का मानो अनुकरण किया है। आप में वैदुष्य भी है। आपका जीवन परिश्रम के सौरभ से सुरभित है। जैसे सूर्योदय प्रकाश फैलाता है, उसी तरह आपका और अभ्युदय हो। आपकी साधना की तेजस्विता और बढ़ती रहे। आप सदा निरामयता, आध्यात्मिकता एवं चित्तसमाधि के साथ धर्मसंघ की सेवा करती रहें। मंगल कामना।

प्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कविता के माध्यम से अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा– आज यह जो कुछ भी हो रहा है, गुरुदेव श्री तुलसी, गुरुदेव श्री महाप्रज्ञ, आचार्य श्री महाश्रमण जी का हो रहा है। गुरुदेव तो करुणा के सागर हैं। यह 50 वर्षों की यात्रा मैंने गुरुओं के ही बलबूते की है। मुझे आज पचास वर्ष पूर्व गंगाशहर की स्मृति हो रही है। मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि मुझे इतना बड़ा दायित्व मिलेगा। आचार्य तुलसी एक महान गुरु थे। उन्होंने व्यवस्था, प्रशासन हर चीज का मुझे प्रशिक्षण दिया। लोग कार्य करते हैं तो उन्हें गौरव होता है, पर मेरा मानना है कि मैं कुछ नहीं करती, सब गुरु ही

करते हैं। आज के दिन मेरी यही कामना है कि गुरुदेव की कृपा यूं ही बनी रहे और मैं अपनी साधना में आगे बढ़ती रहूं। नयी ऊर्जा के साथ धर्मसंघ की सेवा करती रहूं।

अमृत महोत्सव के अनुपम दृश्य दर्शकों के साथ–साथ वर्चुअल रूप से जुड़े हजारों श्रद्धालुओं के आनंद को प्रवर्धमान कर रहे थे। जैन विश्व भारती द्वारा अभिनंदन ग्रंथ 'अमृतम्' पूज्य चरणों में उपहृत किया गया। आचार्यप्रवर ने स्वयं पट्ट से पधार कर प्रमुखा जी को यह ग्रंथ प्रदान किया। जैविभा अध्यक्ष श्री मनोज लुणिया, मुख्य ट्रस्टी श्री अमरचंद लुंकड़ सहित अमृतम् से जुड़े लोगों ने ग्रंथ का विमोचन किया। राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री श्री यूनुस खान सहित अनेक जनप्रतिनिधियों की इस अवसर पर गरिमामयी उपस्थिति रही। मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार जी, मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्ध यशा जी ने श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

मुनिवृंद एवं साध्वीवृंद, समणीवृंद, मुमुक्षु बहनों ने गीतों की प्रस्तुति दी। मुनिश्री विमल कुमार, मुनिश्री कमल कुमार, मुनिश्री उदित कुमार, मुनिश्री मोहजीत कुमार, मुनिश्री कुमारश्रमण, मुनिश्री विजय कुमार, साध्वीश्री कल्पलता, साध्वीश्री प्रज्ञावती, साध्वीश्री जिनप्रभा, समणी नियोजिका अमल प्रज्ञा आदि ने अभिवंदना की।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा अध्यक्ष श्री सुरेश गोयल, कल्याण परिषद संयोजक श्री के. सी. जैन, विकास परिषद से श्री मांगीलाल सेठिया, जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बच्छराज दुगड़, श्री अजय चौपड़ा आदि भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

लाडनूं एवं धर्मसंघ की अनेक संस्थाओं ने भी प्रमुखाश्री की अभिवंदना की। नगरपालिका सदस्यों ने अभिनंदन पत्र भेंट किया। इस अवसर पर 'सफर अर्धसदी का' सहित अनेक कृतियों का भी विमोचन हुआ।

अणुव्रत समिति, लाडनूं द्वारा अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संचय जैन के नेतृत्व में 5100 अणुव्रत संकल्प पत्र **साध्वीप्रमुखाश्री जी** को भेंट किये गये।

इस अवसर पर अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन, उपाध्यक्ष श्री प्रताप दूगड़, महामंत्री श्री भीखम सुराणा, प्रचार–प्रसार मंत्री श्री धर्मेन्द्र डाकलिया व अन्य पदाधिकारियों सहित समिति के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में अणुव्रत काव्यधारा के बैनर का विमोचन

सुजानगढ़। अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में 74वें अणुव्रत स्थापना दिवस पर होने वाले महत्वपूर्ण आयोजन 'अणुव्रत काव्यधारा' के बैनर का विमोचन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के पावन सान्निध्य में 1 फरवरी को तेरापंथ भवन सभागार में हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि अणुव्रत समाज के नैतिक उत्थान का उपक्रम है।

अणुविभा के उपाध्यक्ष श्री प्रताप सिंह दुगड़ ने बताया कि काव्यधारा का आयोजन ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों प्रारूपों में होगा। महामंत्री श्री भीकमचंद सुराणा ने बताया कि इसका उद्देश्य देशभर में फैली सैकड़ों समितियों के माध्यम से अणुव्रत के सिद्धांतों को कविताओं द्वारा जन–जन तक पहुँचाना एवं साहित्य जगत को अणुव्रत दर्शन के साथ जोड़ना है। काव्यधारा की राष्ट्रीय संयोजक डॉ. कुसुम लुनिया ने बताया कि राष्ट्रीय, प्रादेशिक व आंचलिक स्तर पर अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन अणुविभा के फेसबुक पेज पर भी लाइव होगा। इस अवसर पर विभिन्न अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधिगण एवं अणुव्रत कार्यकर्ता उपस्थित थे।

राष्ट्रीय संयोजक डॉ. कुसुम लुनिया की रिपोर्ट

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशन में 74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में देशभर में स्थित अणुव्रत समितियों ने **'अणुव्रत काव्यधारा'** के रूप में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों को अणुविभा के फेसबुक पेज पर भी लाइव किया गया जिससे बड़ी संख्या में लोगों ने इनका आनंद लिया।

जोधपुर अणुव्रत समिति की ओर से 13 फरवरी को शाम 7 बजे अणुव्रत काव्यधारा का ऑनलाइन आयोजन हुआ। समिति की अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने बताया कि इसमें डॉ. नितेश व्यास, डॉ. पद्मजा शर्मा, डॉ. सूरज माहेश्वरी, स्वाति जी जैसलमेरिया, दशरथ जी सोलंकी, अनिल जी अनवर, श्रीकांत जी गुप्ता, दीपा जी परिहार, उषारानी जी पुंगलिया, श्री विजय सिंह नाहटा, ऋषा जी भंसाली, डॉ. गीतांजलि व्यास, वीणा जी अचतानी, लता जी राठी, पूजा जी धूत, नरेश चावला आदि ने प्रभावी प्रस्तुति दी। करीब ढाई घंटे तक चली काव्य गोष्ठी का संचालन मोटिवेशनल स्पीकर श्री श्रीकांत गुप्ता ने बड़े रोचक तरीके से किया। आभार ज्ञापन श्रीमती मोनिका चोरड़िया ने किया।

दिल्ली अणुव्रत समिति की ओर से 14 फरवरी को शाम 7 बजे से ओसवाल सामुदायिक भवन विवेक विहार में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया गया। मंत्री श्री धनपत नाहटा ने शासन श्री साध्वीश्री संघमित्रा जी द्वारा प्रेषित काव्यपाठ का संगान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अंतरराष्ट्रीय कवि श्री गजेंद्र सोलंकी ने अणुव्रत की महिमा को इस प्रकार सुनाया–

आचार्य प्रवर तुलसी जी ने, जिसको सींचा औ सँवारा है
अणुव्रत की अनुपम धारा है
आचार्य वर श्री महाप्रज्ञ, श्री महाश्रमण उच्चारा है
अणुव्रत की अनुपम धारा है...

इनके अलावा श्री राजेश जैन चेतन, डॉ. कीर्ति काले, श्री चरणजीत चरण, श्री रसिक गुप्ता व श्री नरेश शांडिल्य ने काव्य पाठ किया। सभी कवियों का सम्मान अणुव्रत आचार संहिता का मोमेंटो, अणुव्रत पत्रिका व अणुव्रत डायरी भेंट कर किया गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल पटावरी ने आयोजन में उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया।

इस अवसर पर अणुव्रत काव्यधारा की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया, अणुविभा के ट्रस्टी श्री तेजकरण सुराणा, अणुव्रत न्यास के मुख्य प्रभारी श्री शांति कुमार जैन, अणुव्रत काव्यधारा की संयोजकीय टीम सदस्य एवं ओसवाल समाज के अध्यक्ष श्री बाबूलाल दुगड़, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष श्री धनपत लूनिया, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंघी, पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित श्री जितेंद्र सिंह शंटी, श्री जितेंद्र महाजन विधायक रोहताश नगर, सुश्री हीनू महाजन, प्रवक्ता भाजपा महिला मोर्चा, दिल्ली प्रदेश एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे।

सरदारशहर अणुव्रत समिति की ओर से 15 फरवरी को दोपहर 1:30 बजे से अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन सीनियर सैकंडरी स्कूल नेलूसर में किया गया। अध्यक्ष श्री पृथ्वीसिंह बीदावत ने बताया कि इसमें कवि डॉ. मातुसिंह राठौड़, श्री विश्वनाथ भाटी तथा कवयित्री कोमल जी लुहार और बबीता जी चौधरी ने काव्यपाठ किया।

16 फरवरी को सुबह 11 बजे **नाथद्वारा** अणुव्रत समिति ने अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया। न्यू राईज स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम में मुनिश्री प्रकाशकुमार जी एवं मुनिश्री सिद्धप्रज्ञ जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मुनिश्री ने स्कूली बच्चों को अणुव्रत व जीवन विज्ञान के माध्यम से जीवन को संवारने की प्रेरणा दी। अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित रहे। संगोष्ठी का संचालन प्रसिद्ध कवि श्री गिरीश विद्रोही ने किया। सर्वश्री प्रमोद सनाढ्य, भगवानलाल बंशीवाल, अणुव्रत समिति अध्यक्ष साबिर शुक्रिया ने अणुव्रत आधारित विविध विषयों पर कविता पाठ किया। अणुविभा कार्यसमिति सदस्य श्री कमलेश धाकड़ ने विचार व्यक्त किये।

आमेट अणुव्रत समिति ने 16 फरवरी को शाम 7:15 बजे से तेरापंथ भवन में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया। इसमें समिति अध्यक्ष श्री दलीचंद कच्छारा के साथ ही श्री विजय सिंह राव, श्री प्रकाश सिंह बडोला, श्री राजा बाबू, प्राची जी कोठारी, अंजलि जी बाफना, श्री मनोहर पीतलिया, श्री महेन्द्र बोहरा, श्री कुंदनमल कुंदन, श्री नरेंद्र श्रीश्रीमाल ने काव्य रचनाओं की प्रस्तुति दी। काव्यधारा का संयोजन रेणुजी छाजेड़ ने किया। समिति के मंत्री श्री मोतीलाल डांगी ने आभार ज्ञापित किया।

चाड़वास अणुव्रत समिति ने 18 फरवरी को शाम 7:45 बजे अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया। समिति के मंत्री श्री जगदीश ज्यानी ने बताया कि इसमें निशा जी आर्य, श्री मनोज रतनधरा, श्री हरिराम गोपालपुरा, श्री अरविन्द विश्वेन्द्रा, श्री संजय सरस ने काव्यपाठ किया।

सुजानगढ़ अणुव्रत समिति की ओर से 19 फरवरी को दोपहर 12 बजे से अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

मुनिश्री सुविधि कुमार एवं मुनिश्री चैतन्य कुमार के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. कुसुम लुनिया थीं। कार्यक्रम में कवि सर्वश्री हरिराम गोपालपुरा, राजेश दान चारण, निशा आर्य, शर्मिला सोनी, अरविन्द विश्वेंद्रा, अभिलाषा स्वामी के साथ ही प्रीति धाड़ेवाल, सरोज बैद, निहारिका सिंह राजपूत, दीक्षा स्वामी, रमा शेखावत, सिमरन गौरी, डिंपल तोषनीवाल, ममता दूगड़, यशस्वी बागरेचा, नीलम कोठारी, रक्षिता गोलछा ने भी काव्य पाठ किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्रीमती निलोफर गौरी, सभापति नगर परिषद् सुजानगढ़, श्री अमित जी मरोठिया, उप सभापति नगर परिषद्, श्रीमती रेखा राखेचा अध्यक्ष तेरापंथ महिला मण्डल, श्री निर्मल जी कोठारी, डॉ. धनपत लुणिया थे। अणुव्रत काव्यधारा का संयोजन श्री अरविंद विश्वेंद्रा ने किया। इससे पहले अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री महेश तंवर ने सभी अतिथियों एवं कवियों का प्रतीक चिह्न, शॉल, अणुव्रत डायरी एवं माला पहना कर स्वागत किया।

20 फरवरी का दिन अणुव्रत काव्यधारा के नाम रहा। इस दिन **राजसमंद, धुबड़ी, कटक, बेंगलुरु, मैसूर, चिकमंगलूर, हासन, नंजनगुड़, मांड्या, हिरियूर, चित्रदुर्गा, बालोतरा तथा हैदराबाद** अणुव्रत समिति ने अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया।

अणुविभा के तत्वावधान में 74वें अणुव्रत स्थापना दिवस का मुख्य कार्यक्रम 'अणुव्रत काव्यधारा' के रूप में **1 मार्च, 2022 को मुम्बई में आयोजित किया जायेगा। विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में।**

अणुव्रत सम्पर्क यात्रा

पंजाब

अणुव्रत समितियों से संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम है सम्पर्क यात्रा। इससे समितियों के पदाधिकारियों तथा सदस्यों से मिलकर वहां चल रही गतिविधियों की विस्तृत सूचना मिलने के साथ ही आपसी विचार–विमर्श से अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने की दिशा तय करने में मदद मिलती है। वर्ष 2021 में राजस्थान, तमिलनाडु, कर्नाटक, राजस्थान, असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र और गुजरात की अणुव्रत समितियों के साथ संवाद का सुयोग बना। वहीं, वर्ष 2022 की शुरुआत पंजाब की सम्पर्क यात्रा से हुई। इस दौरान लुधियाना, चंडीगढ़, मंडी गोबिंदगढ़, जगराओं, सुनाम, मानसा तथा भटिंडा में अणुव्रत कार्यकर्ताओं से सार्थक वार्तालाप के साथ ही अणुव्रत आंदोलन को गति देने के संबंध में सार्थक चर्चा हुई।

अणुविभा अध्यक्ष
श्री संचय जैन की रिपोर्ट

पंजाब में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान को गति प्रदान करने के उद्देश्य से अणुव्रत कार्यकर्ताओं की पंजाब के विभिन्न कस्बों–शहरों की तीन दिन तक चली यात्रा गहरा संतोष देने वाली रही। पंजाब में अणुव्रत का संगठन नहीं के बराबर था। यहां की एकमात्र अणुव्रत समिति **मंडी गोबिंदगढ़** भी कई वर्षों से सक्रिय नहीं थी। ऐसी स्थिति में यहां चुनाव शुद्धि अभियान की संभावना भी सीमित थी। आशा की किरणों की तलाश में हमने एक जूम मीटिंग कॉल की जिसमें **संगठन मंत्री भाई संजय जैन** के प्रयास से पंजाब के कुछ प्रमुख गणमान्यजन शामिल हुए। अणुविभा से मेरे साथ ही **वरिष्ठ उपाध्यक्ष और मध्यांचल प्रभारी भाई अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष और चुनाव शुद्धि अभियान प्रभारी श्री राजेश सुराणा, महामंत्री श्री भीखम सुराणा, संगठन मंत्री मध्यांचल प्रभारी श्री संजय जैन और उत्तर प्रदेश प्रभारी श्री टीकमचंद सेठिया** शामिल हुए। चर्चा बड़ी सार्थक और सकारात्मक रही।

पंजाब सभा के चेयरमैन **श्री सुरेन्द्र मित्तल**, अध्यक्ष **श्री केवलचन्द जैन**, महासभा के पंजाब प्रभारी **श्री कुलदीप सुराणा** सहित सभी ने तन–मन और धन से सहयोग का भरोसा दिलाया तो लगा मानो किरणों की तलाश में स्वयं सूरज हस्तगत हो रहा है। सभी का व्हाट्सएप ग्रुप बना, सबने अपने पते और ईमेल आईडी साझा किये और दूसरे ही दिन दिल्ली कार्यालय से प्रचार सामग्री कूरियर से भेज दी गयी। देखते ही देखते होर्डिंग–पोस्टर लगाने और पैंफलेट बाँटने का काम शुरू हो गया।

इसी बीच **संजय जी** और **कुलदीप जी** की लुधियाना में मुलाकात हुई और एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करने की योजना बनी। प्रस्ताव आया कि अणुविभा के केंद्रीय

प्रेस कॉन्फ्रेंस

पदाधिकारी संबोधित करें तो इसे अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। मैं उन दिनों लाडनूं था और वहां से लुधियाना पहुँचने का सड़क रास्ते के अलावा कोई और तरीका नहीं था। लगभग 500 किलोमीटर की कार यात्रा कमरदर्द वाले व्यक्ति के लिए खतरे की घंटी से कम नहीं थी लेकिन अणुव्रत अनुशास्ता का आशीर्वाद साथ हो तो खतरे संभावनाओं में तब्दील हो जाते हैं। फतेहाबाद से संजय जी को साथ ले कर हम 31 जनवरी को लुधियाना पहुँच गये। उधर सूरत से ट्रेन का लम्बा सफर तय कर राजेश जी सुराणा भी लुधियाना पहुँच गये, लक्ष्य के प्रति उनके समर्पण का यह अच्छा उदाहरण था। हम सीधे प्रेस कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए जहां लगभग 20 पत्रकारों के अतिरिक्त समाज के गणमान्यजन भी उपस्थित थे। अणुव्रत आंदोलन और चुनाव शुद्धि अभियान के बारे में मैंने और राजेश जी ने जानकारी दी। पत्रकारों में लीक से हट कर शुचिता के इस अभियान के प्रति काफी जिज्ञासाएं थीं। हमने उनका तसल्ली से समाधान दिया। कुछ चैनल्स ने वीडियो बाइट्स भी ली। दूसरे दिन अनेक अखबारों में अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान की खबर को महत्त्व मिला, कुछ ने तो अभियान के पोस्टर को ही अपने मुख्य पृष्ठ पर छापा।

एक सफल प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद जब स्थानीय श्रावक समाज के साथ बैठे तो बड़े ही उत्साह के माहौल में **लुधियाना अणुव्रत समिति** का गठन भी हो गया जिसका अध्यक्षीय दायित्व ग्रहण किया अणुव्रत के अनुभवी कार्यकर्ता **श्री राकेश गर्ग** ने। लुधियाना जैसे बड़े शहर में अब अणुव्रत कार्यक्रमों को गति मिलेगी, यह एक बड़ी उपलब्धि रही। उपस्थित सभी वरिष्ठजनों ने राकेश जी गर्ग और राजकुमार जी बुच्चा के प्रति भरपूर

विश्वास व्यक्त किया और पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया। अणुविभा मीडिया टीम के सक्रिय साथी भाई जयंत सेठिया से मुलाकात सुखद रही। ऐसे युवाओं का जुड़ाव अणुव्रत आंदोलन की ताकत बन रही है।

उसके बाद शुरू हुआ **लुधियाना** के राजनैतिक और प्रशासनिक दिग्गजों से मिलने का क्रम। जैसे पानी में उतरने से गहराई का एहसास होता चला जाता है, वैसे ही मैदान में उतरने से हमें भी चुनाव शुद्धि अभियान की महत्ता का आभास हो रहा था। सम्पर्क अभियान में हम कांग्रेस, अकाली दल, भाजपा सहित कमिश्नर से मिले। सभी ने इस प्रयास की खुलकर प्रशंसा की और कुछ प्रत्याशियों ने कैमरे के सामने कहा कि वे नशा नहीं बांटेंगे और कोई उन पर भ्रष्टाचार सिद्ध करे तो वे राजनीति छोड़ देंगे। डॉक्टर श्री विश्व मोहन से मुलाकात विशेष रही। आप बहुत ही प्रसिद्ध और व्यस्ततम डॉक्टर हैं। आपने आधा घंटा हमसे संवाद किया और अनेक उच्च प्रशासनिक अधिकारियों को फोन कर के अणुव्रत के इस अभियान में सहयोग देने को कहा।

कुलदीप जी के व्यापक संपर्क विस्मित करने वाले हैं। कुलदीप जी ने लुधियाना की जिम्मेदारी को तो बखूबी निभाया ही, हमारा आग्रह स्वीकार कर न केवल चंडीगढ़ साथ आये वरन तीनों दिन बराबर हमारे साथ रहे और आत्मीयता से भरपूर स्नेह सहयोग दिया।

चंडीगढ़ के अणुव्रत भवन में **मुनिश्री विनयकुमार जी आलोक** के दर्शन करने का सौभाग्य मिला और आपके सान्निध्य में ही चंडीगढ़ अणुव्रत समिति के अध्यक्ष **श्री मनोज जैन** व अन्य साथियों के साथ सार्थक चर्चा संगोष्ठी भी हो गयी।

मुनिश्री के मार्गदर्शन में यहां अनेक कार्यक्रमों का विशिष्ट महानुभावों के आतिथ्य में आयोजन समय–समय पर होता रहता है। अणुव्रत समिति की अनेक जिज्ञासाओं का समाधान किया गया और भविष्य में कैसे केंद्रीय संस्था के साथ तालमेल स्थापित कर के बेहतर काम किया जाये, इसका मार्ग प्रशस्त हुआ। अध्यक्ष श्री मनोज जैन, युवा प्रोफेसर श्री सलिल कुमार सहित उपस्थित कार्यकर्ताओं ने पूरी सक्रियता से अणुव्रत का काम आगे बढ़ाने के प्रति आश्वस्त किया।

समय का बेहतर नियोजन करते हुए मैं और संजय जी जैन समिति की बैठक में शामिल रहे और राजेश जी सुराणा और कुलदीप जी सुराणा पंजाब के मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री एस करुणाराजू से मिलने चले गये। उनके साथ एक घंटे लंबी मुलाकात बड़ी सार्थक रही और उन्होंने अणुव्रत पत्रिका के पिछले अंक भेजने का आग्रह किया जो उन्हें दिल्ली कार्यालय से भेज दिए गये। इससे पहले हमारी मुलाकात पंजाब के नार्कोटिक विभाग के प्रमुख और पंजाब चुनाव प्रभारी से हुई जिन्होंने मुक्त कंठ से अणुव्रत आंदोलन की सराहना की और नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियानों की हमें जानकारी दी।

वहां से **मंडी गोबिंदगढ़** पहुँचे तो **सुरेंद्र जी मित्तल** का अपार स्नेह हमें मिला और अणुव्रत के पुराने कार्यकर्ता **श्री प्रवीण जैन** की अध्यक्षता में **अणुव्रत समिति का पुनर्गठन** भी वरिष्ठ जनों की उपस्थिति में हो गया। प्रवीण जी ने 42–43 वर्ष पहले **पिताजी श्रद्धेय मोहनभाई** द्वारा की गयी संस्कार निर्माण समिति की एक महीने चली पंजाब यात्रा की याद दिलायी जिसमें एक बाल कलाकार के रूप में मैं भी शामिल रहा था। मंडी गोबिंदगढ़ में 25 होर्डिंग लगाने के साथ ही अभियान को जोर–शोर से चलाने की पूरी योजना भी बन गयी।

यहां से भाई राजेश जी और कुलदीप जी ने अलग राह पकड़ी और **जगराओं** में चुनाव शुद्धि अभियान का आगाज करने के साथ ही **श्री प्रवीण जैन** के अध्यक्षीय दायित्व में **अणुव्रत समिति का गठन** भी कराया।

लुधियाना में भी अनेक विशिष्ट लोगों से मुलाकात कर अणुव्रत आंदोलन और चुनाव शुद्धि अभियान के साथ उन्हें जोड़ने का सार्थक काम किया। लुधियाना से कुलदीप जी और सूरत की ट्रेन से राजेश जी से मेरी और संजय जी की फोन पर हुई लंबी वार्ता का लब्बो लुवाब यही था कि ऐसी सकारात्मक, सार्थक और स्नेहपूर्ण माहौल में संपन्न संगठन यात्रा का यह पहला अनुभव रहा।

इधर मैं और संजय जी **सुनाम** पहुँचे और यहां के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। बैठक के प्रारंभ में नयी संस्था की शुरुआत के प्रति यहां के कार्यकर्ताओं में थोड़ी झिझक नजर आई लेकिन अणुव्रत और जीवन विज्ञान जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के प्रति उनकी रुचि साफ झलक रही थी। गहन विचार–विमर्श के बाद यहां के युवा कार्यकर्ता आगे आये और अणुव्रत समिति के गठन का निर्णय लिया। अध्यक्ष के रूप में युवा कार्यकर्ता भाई **केशव जी जैन** ने अपनी सहमति प्रदान की। स्थानीय समाज की उपस्थिति में उन्हें अध्यक्ष पद की शपथ दिलायी गयी। आज रात्रि विश्राम भी नव अध्यक्ष के आवास पर किया।

अगले दिन हम **मानसा** पहुँचे जहां सभा अध्यक्ष श्री.. के साथ ही अन्य वरिष्ठजन उपस्थित थे। अणुव्रत कार्यक्रमों के बारे में व्यापक चर्चा हुई। चुनाव शुद्धि

अभियान के प्रति भी स्थानीय कार्यकर्ता रुचिशील नजर आये। सबकी सहमति से **सुरेंद्र जी पॉल** को अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी गयी। सुरेंद्र जी अनुभवी शिक्षाविद् हैं। शिक्षा के क्षेत्र में काम करने की आपकी विशेष रुचि है।

मानसा में स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ हम **जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक** से मिलने उनके कार्यालय पहुँचे और चुनाव शुद्धि अभियान के बारे में जानकारी दी। दोनों ने ही इसकी सराहना की और अपना पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाय। एसपी श्री दीपक पारिख युवा आईपीएस हैं और राजस्थान से हैं। उन्होंने राजस्थानी भाषा में ही बात की। उन्होंने बताया कि जब भी समय मिलता है, वे स्कूल और कॉलेज के

विद्यार्थियों के बीच पहुँच जाते हैं और उन्हें नशे और बुराइयों से दूर रहने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने स्थानीय कार्यकर्ताओं को कहा कि जब भी जरूरत हो वे हमेशा उनके सहयोग के लिए तैयार रहेंगे। उल्लेखनीय है कि लुधियाना के डॉ. विश्व मोहन और कुलदीप जी के साथ आपके आत्मीय संबंध रहे हैं।

हमारा अगला पड़ाव था **भटिंडा।** स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ हमने भोजन किया और सभा भवन में समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। यहां **डॉ. योगेश कुमार** एवं उनकी धर्मपत्नी जो स्वयं भी डॉक्टर है बहुत ही सेवाभावी हैं। भीलवाड़ा में जब आप आये थे तब राजेंद्र जी सेठिया ने आप से परिचय कराया था। आपकी सेवा और समर्पण की भावना निश्चय ही अभिनंदनीय है। यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि सभी का आग्रह स्वीकार करते हुए **योगेश जी** ने अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पद का दायित्व स्वीकार कर लिया। यहां के युवा कार्यकर्ता भाई राजीव ने चुनाव शुद्धि अभियान के पोस्टर का पंजाबी भाषा में अनुवाद करवा कर अभियान को अधिक प्रभावी बनाने में महत्त्वपूर्ण सहयोग किया।

पंजाब की यह 3 दिन की यात्रा मुख्यतः चुनाव शुद्धि अभियान को केंद्र में रखकर प्लान की गयी थी लेकिन इस यात्रा में जहां **5 नयी अणुव्रत समितियां बनीं**, वहीं **मंडी गोविंदगढ़** की समिति का पुनर्गठन हुआ और **चंडीगढ़** समिति के साथ सार्थक संवाद हुआ।

इस यात्रा की उपलब्धियों में एक उपलब्धि यह भी रही कि हम साथियों की आपसी बॉन्डिंग और भी सुदृढ़ हुई, स्नेह संबंध और भी मधुर हुए और आपसी विश्वास मजबूत हुआ। कुलदीप जी और संजय जी के परिवार के साथ बिताया समय भी बड़ा मूल्यवान रहा। सार्वजनिक जीवन में संलग्न व्यक्तियों के लिए यह एक बड़ा सौभाग्य होता है कि उनके निकट परिवार के सदस्यों का उन्हें सकारात्मक योगदान मिले। संजय जी जैन और कुलदीप जी सुराणा इस दृष्टि से बहुत भाग्यशाली हैं, इस यात्रा की सफलता ने मुझे भी अपने सौभाग्यशाली होने का एक और प्रमाण दे दिया। सभी के प्रति आभार।

अणुव्रत संदेश स्थल

जसोल

- **अणुव्रत द्वार**
- आचार्य श्री महाश्रमणजी के अमृत महोत्सव व जसोल चातुर्मास के मंगल प्रवेश के उपलक्ष में
- लोकार्पण की तिथि – **29 जून, 2012**
- मुख्य अतिथि – **श्रीमती वीणा प्रधान**
  जिलाधीश, बाड़मेर
- अध्यक्षता – **श्री रावल किशनसिंह**
- यह द्वार जसोल बस स्टैण्ड के पास स्थित है। इस द्वार से हजारों व्यक्ति रोज गुजरते हैं।
- वर्तमान में सार–संभाल करने वाली संस्था
  अणुव्रत समिति, जसोल एवं समस्त वार्ड पंच

आप भी अपने क्षेत्र में स्थित ऐसे स्थलों की सूचना
अणुविभा दिल्ली कार्यालय
मोबाइल 9116634512
ईमेल anuvrat.patrika@anuvibha.org
को यथाशीघ्र प्रेषित करें।

अणुव्रत आंदोलन

चुनाव शुद्धि अभियान

चुनाव शुद्धि अभियान के
राष्ट्रीय संयोजक श्री राजकरण दफ्तरी
और अणुविभा के
संगठन मंत्री श्री संजय जैन
की रिपोर्ट

चुनाव लोकतंत्र की अनिवार्य प्रक्रिया है। चुनाव निष्पक्ष और शुचितापूर्ण तरीके से संपन्न हो सकें, इसके लिए आचार संहिता की व्यवस्था भी है, मगर वैयक्तिक से लेकर सामूहिक जीवन में मानवीय मूल्यों का इस कदर ह्रास हो चुका है कि मतदाता और उम्मीदवार दोनों ही पक्षों द्वारा आचार संहिता का खुल्लम–खुल्ला उल्लंघन किया जाता है। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी को दशकों पहले इसका भान हो गया था, तभी तो उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता में उल्लेख किया– मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा। इसके साथ ही उन्होंने उम्मीदवारों और मतदाताओं के लिए विस्तृत आचार संहिता का भी प्रावधान किया। तब से चुनाव शुद्धि अभियान अणुव्रत आंदोलन का अभिन्न अंग बन गया। देशभर में फैली अणुव्रत समितियां लोकसभा चुनाव के साथ ही प्रदेशों के विधानसभा चुनाव और पंचायत चुनावों में भी चुनाव शुद्धि अभियान की मशाल लेकर निकल पड़ती हैं।

अभी हाल ही पंजाब में हुए विधानसभा चुनाव के दौरान अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समितियों ने चुनावशुद्धि अभियान चलाया। इसकी शुरुआत लुधियाना से हुई। अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री संचय जैन, उपाध्यक्ष श्री राजेश सुराणा, संगठन मंत्री श्री संजय जैन ने 31 जनवरी को लुधियाना के तेरापंथ भवन में आयोजित पत्रकार वार्ता में अभियान की विस्तृत जानकारी दी और जनता से सही चयन कर राष्ट्र के निर्माण में अहम भूमिका निभाने की अपील की। इस अवसर पर महासभा के पंजाब प्रभारी कुलदीप जैन सुराना, पंजाब उपाध्यक्ष अभय कुमार सिंघी, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष चंद्रमोहन जैन, महामंत्री मनोज जैन, कोषाध्यक्ष रामजीवन गर्ग, तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

पंजाब के मंडी गोबिंदगढ़, संगरूर, सुनाम, भटिंडा, लुधियाना, मानसा, जगराओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने प्रत्याशियों को अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का साहित्य भेंट किया और आचार संहिता का पालन करने का आग्रह किया। मतदाताओं से किसी प्रलोभन में आये बिना योग्य उम्मीदवारों के चयन में भूमिका निभाने की अपील की। पोस्टर, पैम्फलेट और सोशल मीडिया कैंपेन के माध्यम से जागरुकता का सार्थक प्रयास किया गया।

अणुव्रत सम्पर्क यात्रा

बीकानेर संभाग

अणुविभा संगठन मंत्री (उत्तरांचल) डॉ. कुसुम लूनिया की रिपोर्ट

अणुव्रत अनुशास्ता के राजस्थान प्रवास के क्रम में यह एक सुखद संयोग बना कि अणुविभा के विभिन्न पदाधिकारीगण समय–समय पर यहां पहुँचे। कार्यकर्ताओं ने अनुशास्ता का आशीर्वाद प्राप्त कर आसपास के क्षेत्रों में अणुव्रत संगठन को मजबूत व जीवंत बनाने का सलक्ष्य प्रयास भी किया। इसकी शुरुआत हुई लाडनूं में 29 जनवरी को अणुव्रत संगोष्ठी के आयोजन के साथ जिसमें लाडनूं अणुव्रत समिति के साथ–साथ बीदासर, सुजानगढ़, छापर, डीडवाना, चाडवास आदि क्षेत्रों के कार्यकर्ता शामिल हुए।

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक **मुनिश्री मननकुमार** के सान्निध्य में अणुविभा अध्यक्ष **श्री संचय जैन**, उपाध्यक्ष **श्री प्रताप दुगड़**, महामंत्री **श्री भीखम सुराणा**, सहमंत्री **श्री इंद्र बैंगानी** की उपस्थिति में सार्थक विचार–विमर्श हुआ। लाडनूं समिति से अध्यक्ष **श्री शांतिलाल बैद**, मंत्री **श्री वीरेंद्र भाटी**, सुजानगढ़ से **श्री महेश तंवर**, छापर से **श्री प्रदीप सुराणा**, चाडवास से **श्री विनोद बच्छावत**, बीदासर से **श्री संपत बैद** और डीडवाना की नवगठित समिति से **श्री आनंद लाहोटी** ने अपनी बात कही। सभी में अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाने का अच्छा उत्साह है और अनेक विषयों पर उन्होंने मुनिश्री व अणुविभा पदाधिकारियों से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

31 जनवरी को **सुजानगढ़** में अणुव्रत अनुशास्ता का पदार्पण हुआ। अणुव्रत समिति अध्यक्ष महेश जी तंवर, उपाध्यक्ष मीरा जी जालान, उपमंत्री दीपक जी कौशिक, संरक्षक सांवरमल जी जालान, अरविंद जी आदि की उपस्थिति में समिति के रजिस्ट्रेशन व सदस्यता अभियान, अणुव्रत प्रकाशन, प्रकल्पों का निरंतर आयोजन, विद्यालयों में जीवनविज्ञान कार्यक्रम आदि पर गंभीर चिंतन हुआ। मैंने व अणुविभा सदस्य डॉक्टर धनपत लूनिया ने उनकी जिज्ञासाओं का समाधान दिया आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा पर प्रकाश डाला।

1 फरवरी से 1 मार्च तक 74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में देशभर में अणुव्रत समितियों द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रम 'अणुव्रत काव्यधारा' की शुभ शुरुआत अणुव्रत अनुशास्ता के आशीर्वाद के साथ करने का विशिष्ट अवसर आज मिला। चूंकि इस आयोजन के राष्ट्रीय संयोजक का दायित्व मुझे सौंपा गया है, मेरे लिए ये विशेष गौरव के पल थे।

सुजानगढ़ के तेरापंथ भवन सभागार में अणुव्रत काव्यधारा के बैनर का अनावरण हुआ तब इस अवसर पर अणुविभा उपाध्यक्ष **प्रताप जी दूगड़**, महामंत्री **भीखम जी सुराणा**, परामर्शक **तनसुखलाल जी बैद, डॉ. धनपत लूनिया**, सुजानगढ़ समिति अध्यक्ष **महेश जी तंवर** व उनकी टीम, लाडनूं समिति अध्यक्ष **शांतिलाल जी** बैद व बीदासर समिति अध्यक्ष **संपतमल जी बैद** के साथ अणुव्रत परिवार उपस्थित होकर धन्यता के साथ दायित्वबोध का अहसास कर रहा था।

तत्पश्चात् वहीं परिसर में बैठक का आयोजन **मुनिश्री मननकुमार** जी के पावन सान्निध्य में हुआ। सुजानगढ़ क्षेत्र के चोखले में अणुव्रत दर्शन प्रसार के विभिन्न आयामों से परिचित करवाया। उपाध्यक्ष महोदय ने अर्थ संबल पर, महामंत्री ने स्थायी प्रकल्प प्रारंभ योजना व संगठन मंत्री ने काव्यधारा आयोजन का आह्वान किया। टीम सुजानगढ़ के सदस्य सांवरमल जी

जालान, पार्षद डॉ. शर्मिला सोनी, डॉ. योगिता सक्सेना, इशाक चौधरी, गजानंद गुर्जर, डॉ. पूजा धर्मेन्द्र फूलफगर, डॉ. घनश्याम जी आदि उपस्थित रहे। नये सपनों की संकल्पनाओं के साथ बैठक का समापन हुआ।

2 फरवरी को अणुव्रत समिति चाड़वास से जब हम मिले तो पूरी टीम के चेहरे आत्मतोष की आभा से चमक रहे थे। समिति के अध्यक्ष **विनोद जी बच्छावत** ने बताया कि अणुव्रत अनुशास्ता के शुभागमन की पूर्व तैयारी में अहम भूमिका निभाते हुए गाँव में स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति का कार्य करते हुए उन्हें आनंद की अनुभूति हुई। सिर्फ 5 माह पूर्व लगे इस बिरवे को अणुव्रत आध्यात्मिक पर्यवेक्षक **मुनिश्री मननकुमार जी** से अच्छी आध्यात्मिक खाद मिली। अर्थ संबल अभियान, अणुव्रत संकल्प शृंखला, अणुव्रत प्रकाशनों के प्रसार, विद्यालयों में जीवन विज्ञान आदि विषयों पर बात हुई जिस पर कार्ययोजना बना कर काम करने का विश्वास नजर आया। अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन 18 फरवरी 2022 को चाड़वास समिति द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में करना तय हुआ।

3 फरवरी को अणुविभा अध्यक्ष **संचय जी जैन** का महामंत्री **भीखम जी सुराणा** के साथ बीदासर आगमन हुआ। अणुव्रत समिति बीदासर के अध्यक्ष **सम्पत जी बैद** अपने सहयोगियों के साथ उपस्थित हुए और अणुव्रत कार्यक्रमों को प्रभावी स्वरूप देने पर चर्चा हुई।

संचय जी ने संगठन की मजबूती के साथ 10 स्कूलों का चयन कर जीवन विज्ञान का कार्य प्रारंभ करने की प्रेरणा दी। भीखम जी ने अणुव्रत प्रकाशनों की व मैंने अणुव्रत काव्यधारा आयोजन की बात रखी। नूतन आत्मविश्वास से टीम बीदासर ने अणुव्रत आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने का विश्वास दिलाते हुए सायंकाल में ही शिक्षकों की एक बैठक आयोजन का निर्णय लिया।

3 फरवरी को सायं छापर में अणुव्रत समिति के साथ तेरापंथ भवन में **मुनिश्री पृथ्वीराज जी** के समक्ष संगोष्ठी रखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। समिति अध्यक्ष **प्रदीप जी सुराणा** बहुत उत्साही कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता के चातुर्मास के प्रति यहां कार्यकर्ताओं में बहुत उत्साह है और वे अणुव्रत का ठोस काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। समिति के मंत्री **विनोद जी नाहटा** ने कुशलतापूर्वक मंच संचालन किया। विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों के साथ टीम छापर ने अपने विगत सेवा कार्यों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया। **डॉ. धनपत लूनिया** ने समिति के ऐफिलिएशन, रजिस्ट्रेशन को प्राथमिकता से कराने पर बल दिया। मैंने जब अणुविभा के विभिन्न प्रकल्पों की प्रेरणा दी तो समिति सदस्यों ने शीघ्र संपादन का आश्वासन दिया। आर्थिक शुचिता की विशेष प्रेरणा का संदेश देते हुए तपोमूर्ति **मुनिश्री पृथ्वीराज जी स्वामी** जसोल ने अणुव्रत दर्शन को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

4 फरवरी को पड़िहारा में महामंत्री भीखम जी सुराणा के निवास पर कुसुम भाभी जी के हाथों के पौष्टिक प्रातःराश का शुभ अवसर अणुविभा अध्यक्ष संचय जी जैन के साथ मिला। वहीं अणुव्रत के सशक्त सिपाही विजयराज जी सुराणा के घर जाने का सुअवसर मिला। वहां अणुव्रत स्तंभ मोहनभाई जैन की स्मृतियों से साक्षात्कार कर टीम अणुविभा गदगद हो गई।

4 फरवरी को ही तेरापंथ भवन में अणुव्रत समिति सरदारशहर की बैठक आयोजित की गयी। समिति के अध्यक्ष **पृथ्वी सिंह** ने बताया कि अणुव्रत अनुशास्ता के सरदारशहर प्रवास के दौरान शिक्षक सम्मेलन की योजना

है। मैंने कहा कि अणुव्रत के प्रचार–प्रसार हेतु आम जन में जागृति फैलाकर संपूर्ण विश्व में शांति और अहिंसा का वातावरण तैयार किया जा सकता है। बैठक में तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष **सिद्धार्थ जी चिण्डालिया** ने आचार्य महाश्रमण के सरदारशहर आगमन के कार्यक्रम की जानकारी दी।

डॉ. धनपत लूनिया ने विद्यालयों में जीवन विज्ञान के प्रयोगों की उपयोगिता के बारे में बताया। इस अवसर पर समिति के संरक्षक बालकृष्ण जी कौशिक, मंत्री प्रभा जी पारीक, उपाध्यक्ष सुमन जी भंसाली, जीवन विज्ञान के संयोजक भरत कुमार जी गौड़, गिरधारी लाल जी सैनी, मनोजकुमार जी जोशी आदि उपस्थित रहे। इस प्रकार सभी समितियों से आत्मीयता, नयी आशा और विश्वास के साथ हम दिल्ली की और लौट चले। मेरे पति डॉ. धनपत लूनिया का सार्वजनिक जीवन में सक्रिय और आत्मीय सहयोग सदैव मुझे प्रेरित करता रहा है।

शुभकामनाएं

डॉ. बी.एन. पाण्डेय के नाम का डाक टिकट जारी

आजादी के 75वें वर्ष के अवसर पर केंद्र सरकार की ओर से मनाये जा रहे अमृत महोत्सव के तहत 31 जनवरी को दिल्ली के उदय भवन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार के डाक विभाग ने 94 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी डॉ. बी.एन. पाण्डेय के नाम का टिकट जारी किया। इसके साथ ही उन्हें स्मृति चिह्न प्रदान कर तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। अणुव्रत आंदोलन के शुरुआती दौर से ही जुड़े रहे डॉ. पांडे 'अणुव्रत गौरव सम्मान' से भी अलंकृत हो चुके हैं।

अणुव्रत डायरी

कोई डायरी इतनी सुंदर भी हो सकती है!

सक्रिय पत्रकारिता में रहते हुए सैकड़ों डायरियां भेंट में मिलीं। मगर अभी हमें अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से जो 'अणुव्रत डायरी' मिली है, वह अब तक मिली सभी डायरियों में सबसे सुंदर है, अलग है। अणुव्रत की विचार क्रांति के प्रणेता आचार्य तुलसी थे। उन्होंने पिछली सदी के मध्य में यह गुर दिया कि यदि कोई अपने जीवन में कोई बड़ा व्रत न अपना सके तो कोई अणु जितना सूक्ष्म व्रत ही ले ले। उन्हें विश्वास था कि एक बार किसी ने छोटी सी पालना ही अपना ली तो वह वहां नहीं ठहरेगा, आगे ही जायेगा और उसका एक बेहतर इंसान में रूपांतरण जरूर होगा। अणुव्रत डायरी ने पत्रकार के रूप में आचार्य तुलसी के साथ अखबारों व रेडियो के लिए की गयी अनेक वार्ताओं की हमारी पुरानी स्मृतियों को भी जगा दिया।

– राजेंद्र बोड़ा, वरिष्ठ पत्रकार, जयपुर

प्रशंसनीय संकल्पना

'अणुव्रत डायरी' प्राप्त हुई, जो अणुव्रत आचार संहिता के 11 प्रमुख व्रतों के सन्देश को सम्प्रेषित करने का एक उपयोगी माध्यम बनी है। डायरी के प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित संकल्प व्यक्ति को अणुव्रत के नियमों की अनुपालना हेतु प्रेरित करता है। आपकी यह संकल्पना अत्यन्त प्रशंसनीय है। संयमपूर्ण जीवन को दैनन्दिनी रूप में अंगीकर करने वाले समाज की स्थापना ही अणुव्रत आन्दोलन का प्रमुख ध्येय एवं उद्देश्य रहा है। गुरुदेव तुलसी के इस स्वप्न की वास्तविक प्रणीति में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय हैं।

– प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलपति, जैन विश्व भारती, लाडनूं

एक विशिष्ट डायरी

अणुव्रत डायरी मिली, मैंने पढ़ भी ली। यह विशिष्ट डायरी है जो प्रतिदिन अंतर्निरीक्षण का अवसर देकर हमारे जीवन को सन्मार्ग पर रखने में सहायक होगी।

– मुरलीधर वैष्णव, पूर्व न्यायाधीश व साहित्यकार, जोधपुर

अनुपम उपहार

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से अनपेक्षित व अनायास एक रजिस्टर्ड पार्सल मिला तो उत्सुकता हुई कि क्या भेजा गया होगा? इसे खोला तो अंदर एक डायरी निकली, कुछ विशेष किस्म की। जी हां, इसमें लाइन वाले सफे तो हैं, मगर ऊपर तारीखों वाली जगह खाली छोड़ दी गयी है, इस अक्लमंदी के साथ कि डायरी लिखने वाला स्वयं इसे भर लेगा। है न उपयोगी आइडिया! दूसरी, एक और भी खासियत ने मेरा ध्यान खींचा और यह है हर पृष्ठ के ऊपर की ओर लिखे संकल्प–मार्का वाक्य जो बायें पर अंग्रेजी में और दायें पर हिन्दी में लिखे गये हैं। अब इस खूबसूरत अणुव्रत डायरी के रचना कार्य पर साधुवाद देने के साथ उनका आभार प्रकट करना तो बनता ही है!

– रवि लायतु, जाने–माने बाल साहित्य रचनाकार, बरेली

अणुव्रत डायरी की बुकिंग के लिए आज ही सम्पर्क करें -
संयोजक : **श्री छतर सिंह चोरड़िया** 70024 68576

पाठकों के लिए
विशेष प्रतियोगिता

अणुव्रत Q10

आपको करना है बस इतना →

- 'अणुव्रत पत्रिका' के फरवरी 2022 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
- फरवरी 2022 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

फरवरी 2022 अंक पर आधारित प्रश्न

01. 'भारत भारती' किसकी रचना है?
02. बाहुबली किसके पुत्र थे?
03. नारायण सेवा संस्थान किस राज्य में है?
04. उत्कृष्ट सांसद अवार्ड की शुरुआत कब की गई?
05. 'सीख' कहानी में किसे वृद्धाश्रम भेज दिया गया?
06. वर्ष 2020 का अणुव्रत गौरव सम्मान किसे प्रदान किया गया?
07. 'पणया वीरा महावीहि' महापथ के संदर्भ में उक्त बात किसने कही?
08. गत 30 दिसंबर को अणुव्रत विश्व भारती का कौन-सा स्थापना दिवस मनाया गया?
09. अणुव्रत आचार संहिता का कौन-सा नियम भ्रूण हत्या की भयानक प्रवृत्ति से मुक्ति दिला सकता है?
10. 'चल पड़े जिधर दो डग मग में चल पड़े कोटि पग उसी ओर' - गांधीजी को समर्पित यह कविता किसने लिखी थी?

ज्ञातव्य बिंदु

- प्रतियोगिता के प्रश्न फरवरी 2022 के अंक पर आधारित।
- परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा ।

उत्तर इस पते पर भेजें

अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002
मो : 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

विजेता – अणुव्रत पत्रिका त्रैवार्षिक सदस्यता

प्रोत्साहन - दो – अणुव्रत पत्रिका एक वर्षीय सदस्यता

उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
15 अप्रैल, 2022

जनवरी 2022 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(दिसम्बर 2021 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता

ए.पी. माथुर
अजमेर

-:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::-

सुरेश चौपड़ा
पचपदरा

मंजु देवी छाजेड़
पचपदरा

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :-

प्रवीण लता जैन	विजय कुमार जैन	कमलेश कुमार धाकड
ताराचंद जैन	रश्मि चौराडिया	सोनम देवी सालेचा
महावीर कुमार सालेचा	जिनेश चोपड़ा	सिद्धि जैन
संगीता चोपड़ा	चारुल चोपड़ा	लता गुप्ता
भगवानदास फोकारिया	सायर देवी बेंगानी	जैन दलीचंद कच्छारा
चम्पालाल जैन	सोहनलाल छाजेड़	प्रणत धींग
मूलचंद सालेचा	सोनमदेवी सालेचा	विमल सामसूखा
सरस्वतीदेवी जैन	कमल सिंह बुच्चा	छगनलाल सेठिया
चंचल	अलका जैन	ममता जैन
निलेश संकलेचा	नेहा मेहता	सुधा भंसाली
मानकचंद बैद	रामविलास जैन	कांतिलाल जारोली
श्वेता जैन	सरला कोठरी	पिंकी गोलछा
शोभादेवी भंसाली	चेतना सांखला	देवेंद्र कुमार जैन
शशि चोपड़ा	विकास लुकड़	रेखा देवी
मंजू जोहरी	महावीर कुमार शाह	अजीतप्रसाद जैन
ऋषभ संकलेचा	विजय कुमार जैन	

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01	17 नवम्बर को/	पृ. 49
	कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी	पृ. 49
उत्तर 02	प्रेक्षाध्यान का अभ्यास	पृ. 9
उत्तर 03	जैस्पर पॉल ने	पृ. 33
उत्तर 04	श्री प्रफुल्लचंद्र सेन को	पृ. 11
उत्तर 05	अहिंसा और अपरिग्रह	पृ. 28
उत्तर 06	अणुव्रत तथा बच्चों का देश	पृ. 58
उत्तर 07	12 मार्च 2021	पृ. 14
उत्तर 08	पंकजा सिंह	पृ. 31
उत्तर 09	वेलू नाचियार	पृ. 15
उत्तर 10	गुरशरण काबरा	पृ. 31

शाहपुरा में अणुव्रत के दस दिवसीय कार्यक्रम

मुनिश्री सुरेश कुमार व मुनिश्री संबोध कुमार का मिला सान्निध्य

शाहपुरा (भीलवाड़ा)। शासनश्री मुनिश्री सुरेश कुमार हरनावां और **मुनिश्री संबोध कुमार मेधांश** के सान्निध्य में **22 दिसम्बर 2021 से 1 जनवरी 2022** तक भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा में आयोजित अणुव्रत कार्यक्रमों से रामस्नेही संप्रदाय की मुख्य पीठ शाहपुरा कस्बे में अणुव्रत आंदोलन के प्रति लोगों में चेतना जागृत हुई। इस दौरान प्रतिदिन शाहपुरा के लाड़ स्वाध्याय भवन में कार्यक्रम हुए। इसके अलावा स्कूलों में अपराह्न में आयोजित कार्यक्रम व प्रेक्षाध्यान शिविर भी अनूठे रहे। इस बीच नगर पालिका अध्यक्ष श्री रघुनंदन सोनी ने पहुँच कर मुनिद्वय का आशीर्वाद प्राप्त करने के साथ ही शाहपुरा में बनने वाली लाइब्रेरी का नामकरण अणुव्रत अनुशास्ता के नाम पर करने तथा पालिका भवन में अणुव्रत आचार संहिता का पट्ट लगाने की घोषणा की।

मुनिद्वय के प्रवास के समापन की पूर्व संध्या पर आयोजित सम्मेलन में अणुव्रत के दर्शन, विश्व की समस्याओं के समाधान में अणुव्रत आंदोलन की उपादेयता, नैतिक मूल्यों की स्थापना, संस्कार निर्माण के बारे में चर्चा की गयी। इस अवसर पर मुनिश्री सुरेश कुमार हरनावां ने कहा कि कि मानवीय मूल्यों पर आधारित अणुव्रत का दर्शन जीवन के हर पहलू को छूता है। अणुव्रत एक संपूर्ण जीवन शैली है। यह अहिंसक और संयम प्रधान जीवनशैली है, जो उपभोग वाली जीवनशैली का एक बेहतरीन विकल्प है। इस आंदोलन की शुरुआत किसी धर्म विशेष के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण की कामना से की गयी थी।

अणुविभा के अध्यक्ष श्री संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत जीवन की आचार संहिता है। अणुव्रत का मतलब है छोटे–छोटे संकल्प, जिनका पालन मानव अपने दैनंदिन जीवन में कर सकता है। इस आंदोलन का सूत्रपात उन संकल्पों के साथ हुआ जो आज भी न केवल अपनी प्रासंगिकता बनाये हुए हैं बल्कि अपने प्रभाव को भी अक्षुण्ण रखे हुए हैं। ये 11 सूत्र या नियम अणुव्रत आंदोलन के मूल हैं, जिनका राष्ट्र संत आचार्य श्री तुलसी ने आचार संहिता के रूप में प्रतिपादन किया। यह सामाजिक क्रान्ति का आंदोलन है और एक प्रकार से मानवीय आचार संहिता है। अणुव्रत आंदोलन मानव धर्म का आंदोलन है।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेंद्र कर्णावट ने कहा कि कषाय हिंसा का मुख्य कारण है। व्यक्ति काम व क्रोध की वृत्ति के कारण हिंसा करता है। भुखमरी भी आदमी से पाप करवा देती है। दुनिया में हिंसा व असंयम का अंधकार फैला हुआ है, अणुव्रत का दीपक जलाकर इस अंधकार को दूर किया जा सकता है।

अणुव्रत समिति के मार्गदर्शक श्री लक्ष्मीलाल गांधी ने मुनिद्वय के प्रवास को सराहनीय बताते हुए कहा कि इसका लाभ समूचे शाहपुरा को मिलेगा। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री तेजपाल उपाध्याय तथा शिक्षाविद् श्री विष्णु दत्त शर्मा ने अपनी पुस्तकें अतिथियों व मुनिश्री को भेंट कीं। इसी दौरान कवि डॉ. कैलाश मण्डेला के निर्देशन एवं कवि श्री दिनेश बंटी के संयोजन में आयोजित आध्यात्मिक काव्य निशा में स्थानीय कवियों ने 'श्रद्धा एवं संयम' विषय पर काव्य रचनाओं की प्रस्तुति से श्रोताओं को आनन्दित कर दिया।

इससे पूर्व संचिना कला संस्थान के तत्वावधान में अणुव्रत बाल संगम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) के राजस्थान राज्य प्रभारी श्री अभिषेक कोठारी, अणुव्रत समिति भीलवाड़ा की अध्यक्ष श्रीमती आनन्दबाला, मंत्री श्री राजेश चोरड़िया, तेरापंथ सभा भीलवाड़ा के उपाध्यक्ष श्री मदन टोडरवाल के आतिथ्य एवं संचिना कला संस्थान के अध्यक्ष श्री रामप्रसाद पारीक के संयोजन में आयोजित बाल संगम में स्थानीय बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। एक बालक ने आचार्य महाप्रज्ञ का आकर्षक चित्र तैयार किया। अतिथियों ने सभी संभागियों को अणुव्रत समिति की ओर से पारितोषिक तथा संचिना की ओर से प्रमाण पत्र भेंट किये।

मुनिश्री सुरेश कुमार हरनावां और मुनिश्री संबोध कुमार मेधांश के सान्निध्य में आयोजित सर्वधर्म सद्भावना समवाय में वक्ताओं ने शाहपुरा के सांप्रदायिक सौहार्द की सराहना करते हुए अणुव्रत आंदोलन के सिद्धांतों को आत्मसात करने पर जोर दिया। ब्रह्मकुमारी संगीता दीदी ने कहा कि अध्यात्म की गहराई की अनुभूति किये बिना मानसिक विकृतियों में उलझे मन को शांत करना असंभव है।

इस दौरान आयोजित पाँच दिनी प्रेक्षाध्यान शिविर में कई लोग लाभान्वित हुए। इन शिविरों में संभागी भाई–बहनों को संबोधित करते हुए मुनिश्री सुरेश कुमार हरनावां ने कहा कि आज के समय में तनावमुक्त और स्वस्थ जीवन जीना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। व्यक्ति समूह में जीता है। अनेक प्रकार के द्वंद्वों के बीच से गुजरना पड़ता है। द्वंद्वों में निर्द्वंद्व रहकर वही जी सकता है जो अपने मन को संतुलित रखना सीख जाता है।

रात्रिकालीन प्रवचन सभा में मुनिश्री संबोध कुमार ने बताया कि मन में घर किये हुए काल्पनिक डर कमजोर बना देते हैं। जी भरकर जीने नहीं देते हैं। जो डर से दो–दो हाथ कर जीते हैं, वे सफल जीवन जीते हैं। तभी तो यह कहावत बनी 'डर के आगे जीत है'। मुनिश्री सुरेश कुमार हरनावां ने कहा कि डर को भगाने के लिए स्वयं को न हीन मानने न दीन मानने वरन स्वयं से प्यार करते हुए स्वयं के सोये हुए आत्मविश्वास को जगाने की जरूरत है।

इससे पहले 22 दिसम्बर को मुनिश्री का समारोह पूर्वक मंगल प्रवेश हुआ। समिति के पदाधिकारियों ने मुस्कान सेवा संस्थान नशा मुक्ति केंद्र के बाहर अगवानी कर उनका स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संयोजन जैन श्रावक संघ के संरक्षक श्री देवेंद्रसिंह बूलियां ने किया। इस अवसर पर शासनश्री मुनि सुरेश कुमार हरनावां ने कहा कि शाहपुरा व अणुव्रत आंदोलन का गहरा संबंध रहा है। हमें प्लॉट, नोट, वोट, कोट नहीं चाहिए, केवल यहां की खोट चाहिए। व्यक्ति या समाज बुराई को खोट मानकर छोड़ दे, तो जीवन संवर सकता है। मुनिश्री संबोध कुमार मेधांश ने कहा कि जीवन को संवारकर देश को जागरूक करना है। युवाओं को जागृत करना है। समाज में व्याप्त अंधेरे को दूर करना है। अणुव्रत आंदोलन मन के परिवर्तन का महाअभियान है। इंसान को अच्छे इंसान में बदलने का उपक्रम है। देश को बदलने का प्रयास शाहपुरा से करेंगे, सभी को साथ लेकर।

अणुव्रत अधारित 10 दिवसीय कार्यक्रमों की संयोजना अणुव्रत समिति शाहपुरा के तत्वावधान सुनियोजित तरीके से की गयी। समिति के अध्यक्ष श्री तेजपाल उपाध्याय एवं मंत्री श्री गोपाललाल पंचोली सहित अणुव्रत कार्यकर्ता समर्पण भावन से कार्यक्रमों की सफलता में योगभूत बने।

हैदराबाद
जीवन विज्ञान पर कार्यक्रम आयोजित

अणुव्रत समिति की ओर से 73वें गणतंत्र दिवस पर जीवन विज्ञान पर कार्यक्रम का आयोजन गवर्नमेंट हाई स्कूल, बोलाराम में किया गया। इसमें रीता जी सुराणा ने विद्यार्थियों को यौगिक क्रियाओं का अभ्यास तथा संकल्प कराने के साथ ही अणुव्रत के बारे में बताया।

हैदराबाद महिला मंडल की अध्यक्ष अनिता जी गिडिया, प्रिंसिपल श्री बी. एम. विजय कुमार ने भी विचार रखे। हिन्दी के प्राध्यापक मोहम्मद जहांगीर ने देशभक्ति गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के उपाध्यक्ष श्री अनिल कातरेला ने की।

सिलीगुड़ी
स्वस्थ जीवन शैली हेतु सिलीगुड़ी से गुवाहाटी की साइकिल यात्रा

अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी की ओर से 26 जनवरी की सुबह जीवन विज्ञान एवं स्वस्थ जीवन शैली की थीम पर साइकिल रैली का आयोजन किया गया। मार्गदर्शक श्री मदन मालू एवं श्री मेघराज सेठिया ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। अणुविभा अध्यक्ष श्री संचय जैन का संदेश कोषाध्यक्ष मंजू जी लुणावत ने सुनाया। इसके बाद संघीय संस्थाओं, अणुव्रत समिति तथा राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने खादा एवं माला पहनाकर साइकिल यात्रियों श्री महावीर सिरोहिया, श्री पवन अग्रवाल एवं श्री हरीश शर्मा का अभिनन्दन किया। साथ ही उनकी सफल एवं मंगलमय यात्रा के लिए मंगलकामनाएं देकर उन्हें गुवाहाटी के लिए रवाना किया।

समिति अध्यक्ष पुष्पा जी चिण्डालिया ने बताया कि इस अवसर पर अणुव्रत समिति के मार्गदर्शक, परामर्श गण, सभी सदस्य, टीपीएफ, सभा, तेरापंथ ट्रस्ट, भवन, तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल ,वरिष्ठ नागरिक संघ, लायंस क्लब ऑफ सिलीगुड़ी एवं अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की अच्छी उपस्थिति रही।

गुवाहाटी
साइकिल यात्रियों के सम्मान में कार्यक्रम

साइकिल रैली के गुवाहाटी पहुँचने पर 30 जनवरी को स्थानीय तेरापंथ भवन में गुवाहाटी अणुव्रत समिति की ओर से समारोह का आयोजन किया गया। इसमें सिलीगुड़ी से गोलकगंज, धुबड़ी, गौरीपुर, बिलासीपाड़ा, ग्वालपाड़ा होते हुए करीब 500 किलोमीटर की साइकिल यात्रा चार दिनों में सम्पन्न कर गुवाहाटी पहुँचे श्री महावीर सिरोहिया, श्री पवन अग्रवाल एवं श्री हरीश शर्मा का फूलाम गमछा, अणुव्रत डायरी व असम का सांस्कृतिक प्रतीक चिह्न श्गैंडाश का उपहार भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर समिति अध्यक्ष श्री बजरंग लाल डोसी ने स्वागत भाषण में कहा कि इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य खाद्य संयम के प्रति जागरुकता फैलाना है।

अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान पर प्रकाश डालते हुए श्री महावीर सिरोहिया ने कहा कि भोजन ही हमारा असली दवाखाना है। अणुविभा के सहमंत्री श्री छत्तर सिंह चौरड़िया, असम राज्य प्रभारी श्री बजरंग बैद और तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री झनकार दुधोड़िया ने भी विचार रखे। आभार ज्ञापन समिति के मंत्री श्री पवन जम्मड़ ने किया।

दिल्ली
अणुव्रत की शाम बच्चों के नाम

अणुव्रत समिति की ओर से 30 जनवरी को डिजिटल सांस्कृतिक सन्ध्या 'अणुव्रत की शाम बच्चों के नाम' का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य नयी पीढ़ी में नैतिकता का बीजारोपण, अणुव्रत के बारे में बच्चों को अवगत कराना एवं अणुव्रत के माध्यम से जीवन जीने की कला सिखाना था।

कार्यक्रम की शुरुआत 4 वर्षीय बच्चे मनन सुराणा ने अणुव्रत गीत 'संयममय जीवन हो' से की। कार्यक्रम में 10 से 18 वर्ष के 13 बच्चों ने अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों से लोगों का मन मोह लिया। समिति अध्यक्ष श्री शांतिलाल पटावरी ने आगे भी ऐसे कार्यक्रम करने की घोषणा की।

ऑनलाइन हुए इस कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, हरियाणा प्रभारी श्री माखनलाल गोयल, कार्यसमिति सदस्य श्री रजनीकांत, अणुव्रत समिति सिरसा के अध्यक्ष श्री रविंद्र गोयल, भारतीय जैन संगठन दिल्ली के अध्यक्ष श्री प्रदीप संचेती, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के संगठन मंत्री श्री अशोक संचेती, ज्ञानशाला दिल्ली की प्रशिक्षिकाएं, बच्चों के अभिभावक गण, युवा गायक रितेश मालू, महिला गायिका शर्मिला बरडिया, समिति के पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों, परामर्शक गणों की उपस्थिति रही। समिति मंत्री श्री धनपत नाहटा व संगठन मंत्री श्री मनोज बरमेचा ने भी विचार रखे। कार्यक्रम संयोजक श्री ललित श्यामसुखा, जय सिंह दुगड़ व प्रसिद्ध गायक श्री हनुमान नाहटा ने सुमधुर गीतों से श्रोताओं का मन मोह लिया। समिति की सह मंत्री सुश्री प्रियंका महनोत ने आभार ज्ञापित किया।

बारडोली

'नशा नाश का द्वार' कार्यक्रम आयोजित

अणुव्रत समिति की ओर से 30 जनवरी को हुडको सोसायटी में 'नशा नाश का द्वार' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति की अध्यक्ष श्रीमती पायल चोरड़िया ने नशे से होने वाले दुष्प्रभावों तथा बीमारियों के बारे में बताने के साथ ही लोगों से नशामुक्त होने का संकल्प लेने की अपील की। कार्यक्रम में 32 व्यक्तियों ने नशा नहीं करने का संकल्प लिया। समिति उपाध्यक्ष श्री अंकुर मेहता ने कुशल संयोजन किया। नशामुक्ति अभियान के संयोजक श्री मनोज कच्छारा का आयोजन को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा।

बेंगलुरु

बेंगलुरु में एसीसी के विजेताओं का सम्मान

अणुव्रत समिति की ओर से तेरापंथ सभा भवन गांधीनगर में आयोजित समारोह में अणुव्रत क्रिएटिव कॉन्टेस्ट के अंतर्गत आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता व संगीत प्रतियोगिता के प्रथम तीन प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वीश्री कंचनप्रभाजी ने कहा कि इन प्रतियोगिताओं से बच्चों को प्रोत्साहन मिलता है। साध्वीश्री सिद्धान्तश्रीजी ने कहा कि पूरे भारत में बेंगलुरु ज्ञानशाला से ही सबसे ज्यादा बच्चों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। हर प्रतियोगिता में ज्ञानशाला के बच्चों की प्रस्तुति अव्वल रही।

'शासनश्री' साध्वीश्री मंजू रेखाजी ने ज्ञानशाला के प्रशिक्षकों की सराहना की। साध्वीश्री लावण्यश्रीजी ने कहा कि सभी बच्चों को हमारी संस्कृति का पालन करने की प्रेरणा देनी चाहिए। संगीत प्रतियोगिता के निर्णायक श्री गुलाब बांठिया और ज्ञानशाला संयोजिका नीता गादिया ने भी विचार रखे। इससे पहले सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने नैतिकता व प्रामाणिकता का संदेश जन–जन तक पहुँचाया। महासभा सहमंत्री श्री प्रकाश लोढ़ा व अणुविभा कर्नाटक दक्षिण संयोजक श्री ललित बाबेल ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन समिति के मंत्री श्री माणकचंद संचेती ने तथा आभार ज्ञापन सहमंत्री श्री धर्मेंद्र बरलोटा ने किया।

मुंबई

जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन

अणुव्रत समिति के स्थायी प्रकल्प अहिंसा एवं रोजगार प्रशिक्षण के अंतर्गत हनुमान टेकड़ी सायन कोलीवाड़ा में 4 फरवरी को जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका संचालन केंद्र संयोजिका मधु मेहता व सह संयोजिका कामिनी बड़ाला ने किया।

सबसे पहले बच्चों को महाप्राण की ध्वनि करायी गयी जिससे उनमें एकाग्रता व जागरुकता की भावना का विकास हो। बच्चों को बताया गया कि श्वास जीवन की मुख्य आवश्यकता है। श्वास कैसे लेना चाहिए, इसके बारे में जानकारी देते हुए दीर्घ श्वास 'प्रेक्षा' का प्रयोग कराया गया। याददाश्त बढ़ाने के लिए महाप्राण ध्वनि व शशांक आसन का अभ्यास कराया गया तथा इनके लाभ के बारे में बताया गया। बच्चों को जीवन विज्ञान की किताबें भी वितरित की गयीं। कार्यक्रम में प्रशिक्षिका लता जी का विशेष सहयोग रहा।

मुंबई
नशामुक्ति कार्यक्रम का आयोजन

अणुव्रत समिति की ओर से 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस पर नशामुक्ति कार्यक्रम का आयोजन बांद्रा वेस्ट नेशनल कॉलेज में हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. मुनिश्री अभिजित कुमारजी ने बताया कि अणुव्रत कैसे स्वयं के लिए व देशहित में कारगर साबित हो सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणामों के बारे में बताने के साथ ही इससे बचने के टिप्स भी दिये। मुनिश्री जागृत कुमार जी ने मेडिटेशन द्वारा नशामुक्ति की प्रायोगिक जानकारी दी। अणुव्रत समिति मुंबई के परामर्शदाता प्रो. हूबनाथ पांडेय ने भी विचार रखे। टाटा हॉस्पिटल की ओर से पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से नशे के खिलाफ जागरुकता के बारे में प्रभावी प्रस्तुति दी गयी।

कार्यक्रम में अणुविभा के नशामुक्ति अभियान के राष्ट्रीय संयोजक श्री राजेश चौधरी, अणुव्रत समिति मुम्बई की अध्यक्ष श्रीमती कंचन सोनी, मंत्री श्रीमती वनिता बापना, तेयुप अध्यक्ष व समिति के नशामुक्ति प्रभारी किरण परमार समेत 35 कॉलेजों से एनएसएस के 181 छात्रों समेत 210 छात्र मौजूद रहे। एनएसएस कोऑर्डिनेटर श्री विजेंद्र शेखावत ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में एनएसएस सेल यूनिवर्सिटी ऑफ मुंबई और आरडी एस–एच नेशनल कॉलेज का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

मुंबई
सर्व धर्म प्रार्थना सभा का आयोजन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पुण्य की तिथि पर 30 जनवरी को सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन नेशनल कॉलेज (बांद्रा– वेस्ट) के ऑडिटोरियम में किया गया। वक्ता सिस्टर पौलीन ने बताया कि 28 वर्ष पूर्व कैसे इस कार्यक्रम की परिकल्पना की और फिर यह कारवां बन गया। मुख्य वक्ता अणुव्रत समिति मुंबई के परामर्शक श्री हूबनाथ पांडेय ने आज के युग में एकता और अहिंसा की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

ब्रह्माकुमारी बीना जी ने 'अहिंसा परमो धर्म' की बात करते हुए कहा कि मन के द्वारा की गयी हिंसा भी कष्टदायी होती है। अणुव्रत समिति मुंबई के प्रचार मंत्री श्री मुकेश जैन (मादरेचा) ने कहा कि अणुव्रत आज के युग की जरूरत है। अणुव्रत को अपनाकर हम सफल जीवन जी सकते हैं। अणुविभा के नशामुक्ति अभियान के प्रभारी श्री राजेश चौधरी व अणुव्रत समिति मुंबई के नशामुक्ति प्रभारी श्री किरण परमार ने भी विचार रखे। कार्यक्रम के संयोजक श्री विजेंद्र शेखावत ने आभार ज्ञापित किया।

मुंबई
राजभवन में राज्यपाल से मुलाकात

अणुव्रत समिति मुंबई के पदाधिकारी 8 फरवरी को मालाबार हिल स्थित राजभवन में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री भगतसिंह कोश्यारी से मुलाकात करने पहुँचे। उन्हें अणुव्रत मिशन के बारे में बताने के साथ ही अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी की अहिंसा यात्रा की भी जानकारी दी। अणुव्रत के साहित्य, शॉल आदि से राज्यपाल का सम्मान किया गया। राज्यपाल ने कहा, अणुव्रत और आचार्य तुलसी से मैं विद्यार्थी जीवन से ही प्रभावित हूँ। आप सभी मानवता के इस नेक कार्य को आगे बढ़ाते रहें। राज्यपाल से मिलने वालों में अणुविभा के संगठन मंत्री श्री विनोद कोठारी, महाराष्ट्र प्रभारी श्री रमेश धोका, अणुव्रत समिति मुंबई की अध्यक्ष श्रीमती कंचन सोनी, परामर्शक श्री राजकुमार चपलोत, जयश्री बडाला और मंत्री वनिता बापना शामिल रहे।

भीलवाड़ा
अणुव्रत व जीवन विज्ञान कार्यशाला

अणुव्रत समिति की ओर से मुनिश्री अतुलकुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान कार्यशाला का

आयोजन सेवा सदन स्कूल में किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री अतुलकुमार जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि सूरज की तरह चमकना है तो सूर्य की तरह तपना सीखें। विज्ञान के अनुसार मनुष्य के मस्तिष्क में एक लाख पुस्तक समा सकती हैं। मस्तिष्क की विशालता के लिए सद्विचारों का बीजारोपण करें। व्यर्थ एवं निरर्थक विचारों को स्थान न दें। संस्कारवान सूर्य की तरह प्रकाशित होता है। मुनिश्री ने कहा कि देश में हो रही अमानवीय घटनाएं मानवता पर कलंक हैं। आचार्य श्री तुलसी का स्वप्न था अणुव्रत। अणुव्रत एक ऐसा उपक्रम है जो धर्म नहीं, बल्कि भाव परिवर्तन करता है।

मुनिश्री ने प्राणायाम के प्रयोग करवाये और उनके लाभ भी बताये। विद्यालय की तरफ से मुनिश्री को साहित्य भेंट किया गया। अध्यक्षता अणुव्रत समिति की अध्यक्ष श्रीमती आनंद बाला ने की। प्राचार्य श्रीमती पुष्पा मूंदड़ा ने सभी का स्वागत किया।

पुष्पा जी मूंदड़ा एवं गुणवंत जी आमेटा का सम्मान अणुव्रत डायरी भेंट करके किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री राजेश चोरडिया ने किया। अनिता हिरण ने बच्चों को संकल्प दिलाया और आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान अणुव्रत समिति भीलवाड़ा के सहमंत्री श्री पुनीत बोहरा, प्रचार प्रसार मंत्री श्री नंदलाल सवाल, सदस्य सरोज मेहता, पुष्पा पामेचा एवं अणुविभा के राज्य प्रभारी श्री अभिषेक कोठारी उपस्थित थे।

सादुलपुर
नशामुक्ति पर कार्यशाला का आयोजन

अणुव्रत समिति द्वारा राजकीय नव सृजित बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में 16 फरवरी को नशामुक्ति पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। अध्यक्षता करते हुए संस्था प्रधान श्री उम्मेद सिंह ने व्यसन से होने वाले दुष्परिणामों से चेताने के साथ ही व्यसन मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। समिति अध्यक्ष श्री कमल बोथरा ने कहा कि नशीले पदार्थों के सेवन से शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है, शरीर को कई तरह के रोग घेर लेते हैं।

अणुव्रत समिति : नया नेतृत्व

सत्र 2021–23

केसिंगा

श्री शुभकरण जैन
अध्यक्ष

श्री प्रीतम कुमार
मंत्री

नंजनगुड़

श्री रोशनलाल जैन
अध्यक्ष

श्री कमलेश मेहता
मंत्री

उदासर

श्री सुरेन्द्र चोपड़ा
अध्यक्ष

श्री किशोर कुमार
मंत्री

वड़ोदरा

श्री संतोष सिंघी
अध्यक्ष

श्री राजेश मेहता
मंत्री

टोहाना

श्रीमती ऋतु जैन
अध्यक्ष

श्रीमती एकता जैन
मंत्री

राजलदेसर

श्री शंकरलाल सोनी
अध्यक्ष

श्री भुवनेश्वर शर्मा
मंत्री

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान
ANUVRAT
CREATIVITY
CONTEST
प्रतियोगिताएं
लेखन
चित्रकला
गायन
भाषण
विषय
पर्यावरण का संरक्षण
दायित्व हमारा हर क्षण
स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता के प्रथम चरण की अंतिम तारीख
31 जुलाई, 2022
राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार
ग्रुप-1: कक्षा 3-5, ग्रुप -2: कक्षा 6-8, ग्रुप-3: कक्षा 9-12
अधिक जानकारी के लिए
https://anuvibha.org/acc
acc@anuvibha.org
+91-91166-34514
अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
सहयोगी प्रकल्प

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण षष्ठीपूर्ति वर्ष के

ऐतिहासिक उपलक्ष्य में अणुव्रत पत्रिका की रचनात्मक भेंट

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक

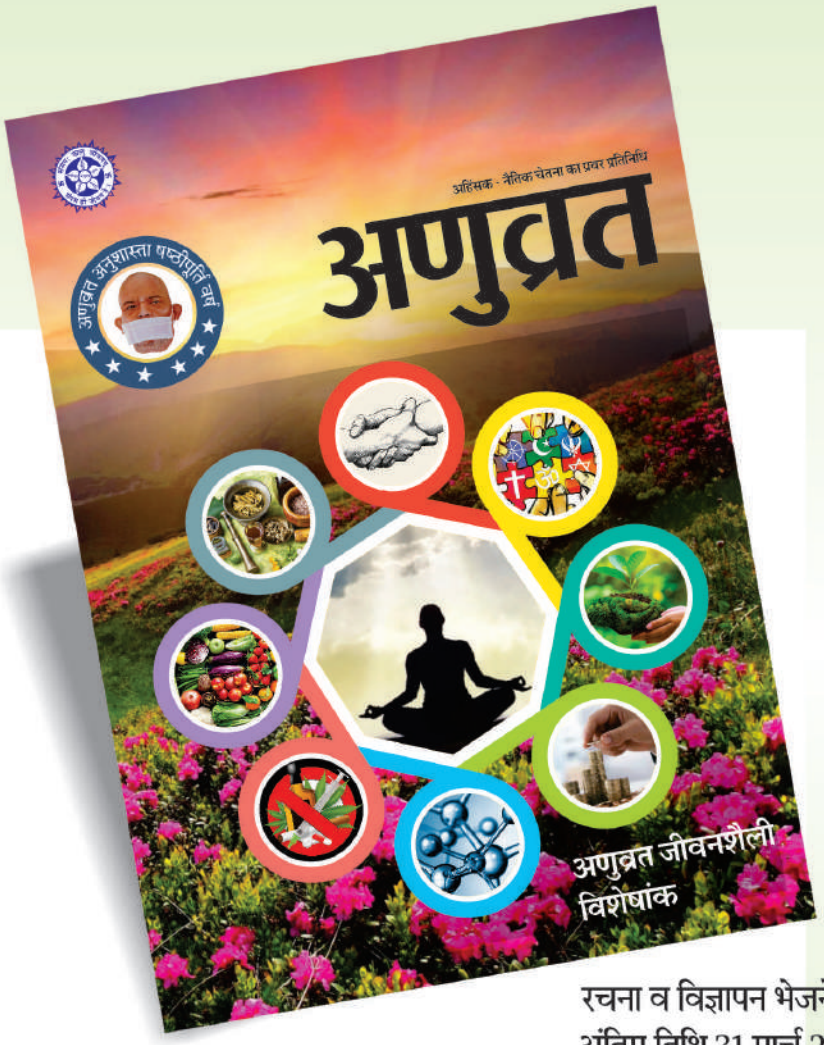

समस्याएं अनेक - समाधान एक
अणुव्रत जीवनशैली

रचना व विज्ञापन भेजने की
अंतिम तिथि 31 मार्च 2022

विषय

अणुव्रत अनुशास्ता : व्यक्तित्व व कर्तृत्व

अणुव्रत जीवनशैली : खाद्य संयम, प्राकृतिक चिकित्सा, भाषा संयम, ध्यान साधना, प्रामाणिकता, परमार्थ की चेतना, सांप्रदायिक सौहार्द, शाकाहार, व्यसन मुक्ति, मौन साधना, व्यवहार संयम, अर्जन के साथ विसर्जन, संग्रह की सीमा, बुद्धि - भावना संतुलन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रकृति प्रेम, मानवीय मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य

रचना भेजने हेतु संपर्क सूत्र

संचय जैन, सम्पादक +91-9829052452

मोहन मंगलम, सह संपादक +91- 94142-73749

मनीष सोनी, कार्यालय प्रभारी +91-91166-34512

विज्ञापन हेतु सम्पर्क सूत्र

कन्हैया लाल चिप्पड़, संगठन मंत्री (दक्षिणांचल) +919741413853
राकेश मालू, संगठन मंत्री (पूर्वांचल) +918617843739
संजय जैन, संगठन मंत्री (मध्यांचल) +919215517430
शांतिलाल पटावरी, संयोजक पत्रिका प्रसार +919811242365
विनोद कोठारी, संगठन मंत्री (पश्चिमांचल) +919892108601
कुसुम लुनिया, संगठन मंत्री (उत्तरांचल) +919891947000
इन्द्र बैंगानी, सहमंत्री +919810352341
बजरंग बैद, सह संयोजक पत्रिका प्रसार + 917002322503

ANUVRAT

RNI No. 7013/57
March, 2022

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/02/2022
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

GALAXY GROUP

Architectural marvels across 46 countries worldwide have used our stones.
We are proud to have contributed to the architectural world with these concept stores and outlets in Jaipur:

Stone Studio By Galaxy
India's first concept store for stone display

Tile Studio By Galaxy
Finest Selection of Premium Tiles

Light Studio By Galaxy
Rajasthan's Largest Decorative Lights Display

Landscape Studio BY GALAXY
India's best collection of Landscape Artefacts

The experience of three decades has helped us translate our vision for providing unparalleled lifestyle into -
The Urban Village by Galaxy Enclave, a fully integrated township next to Jaipur's business hub.

RERA No: RAJ/P/2017/448; RAJ/P/2020/1364

GALAXY ENCLAVE
THE URBAN VILLAGE
Modern Day Luxuries In Harmony With Nature
250 feet SEZ Road, Kalwara, Ajmer Road, Jaipur
TO KNOW MORE, CALL US ON
+91-90791-23572/ 88755-84455/ 88754-08875 or write to info@urban-village.co.in
www.urban-village.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**